दादी माँ जागी

[टेलीविजन-नाटक का रंगमंचीय रूपांतर]

लेखक

चिरंजीत



पुस्तकायन

मूल्य : २५.०० रुपये

प्रकाशक : पुस्तकायन, [सुबोध पॉकेट बुक्स का उपक्रम]
२/४२४० ए, अंसारी रोड, नयी दिल्ली-११०००२/संस्करण : १९८५
मुद्रक : अजय प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

दूसरा चमत्कार

लोग कहते है—और अब मैं भी मानने लगा हूँ कि 'दादी माँ जागी' मेरे नाटककार-जीवन का दूसरा चमत्कार है।

पहला चमत्कार था व्यग्य-नाटक 'ढोल की पोल', जो सन् १९६५ और १९७१ के भारत-पाकिस्तान-युद्धो के दौरान आकाशवाणी से कई-कई दिन धारावाहिक प्रसारित हुआ था। उसके अनूठे कथानक, हास्य-व्यंग्य और शिल्प के कारण मुझे देशव्यापी लोकप्रियता और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति ही नही मिली थी, 'पद्मश्री' का राष्ट्रीय सम्मान भी मिला था।

सन् १९८४ में जनवरी से लेकर अप्रैल तक मेरा नाटक 'दादी माँ जागी' दूरदर्शन के राष्ट्रीय कार्यक्रम मे पहली बार धारावाहिक प्रसारित हुआ, तो मुझे देशभर मे 'ढोल की पोल' से भी कही अधिक लोकप्रियता मिली, मान्यता मिली। अनेक प्रबुद्ध दर्शकों, नाट्य-प्रेमियो और जनसचार-समीक्षको ने उसे दूरदर्शन का सर्वाधिक लोकप्रिय एव सफल नाटक बताया। उससे पहले बरसो से 'ढोल की पोल' ही मेरी सार्वजनिक पहचान थी। अब लोग मुझे 'दादी माँ जागी' के लेखक के रूप मे ही जानने-पहचानते हैं। हुआ न दूसरा चमत्कार!

उसी टैलीविजन-नाटक का यह रंगमचीय रूपान्तर पुस्तकाकार प्रस्तुत है —मंचन के लिए, पठन-पाठन के लिए, मनोरजन के लिए। दूरदर्शन पर उसके आधे-आधे घण्टे के १४ भाग प्रसारित हुए थे और उसकी कुल अवधि सात घण्टे की थी। प्रस्तुत रगमंचीय रूपान्तर मे उसके प्रारम्भ के सात भाग समाविष्ट हैं और इसके मंचन की अवधि दो-ढाई घण्टे की है।

× × ×

नाट्य-साहित्य के इतिहास की दृष्टि से 'दादी माँ जागी' का भी एक पुराना इतिहास है। सन् १९५४ मे मैंने इसे सर्वप्रथम ४५ मिनट के रेडियो-नाटक के रूप में लिखा था। जब वह आकाशवाणी से प्रसारित हुआ, तो उसकी बड़ी धूम मची, बड़ी चर्चा हुई। यूनीवर्सिटियों और कालेजो की अनेक नाटक-मंडलियों ने मचन

के लिए मुझसे उसका मसौदा माँगा। उसी माँग को पूरा करने के लिए मैंने सन् १९५५ में उसे छोटे-से रंगमंचीय एकांकी का रूप दिया था। मेरा यह एकांकी मेरे एक प्रारम्भिक संग्रह में छपा भी था और अनेक नगरों में मंचित भी हुआ था। अब यह एकांकी अनुपलब्ध है। मैं मानता हूँ कि उसी एकांकी का बीज प्रस्फुटित होकर, विकसित होकर अब तीन अंकों का पूर्णाकार नाटक बन गया है—नये नानाविध मानवीय चरित्र, सामाजिक परिवेश और समसामयिक यथार्थ के साथ।

× × ×

अब दो शब्द कथानक के केन्द्र-बिन्दु के बारे में। कथानक का केन्द्र-बिन्दु है दादी माँ, जो अचानक २५ वर्ष की नींद से जागती है। मस्तिष्क सम्बन्धी चिकित्सा-शास्त्र की भाषा में रोगी की ऐसी नींद को 'कोमा' या 'सम्मूर्च्छा' कहा जाता है। दिमागी रोगों की चिकित्सा के इतिहास में ऐसे अनेक रोगियों के उदाहरण मिलते हैं, जो जीवित रहते हुए भी चार-पाँच वर्ष तक निरन्तर सम्मूर्च्छा की सुषुप्तावस्था में रहे। मैंने कथानक की माँग पर सम्मूर्च्छा की अवधि को २५ वर्ष तक बढ़ा दिया है। इस नाटकीय युक्ति को प्रतीकात्मक कहा जा सकता है।

२५ वर्ष की नींद की इस नाटकीय युक्ति का प्रयोग मैंने किया है—नई और पुरानी पीढ़ियों का पहले टकराव और फिर मेल-मिलाप दिखाने के लिए और राष्ट्रीय सन्दर्भ में नये व पुराने मूल्यों की पहचान और परख प्रस्तुत करने के लिए। इसी उद्देश्य से मैंने दादी माँ के चरित्र को एकदम जड़ नहीं बनाया। नये सामाजिक परिवेश में जब वह समसामयिक यथार्थ को देखती-परखती है, तो उसके भीतर स्वाभाविक बदलाव आता है और वह पुराने शाश्वत मूल्यों को बिना छोड़े नये सामाजिक यथार्थ के अनुरूप अपने आप को ढालती है।

दूरदर्शन पर दादी माँ के इस बहु-आयामी चरित्र को अभूतपूर्व सफलता एवं योग्यता से साकार किया था, आकाशवाणी दिल्ली की महान् कलाकार और दिल्ली के एक कालेज की वरिष्ठ प्राध्यापिका श्रीमती राजकुमारी प्रसाद ने—अपने उच्चकोटि के अविस्मरणीय अभिनय द्वारा। 'दादी माँ जागी' का यह रंगमंचीय रूपान्तर उन्हीं को सस्नेह-साभार समर्पित है।

डी-२-ई, डी. डी. ए. फ्लैट्स,
मुनीरका, नई दिल्ली, ११००६७

—चिरंजीत

पात्र-परिचय

रूपचंद : ठेकेदार, भवन-निर्माता-संस्थान 'रूपचंद एंड कम्पनी' का धनी-मानी मालिक। पहले विधुर, फिर विवाहित। आयु ५० वर्ष। उम्र छिपाने के लिए सिर और मूंछों के बाल रंगता है।

दादी मां : रूपचंद की विधवा माँ फूलवती। आयु ६५ वर्ष।

कमला : रूपचंद की सबसे बड़ी लड़की, विवाहिता, तानाशाही स्वभाव। आयु ३० वर्ष।

विमला : रूपचंद की दूसरी लड़की। कालेज में प्रोफेसर। अध्ययनशील गंभीर स्वभाव। आयु २७ वर्ष।

सरला : रूपचंद की तीसरी लड़की। डॉक्टर। हंसमुख, बाल कटे हुए। आयु २५ वर्ष।

अमला : रूपचंद की सबसे छोटी लड़की। कलाकार, बनाव-सिंगार की शौकीन। आयु २२ वर्ष।

ललित मोहन : रूपचंद का अनाथ भानजा। खद्दरधारी, चतुर-चालाक। आयु २४ वर्ष।

कृष्ण गोपाल : कमला का पति। ऊपर से दब्बू, भीतर से काइयाँ। आयु ३२ वर्ष।

बब्बू : कमला का लड़का। आयु ८ वर्ष।

पार्वती : बब्बू की विधवा आया। आयु ३५ वर्ष।

रमेश शर्मा : सरकारी अफसर, विमला का प्रेमी और फिर पति। आयु ३० वर्ष।

कैलाश आहूजा : डॉक्टर, सरला का प्रेमी। आयु २७ वर्ष।

कवि कोमल : अमला का प्रेमी। लम्बे बाल, औरतों जैसा बनाव-सिंगार। आयु ३५ वर्ष।

दुर्गा : कवि कोमल की पत्नी। बलिष्ठ देहाती औरत। आयु ३२ वर्ष।

जोड़ूराम : घर का नौकर। कुँआरा, सिर के बाल तोड़ने की आदत। आयु ३० वर्ष।

घासीराम . कोठी के बगीचे का माली। आयु ४० वर्ष।

रधिया : माली की खुशमिजाज लड़की। आयु १८ वर्ष।

अन्य : रूपचंद का मित्र मिस्त्रीसिंह, विमला की सहेलियाँ और पंडित संकटाप्रसाद।

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—कोठी का ड्राइंग-रूम।
समय—प्रातः आठ बजे।

[सोफासेट, गद्देदार कुर्सियों, तिपाइयों, रेशमी पर्दों, गलीचों, घड़ी, टैलीफ़ोन आदि कीमती सामान से सजे हुए ड्राइंग-रूम की दाईं दीवार में दो दरवाज़े हैं। आगे का दरवाज़ा दादी माँ के कमरे में खुलता है और पिछला दरवाज़ा रूपचन्द के निजी कमरे में। बाईं दीवार में एक दरवाज़ा और एक खिड़की है। दरवाज़ा डाइनिंग रूम और रसोई में खुलता है। पीछे की ओर खिड़की है, जो बागीचे में खुलती है। सामने की दीवार में बाईं ओर बड़ा-सा दरवाज़ा है, जो बाहर पोर्टिको में खुलता है। इसी दरवाज़े के साथ सामने की दीवार में रेलिंग वाली सीढ़ियाँ हैं, जो ऊपर लड़कियों के कमरों में जाती हैं। नीचे इन्हीं सीढ़ियों के पास एक ऊँचे टेबल पर टैलीफोन रखा हुआ है।

जब पर्दा उठता है, तो ड्राइंग रूम के बाईं ओर गलीचा हटाकर बैठा हुआ पण्डित संकटाप्रसाद दिखाई देता है। वह हवन और पूजा का सामान सजाकर बड़े मनोयोग से वेदी पर नवग्रहों के चित्र बना रहा है। घर का नौकर जोड़ूराम पहले पण्डित के पीछे आकर खड़ा होता है और फिर बाहर वाले दरवाज़े पर जाकर अपने सिर के बाल तोड़ता हुआ सोच में डूब जाता है। तभी माली घासीराम फूलमालाएँ और गुल-दस्ता लेकर बाहर से आता है और ध्यानमग्न जोड़ूराम को

देखता है ।]

माली (जोर से हँसकर) अरे, वाह रे, तोड़ू राम !

जोड़ू : (सचेत होकर, बिगड़कर) माली के बच्चे, मैंने तुझे सात बार कहा है कि मेरा नाम तोड़ू राम नहीं, जोड़ू राम है, जोड़ू राम।

माली अरे भई, क्यों आज के शुभ दिन नाराज हो रहे हो ? चीनी की प्लेटें तोड़ते हो, शीशे के बर्तन तोड़ते हो, और सब गिर के बाल भी तोड़ते हो। हुए न तोड़ू राम ?

जोड़ू मैं तेरा सिर भी तोड़ सकता हूँ। कैसा जमाना आ गया है। कल का नया नौकर पुराने नौकर का मजाक उड़ाता है। (जरा रुककर बाहर देखकर) ओह, छोटे मालिक अभी तक बाजार से मिठाई लेकर नहीं आए।

माली मैं तो बड़े मालिक के जन्मदिन की पूजा के लिए फूलमालाएँ भी ले आया, गुलदस्ता भी ले आया। बाजार जाते हुए छोटे मालिक कह गये थे। खैर, एक बात बताओ, तुम छोटे मालिक का इन्तजार करते हुए क्या सोच रहे थे ?

जोड़ू सोच रहा था, मैं सब कुछ तोड़ता हूँ, लेकिन आज तक इस घर की दादी माँ की नींद नहीं तोड़ सका।

माली क्या दादी माँ को सोये बहुत समय हो गया ?

जोड़ू : समय ? अरे, उन्हें सोये-सोये आज पूरे पच्चीस साल हो गए हैं।

माली : पच्चीस साल ? यह तो कुम्भकर्ण की नींद से भी लम्बी नींद हो गई। रात इतने जोर से बारिश हुई, बिजली कड़की, फिर भी दादी माँ नहीं जागी। जोड़ू राम, मैं तो इस कोठी में नया-नया आया हूँ। दादी माँ को पच्चीस साल पहले क्या हुआ था, जो तबसे सोई हुई हैं ?

जोड़ू : तब बड़े मालिक गाँव में रहते थे। सुना है कि उनके पिता, यानी कि दादी माँ के पति का अचानक देहान्त हो गया था। सदमे से दादी माँ बेहोश होकर गिर पड़ी। गिरते हुए सिर में ऐसी चोट लगी कि ...।

[उसी समय बाहर पोर्टिको में कृष्णगोपाल की कार के आने की आवाज़ सुनाई देती है। जोड़ू राम भागकर बाहर जाता है। तभी कमला सीढ़ियों से उतरकर पण्डित के पास जाती है।

कृष्णगोपाल बाहर से आकर माली से फूलमालाएँ और गुलदस्ता लेता है। उसके पीछे-पीछे जोड़ूराम मिठाई के डिब्बे उठाये हुए आता है। माली बाहर चला जाता है। इधर ललितमोहन दादी माँ के कमरे से निकलकर पण्डित के पास आ जाता है।]

कमला : (पण्डित की ओर से पलटकर, डाँटकर) किशु, अब आए हो सामान लेकर? इतनी देर कर दी? (कृष्णगोपाल डाँट से ऐसे चौंकता है कि एक-दो फूलमालाएँ नीचे गिर जाती हैं। कमला लपककर उन्हें उठाती है।) तुम जहाँ जाते हो, वहीं बैठ जाते हो। पता नहीं तुम्हें कब अक्ल आयेगी!

मोहन : (पास आकर) चाहें, तो अक्ल हमसे उधार ले लीजिए, जीजी जी।

कमला : तुम चुप रहो, मोहन।

[जोड़ूराम जल्दी-से मिठाई के डिब्बे लेकर बाईं ओर रसोई में चला जाता है।]

कृष्ण : (हँसते हुए) सुबह-सुबह नाराज क्यों होती हो, कमलारानी? मिठाई, नमकीन, फूलमाला, जो कुछ तुमने कहा था, सब ले आया हूँ। आज ससुर जी का जन्मदिन ऐसा धूमधाम से मनाया जाएगा कि···।

[हँसता है]

कमला : (डाँटकर) बन्द करो यह ही-ही! जल्दी-से रखो यह फूलमालाएँ टेबल पर।

पण्डित : बेटी कमला, जल्दी बुलाओ बाबू रूपचन्द जी को। पूजा का समय हो गया है।

कमला : (चौंककर) एँ, पिताजी कहाँ हैं?

मोहन : जीजी, वे नानी माँ के कमरे में हैं।

कमला : वे दादी माँ के कमरे मे क्या कर रहे हैं?

मोहन : मैंने अभी देखा था कि वे नानी माँ के चरण पकड़कर उन्हें जगाने की कोशिश कर रहे हैं। कह रहे थे—माँ, देखो, तुम्हारा चन्दू आज पचास बरस का हो गया। उठकर मुझे आशीर्वाद दो!

कमला : (बिगड़कर) ओह, पिताजी भी कभी-कभी बच्चे ही बन जाते

मैं लाती हूँ उन्हें।

[कमला दनदनाती हुई दादी माँ के कमरे की ओर जाती है, कृष्णगोपाल और ललितमोहन रुते हुए देर देखते हैं और फिर आपस में गुसर-पुसर करते हैं।]

कमला (दरवाजा खटखटाकर) पिताजी, आप यहाँ दादी माँ के पास बैठे हैं और उधर पण्डित बैठा आपका इन्तजार कर रहा है। घर के सब लोग भी आपका इन्तजार कर रहे हैं। क्या आप भूल गए कि आठ बजे पूजा का शुभ मुहूर्त है?

[रूपचन्द आँसें पोंछता हुआ बाहर दरवाजे पर आता है।]

रूपचन्द (रुँधे गले से) बेटी, शुभ मुहूर्त तो तभी होगा, जब मेरी माँ जागेगी।

कमला (झुँझलाकर) ओह, पिताजी, आप हर साल अपने जन्मदिन पर यही तमाशा करते हैं।

रूपचन्द (आहत-सा) तमाशा?

कमला तमाशा नहीं, तो और क्या? इतने इलाज के बाद भी जो दादी माँ २५ साल में होश में नहीं आईं, वे आज आपके जन्मदिन पर कैसे जाग जायेंगी? कितने डॉक्टर बता चुके हैं कि ···।

रूपचन्द नहीं-नहीं, कोई डॉक्टर मेरी माँ के रोग को नहीं समझ सका। २५ साल से हृदय-गति ठीक है, नब्ज ठीक है, पाचन-क्रिया भी ठीक है, तब भी माँ होश में क्यों नहीं आ रही?

[तभी सीढ़ियों से उतरकर सरला आती है। उसके हाथ में डॉक्टर्स बैग है।]

सरला जीजी, जल्दी-से पूजा शुरू कराइये न। आप तो जानती हैं कि मुझे नौ बजे हॉस्पिटल पहुँचना है ·।

कमला लीजिए, आपकी डॉक्टर बेटी आ गई। सरला, तुम अपनी डॉक्टरी भाषा में आज फिर पिताजी को समझाओ कि कैसे मस्तिष्क के 'हिपोथालेमस' हिस्से पर चोट लगने से दादी माँ बेहोश हुईं और अब तक क्यों होश में नहीं आईं।

रूपचन्द (मिन्नत करते हुए) आओ, सरला, तुम ही कुछ करो। शायद माँ आज होश में आ जाएँ।

[रूपचन्द दादी माँ के कमरे में जाता है। सरला उसके पीछे अन्दर जाती है। इधर जल्दी से कृष्णगोपाल फूलमाला और ललितमोहन गुलदस्ता हाथ में लेते हैं। कमला जब पलटती है, तो कृष्णगोपाल उसके गले में फूलमाला डालने लगता है।]

कमला . (डाँटकर) किशु, यह क्या मज़ाक है ?

कृष्ण . (सहमकर) मैं समझा, तुम्हारे पीछे-पीछे पिताजी भी आ रहे हैं। तुम तो जानती ही हो, हर साल जन्मदिन पर सबसे पहले मैं ही पिता जी को माला पहनाता हूँ।

कमला : (झुंझलाकर) लेकिन पिताजी तो अन्दर अभी अपनी माँ को जगा रहे हैं। माला रखो अभी। (तभी सीढ़ियों से विमला और अमला उतरती हैं।)

मोहन : जीजी, सुना है, आज फिर आपने सुबह-सुबह मुंशी जी को पानी की बाल्टी उडेलकर जगाया था…।

कमला : (डाँटकर) मोहन, तुमने आज फिर इन्हें मुंशी कहा। मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि…।

कृष्ण : अरे नहीं, यह ललितमोहन ठीक ही तो कह रहा है। शादी से पहले मैं इस घर में मुंशी था और और आज भी मुंशी ही हूँ, वर्ना रोज इतने सवेरे मुझे जागने की जरूरत ही क्या थी ? (ललितमोहन, विमला और अमला हँसते हैं।) अरे हाँ, याद आया। कमला, अभी जब मैं बाजार जा रहा था, तो उस स्कूल वाली इमारत का चौकीदार मिला था। उसने बताया कि कल रात की तेज बारिश में उस इमारत की पिछली दीवार ढह गई।

कमला : (चौंककर) क्या ? पिछली दीवार ढह गई ? किशु, यह सब तुम्हारी ही गलती है।

कृष्ण : (हैरान होकर) मेरी गलती ?

कमला : कल मैंने तुमसे कहा नहीं था कि ज्यों ही स्कूल की इमारत तैयार हो जाए, उसे मैनेजिंग कमेटी के हवाले कर देना ? बाद में रहे या ढहे, हमारी बला से।

मोहन : और जीजी, मैंने आपसे कहा था कि सरस्वती के स्थान पर आपका दा

दादी माँ आती :

नम्बर का माल न लगवाइये, न मगवाइये⋯।

कमला : (गुस्से से झपटकर) मोहन, अगर तुमने बकवास बन्द नहीं की, तो⋯।

मोहन तो मुझे मामा के घर से निकाल देंगी। (कानों को हाथ लगाकर) क्षमा देवी, क्षमा! क्षमा बड़ेन को चाहिए, छोटन को उत्पात⋯।

विमला जीजी!

कमला . क्या बात है, विमला?

विमला · पिताजी के जन्मदिन की पूजा पता नहीं कब हो। (कलाई की घड़ी देखकर) साढ़े आठ बजने को है। कॉलिज में आज नौ बजे स्टाफ की मीटिंग है। मैं कार ले जाऊँ?

कमला · नहीं, विमला, पूजा के फौरन बाद मुझे वह टूटी हुई दीवार देखने जाना है। (झुँझलाकर) ओह, पिताजी अभी तक नहीं आए!

[कमला तेजी-से दादी माँ के कमरे में जाती है।]

विमला (छटपटाकर) उफ! (कृष्णगोपाल से) जीजा जी, आप कार में जल्दी-से मुझे कॉलिज छोड़ आइये। दस मिनट का काम है।

कृष्ण . नहीं विमला, तुम्हारी जीजी की इजाज़त के बिना⋯।

विमला (झुँझलाकर) उफ! जीजी की इजाज़त के बिना इस घर में पत्ता भी नहीं हिल सकता।

मोहन . (हँसते हुए) पत्ता, यानी कि ताश का वह पत्ता⋯।

कमला · जिसे गुलाम कहते हैं। (सब हँसते हैं।)

मोहन · विमला जीजी, मेरी मानो, तो फौरन अपने उस रमेश को फोन करो। वह दफ्तर जाते हुए तुम्हें अपनी कार में ले जाएगा और कॉलिज पहुँचा देगा।

विमला ठीक है। मैं अभी रमेश को फोन करती हूँ। (जल्दी-से रिसीवर उठाकर टेलीफोन का डायल घुमाती है और बात करती है।) हैलो! रमेश, मैं विमला बोल रही हूँ⋯छि-छिः! तुम्हें कुछ और भी सूझता है? कम-से-कम इस प्रभातवेला में तो शरीफ बने रहो⋯ हूँ⋯हूँ⋯अच्छा, सब सुनो। आज दादी माँ का⋯नहीं⋯नहीं पिता-जी का जन्मदिन है। पूजा में अभी देर है और मुझे कॉलिज नौ बजे पहुँचना है⋯हाँ-हाँ, कार लेकर फौरन आ जाओ⋯थैंक्यू! (रिसीवर

नीचे रखती है।)

मोहन : जीजा जी, ग्रापकी हालत देखकर ही मैंने अभी तक शादी नहीं की। पता नहीं, आप कैसे यह डाँट-फटकार बर्दाशत कर लेते हैं!

अमला : अरे, मोहन भैया, क्यों हमारे भोले-भाले जीजाजी को भड़का रहे हो?

मोहन : (हँसकर) भोली-भाली शक्ल वाले होते हैं जल्लाद भी!

अमला . पता है, सुबह जब मैंने इन्हें बताया कि रात को बिजली की कड़क के साथ बड़े ज़ोर की वर्षा हुई, तो ये चौंककर बोले, "अरी, अमला, तुमने मुझे तभी जगा क्यों नहीं दिया? तुम तो जानती ही हो कि जब बिजली कड़कती है, तो मैं सो नहीं सकता।"

[मोहन जोर-से कहकहा लगाते-लगाते अचानक रुक जाता है। दादी माँ के कमरे से पहले कड़ी मुद्रा में कमला और फिर रूपचन्द और सरला निकलकर आते हैं। कृष्णगोपाल फूल-माला लेकर आगे बढ़ता है।]

कमला : (डाँटकर) किशू, पूजा के बाद।

[कृष्णगोपाल सहमकर वहीं रुक जाता है। ललितमोहन मुस्कराता है।]

मोहन : पण्डित जी, मामा जी आ गये हैं। जल्दी-से पूजा शुरू कीजिए।

[तभी पार्वती बब्बू की उँगली पकड़े हुए सीढ़ियों से उतरती है।]

रूपचन्द : (प्यार से) पार्वती, कमरे में माँ अकेली है। तुम उनके पास जाकर बैठो।

कमला : पिताजी, दादी माँ सो रही हैं। यह उनके पास बैठकर क्या करेगी। माया, बब्बू को रसोई में ले जाकर कुछ खिला-पिला दो। आज स्कूल से तो इसने छुट्टी कर ली।

[पार्वती बब्बू को लेकर रसोई में जाती है। पण्डित मन्त्र-जाप शुरू करता है और रूपचन्द को इशारे से वेदी के पास आसन पर बैठने को कहता है। तभी ड्राइंग रूम के पर्दे हिलने हैं।]

रूपचन्द : (एकाएक घबराकर) यह...यह क्या? यह फर्श क्यों

कमला : (लड़खड़ाकर) झटका तो मैंने भी महसूस किया है।

मोहन : (चिल्लाकर) भूचाल ...ज़ोर का भूचाल आया है।

कृष्ण : (डरकर) सारी कोठी हिल रही है।

कमला : (चिल्लाकर) माया ! बब्बू !!!

['भूचाल-भूचाल' के शोर के साथ भगदड़ मच जाती है। पण्डित राम-राम करता हुआ सबसे पहले बाहर भागता है। पार्वती बब्बू को लेकर रसोई से आती है और फिर उसे उठाकर बाहर भागती है। उसके पीछे-पीछे जोड़ूराम भी भागता है।]

कृष्ण : (डरकर बाहर भागते हुए) बाहर बगीचे में भाग चलो, भाग चलो !

कमला : (घबराकर) पिता जी, इस भूचाल से स्कूल की कहीं सारी इमारत ही न बैठ जाय। तीन लाख का नुकसान होगा।

रूपचन्द : तीन लाख का ?

मोहन . (कमला और रूपचन्द के हाथ पकड़कर बाहर खींचते हुए) मामाजी, जीजी, तीन लाख की चिन्ता छोड़िये, अपनी जान बचाइये।

रूपचन्द : (पोर्टिको में पहुँचकर एकाएक हाथ छुड़ाकर) अरे, मेरी माँ तो कमरे में रह गयी। उसका किसी को ख्याल ही नहीं आया। सब भाग गये। माँ, माँ ...!

कमला . (पोर्टिको से) पिताजी ! पिताजी !

[रूपचन्द पलट कर 'माँ-माँ' चिल्लाता हुआ तेज़ी से दादी माँ के कमरे में जाता है और एक क्षण बाद वहीं से ही दुखी व परेशान होकर चिल्लाता है।]

रूपचन्द : अरे, बचाओ, बचाओ ! मेरी माँ नीचे गिर गयी, लहू-लुहान हो गयी। कमला ! कमला !

[कमला बाहर से आकर जल्दी-से दादी माँ के कमरे के दरवाज़े पर पहुँचती है। घर के बाकी लोग भी बाहर वाले दरवाज़े पर आ जाते हैं।]

कमला : क्या हुआ, पिताजी ?

रूपचन्द : (रोते हुए) अरी, देख, मेरी माँ का खून हो गया !

दादी माँ जागी

कमला : (भीतर देखकर घबराकर) खून ? लगता है, भूचाल के झटके से ये पलंग से गिर गयी। ऊपर यह तिपाई गिर गयी !

रूपचन्द : अरी, देख क्या रही है ? जल्दी-से सरला को बुला।

कमला : अभी बुलाती हूँ। भूचाल के झटके तो बन्द हो गये।

रूपचन्द : (रोकर) साथ ही मेरी माँ की साँसे भी बन्द हो गयी। अरी, सरला को जल्दी-से बुलाकर ला।

कमला : (पुकारते हुए) सरला ! सरला !

[सरला घर के लोगों की भीड़ को चीरती हुई ड्राइंग-रूम में आती है और अपना बैग और स्टैथस्कोप लेकर दादी माँ के कमरे में जाती है। घर के बाकी लोग भी दादी माँ के कमरे के बाहर आकर खड़े हो जाते हैं।]

सरला : (कमरे के अन्दर से) मोहन भैया, जीजा जी, दादी माँ को उठाकर बाहर सोफ़े पर लिटा दीजिए। यहाँ तो चीज़ें बिखरी पड़ी हैं।

[कृष्णगोपाल और मोहन जल्दी-से कमरे में पहुँचते हैं और फिर कमला, सरला और रूपचन्द की मदद से दादी माँ को बेहोशी की हालत मे लाकर ड्राइंग रूम के सोफे पर लिटा देते हैं। दादी माँ के माथे से खून बह रहा है। सरला दवाई लगा कर माथे पर पट्टी बाँधती है, नब्ज देखती है और स्टैथस्कोप से दादी माँ के हृदय की जाँच करती है। उसके चेहरे पर तसल्ली का भाव उभरता है।]

रूपचन्द : (विलाप-सा करते हुए) अरी सरला, मेरी माँ को बचा ले ! मैंने तुझे इन्हीं की खातिर डॉक्टर बनाया है। अरी, नब्ज टटोलने से क्या होगा ? माँ तो हमेशा के लिए मुझे छोड़कर ''।

(रोता हुआ माँ के पाँवों पर झुक जाता है।)

सरला : पिताजी, जरा धीरज से काम लीजिए। दादी माँ मरी नहीं।

रूपचन्द : (सँभलकर) क्या कहा, मेरी माँ मरी नहीं ?

सरला : हाँ, पहले की तरह सिर्फ अचेत हैं। हृदय की गति ठीक है, नब्ज ठीक है। गिरने से चोट लगी है। उसी का फ़ौरन इलाज करना कमला, तुम रसोई में जाकर जोड़ूराम से पानी गर्म कराओ।

इंजेक्शन लगाने होंगे।

(कमला जोड़ूराम के साथ रसोई में जाती है। सरला बैग में से सिरिंज वगैरह निकालती है।)

रूपचन्द : अरी, इन इंजेक्शनों से कुछ नहीं होगा। कमला, फ़ोन करके सिविल सर्जन को बुला लो।

सरला : पिताजी, किसी को बुलाने की ज़रूरत नहीं। चोट सिर में लगी है— वैसी ही चोट जैसी कि २५ साल पहले लगी थी। और मेरा ख्याल है कि इस चोट से ···

रूपचन्द : क्या?

(दादी माँ के होंठ फड़फड़ाते हैं।)

सरला : (एकाएक उछलकर) यह देखिए, दादी मा के होंठ फड़फड़ा रहे हैं!

सब लोग : (हर्ष और आश्चर्य से) हाँ, होंठ फड़फड़ा रहे हैं!

कमला : (हर्ष और आश्चर्य से) और पलकें भी फड़फड़ा रही हैं।

(दादी माँ का एक हाथ हिलता है।)

विमला : (हर्ष और आश्चर्य से) एक हाथ भी हिला!

(दादी माँ आँखें खोलती है।)

कृष्ण : (हर्ष और आश्चर्य से) लो, दादी माँ ने आँखें भी खोल दी।

[रूपचन्द हर्ष-विभोर होकर, उठकर देखता है। दादी माँ आँखें खोलकर विस्मय से इधर-उधर देखती हैं। चारों ओर खुशी की लहर दौड़ जाती है। सब सोफे के चारों ओर खड़े हो जाते हैं। कमला के पीछे-पीछे जोड़ूराम गर्म पानी का पतीला लेकर आता है।]

सब लोग : (सहर्ष) दादी माँ जाग गयी! दादी माँ जाग गयी!

सब नौकर : बधाई हो, मालिक। बधाई हो, मालकिन।

रूपचन्द : (गद्गद् कण्ठ से) हे भगवान्, तेरा लाख-लाख धन्यवाद! तेरी लीला अपरम्पार है। आज मेरी माँ का २५ बरस बाद दूसरा जन्म हुआ है।

मोहन : मामा जी, आपके जन्म-दिन पर इनका दूसरा जन्म हुआ है।

रूपचन्द : हाँ, मैंने चाहा था कि माँ आज जागकर मेरे जन्मदिन पर मुझे आशीर्वाद दें। भगवान ने मेरी सुन ली। अरी लड़कियो, खुशी के गीत

गाओ, मिठाई बाँटो, गरीबों के लिए सदावर्त लगाओ। अरे, पंडितजी कहाँ गये ?

कृष्ण : लगता है, पण्डित जी को भूचाल ले गया।

कमला : (डाँटकर) किशू !

[तभी पण्डित पोर्टिको की ओर से भागा हुआ आता है।]

पण्डित : (आते हुए) बधाई हो, यजमान ! आपकी माता जी का पुनर्जन्म हुआ। दान-पुण्य कराइये।

[कहते-कहते दादी माँ के ऊपर फूल बरसाता है।]

कमला : पण्डित जी, सब-कुछ होगा। पहले आप पिताजी से पूजा कराइये।

पण्डित : अभी कराता हूँ, कमला बेटी। अब तो मुहूर्त दुगना शुभ हो गया।

[पण्डित फिर पहले वाले स्थान पर बैठकर पूजा की वेदी सजाने लगता है। माली बाहर चला जाता है। सरला गर्म पानी में सिरिंज डालकर निकालती है।]

बब्बू : मम्मी ! मम्मी !

कमला : क्या बात है, बब्बू ?

बब्बू : मम्मी, दादी माँ जाग गयीं ?

कमला : हाँ, बेटा।

बब्बू : तब तो मम्मी, यह भूचाल बड़े काम की चीज़ है।

कमला : हाँ, बेटा। इस भूचाल ने ही तेरी पड़नानी को जगाया है।

बब्बू : मम्मी, सवेरे डैडी को जगाने के लिए भी इसी भूचाल को बुला लिया करें। (सब हंसते हैं।)

मोहन : बब्बू, तेरे डैडी के लिए तेरी मम्मी ही भूचाल है।

(ज़ोर का कहकहा लगता है।)

कमला : (डाँटकर) मोहन, तुम दिनों-दिन बहुत बदतमीज होते जा रहे हो।

रामचन्द : अरे, तुम लोगों ने क्या ही-ही लगा रखी है। माँ होश में आकर भी बेहोश हैं। मेरी ओर फटी-फटी आँखों से देख रही हैं, लेकिन बोलती कुछ नहीं।

सरला : (दादी माँ के बाजू में इन्जेक्शन लगाकर) पिताजी, आप इतने उतावले क्यों हो रहे हैं ? दादी माँ धीरे-धीरे होश में आ रही हैं।

दादी माँ जागी :

(जल्दी-से) पिताजी, सुनिये। दादी माँ के होंठ हिल रहे हैं।

दादी : (इधर-उधर देखते हुए अत्यन्त दुर्बल स्वर में) मैं ··कहाँ ··हूँ···?

सब लोग . (खुश होकर) दादी माँ बोलने लगी।

रूपचन्द (चेहरे के पास चेहरा लाकर हर्ष-विभोर-सा) तुम अपने घर में हो, माँ!

दादी : (जैसे सुना न हो, इधर-उधर देखते हुए) यह कौन-सा लोक है? यह···यह नरक-लोक तो नहीं हो सकता। नरक-लोक में तो ऐसे सुन्दर भवन कहाँ, ऐसी फूलों की बरखा कहाँ! तो यह स्वर्ग-लोक ही है।

रूपचन्द · अरे, माँ तो जैसे किसी दूसरे लोक से बोल रही है! हमें तो पहचानती ही नहीं।

सरला अभी पूरी तरह होश में नहीं आई। (दादी माँ की नब्ज देखती है।)

दादी : (सब पर नज़र डालकर हैरानी से) तुम सब कौन हो? स्वर्ग-लोक में तुम सब कैसे पहुँच गये?

रूपचन्द माँ!

कमला दादी माँ ·!

विमला यह स्वर्ग-लोक नहीं· !

अमला . मर्त्य-लोक है।

मोहन · यह मर्त्य-लोक के भारत देश की राजधानी दिल्ली है।

रूपचन्द और माँ, तुम इस समय दिल्ली वाले अपने मकान में हो।

दादी · मैं अपने मकान में हूँ? झूठ, एकदम झूठ। यह लो, लोग स्वर्ग में भी झूठ बोलने लगे! अरे, मेरा मकान तो कच्चा है—डेढ़ कमरे का छोटा-सा(चारों ओर देखकर)और यह भवन तो···आहा, यह तो इन्द्रदेवता का महल जान पड़े है। संगमरमर की दीवारें, रेशम के पर्दे, मखमल के आसन और···और उस खिड़की से तो देवताओं का वह नन्दन-कानन भी दिखाई देवे है।

[चारों लड़कियाँ हँसती हैं।]

रूपचन्द · (डाँटकर) अरी, लड़कियो!

दादी : अरे, क्यों डाँट रहे हो इन्हें? ये तो देवलोक की अप्सराएँ हैं।

[लड़कियाँ फिर हँसती हैं।]

कृष्ण : (हँसकर) लो, कमला, तुम तो अब अप्सरा हो गयीं।

कमला : (डाँटकर) चुप रहो।

रूपचन्द : माँ, ये अप्सराएँ नहीं, तुम्हारी पोतियाँ हैं और मैं हूँ तुम्हारा बेटा रूपचन्द, तुम्हारा चन्दू।

दादी : (जैसे याद करते हुए) चन्दू ? लेकिन मेरा चन्दू यहाँ परलोक में कैसे आ गया ? ऐसी अशुभ बात न कहो। नहीं, नहीं, तू मेरा चन्दू नहीं हो सकता। तू तो…तू तो बूढ़ा दीखे है। मेरा चन्दू तो पच्चीस बरस का गबरू जवान है।

रूपचन्द : माँ, मैं तुम्हारा वही चन्दू हूँ।

दादी : (खुश होकर) सच ? लेकिन तू कितना बदल गया है, रे !

रूपचन्द : माँ, तुम आज मुझे २५ बरस बाद देख रही हो।

दादी : क्या कहा, मैं तुझे पच्चीस बरस बाद देख रही हूँ ?

रूपचन्द : हाँ, माँ। तुम्हें याद होगा, तुम बापू की मौत का समाचार पाकर अचानक पछाड़ खाकर गिर पड़ी थीं और…।

दादी : (जैसे याद करते हुए) हाँ, याद है। मैं दीवार से टक्करें मारते-मारते गिर पड़ी थी और…और…।

रूपचन्द : गिरने से तुम्हारे सिर में चोट लगी थी और तुम बेहोश हो गयी थीं।

दादी : (एकाएक) तो क्या मैं हतभागिन मरी नहीं ?

रूपचन्द : नहीं, माँ। वह चोट तुम्हारे मस्तिष्क के ऐसे स्थान पर लगी थी कि तुम पर नींद जैसी बेहोशी छा गयी और वह बेहोशी २५ बरस तक छायी रही। आज फिर अचानक सिर में चोट लगने से तुम होश में आ गयी हो…मतलब यह कि…।

दादी : (जल्दी-से उठकर) तो क्या मैं ज़िन्दा हूँ ?

सरला : (फिर लिटाने की कोशिश करते हुए) दादी माँ, उठिए नहीं। आप अभी कमज़ोर हैं।

दादी : (सरला को पीछे धकेलकर बैठ जाती है) कौन कहता है, मैं कमज़ोर हूँ ? मैं तो भली-चंगी हूँ। (पीठ को हाथ लगाकर) हाँ, यह पीठ कुछ दुखे है।

रूपचन्द : सरला, माँ की पीठ का इलाज करना होगा।

दादी : (मुस्कराकर) तो मैं सचमुच जिन्दा हूँ ?

रूपचन्द : (प्रसन्न होकर) हाँ, माँ।

दादी : क्या मैं सचमुच २५ बरस बाद होश में आई हूँ ?

रूपचन्द : (और भी प्रसन्न होकर) हाँ, माँ।

दादी : क्या मैं इतनी लम्बी बेहोशी में भी जिन्दा रही ?

रूपचन्द : हाँ, माँ। बेहोशी में तुम बराबर खाती-पीती रहीं, इन्जेक्शन और दवाइयाँ लेती रहीं, बड़े-बड़े डॉक्टर तुम्हारा इलाज करते रहे और···

दादी : अरे, तो मैं अपने घर में हूँ ?

रूपचन्द : हाँ, माँ।

दादी : और तू मेरा बेटा चन्दू है ?

रूपचन्द : हाँ, माँ। और ये लड़कियाँ तुम्हारी···।

दादी : (ध्यानपूर्वक देखते हुए) ये लड़कियाँ ··?

रूपचन्द : तुम्हारी पोतियाँ हैं।

दादी : अरे हाँ, याद आया। तेरे घर दो लड़कियाँ हुई थीं ··

रूपचन्द : हाँ, माँ। कमला और विमला। (कमला और विमला को इशारे से बुलाकर) माँ, यह तुम्हारी बड़ी पोती कमला है।

दादी : अरे हाँ, मैंने ही इसका नाम कमला रखा था। पण्डित ने बताया था कि कमला का अर्थ होवे है लक्ष्मी।

रूपचन्द : माँ, यह कमला मेरे घर की लक्ष्मी ही है। और यह विमला भी···

दादी : (एकाएक) अरे चन्दू, बहू हीरादेवी कहाँ है ?

रूपचन्द : (उदास होकर) माँ, तुम्हारी बहू नहीं रही। छह साल हुए उसका देहान्त हो गया था।

दादी : (उदास होकर) क्या, बहू का देहान्त हो गया ? मैं बुढ़िया अभी तक जी रही हूँ और मेरी लक्ष्मी-सी बहू भगवान् को प्यारी हो गयी ? (रोती है।)

रूपचन्द : माँ, रोओ नहीं। जाने वाली चली गई, अब उसका शोक मनाने से क्या होगा।

दादी : अरे, हीरादेवी सचमुच लक्ष्मी थी। उसने घर में पाँव रखा ही था कि

तुझे दिल्ली के एक बड़े ठेकेदार के यहाँ मुंशी की नौकरी मिल गयी थी—सौ रुपये की। अब तुझे क्या मिले है ?

रूपचन्द : हज़ारों-लाखों रुपये।

दादी : क्या कहा, हज़ारों-लाखों रुपये ?

कमला : (मुस्कराकर) दादी माँ, अब पिताजी किसी ठेकेदार के नौकर नहीं, खुद बहुत बड़े ठेकेदार बन गये हैं और हज़ारों-लाखों रुपये कमा रहे हैं।

दादी : (रूपचन्द की बलैयाँ लेते हुए) सच ?

कमला : इनकी अमीरी का अनुमान आप इस कोठी की शान से लगा सकती हैं। घर में हर चीज है, नौकर हैं, क्लर्क हैं, दो कारें हैं।

रूपचन्द : मतलब यह कि भगवान् का दिया सब कुछ है।

दादी : (गद्‌गद होकर) वाहवा ! आज अपने चन्दू को पाकर और उसकी तरक्की का हाल सुनकर मैं बहुत खुश हूँ। आज सारे दुख भूल गये। चन्दू, आज तेरे बापू होते, तो वह कितने खुश होते ! (एकाएक) अरे हाँ, चन्दू, तब तेरी दो लड़कियाँ थीं। बाद में (सरला की ओर इशारा करके) यह लड़का···?

[सब हँसते हैं। सरला परेशान होकर दादी माँ के पास से हट जाती है।]

रूपचन्द : नहीं माँ, यह तेरी तीसरी पोती है—सरला। यह डॉक्टर है। इसने बीमारी के दौरान तुम्हारी बड़ी सेवा की है।

दादी : (बात काटकर) अरे, तो क्या यह लड़की है ? इसके बालों को क्या हुआ ? मैं जानती हूँ, कभी-कभी बीमारी से या जूएँ पड़ने से लड़कियों के बाल झड़ जाते हैं। कल मैं जूएँ मारने की दवाई और बाल लम्बे करने वाला तेल बनाकर इसे दूँगी। (सब हँसते हैं।)

मोहन : (हँसते हुए) हाँ, नानी, सरला की जूओं का इलाज होना ही चाहिए।

दादी : (चौंककर) यह नानी मुझे कौन कह रहा है ? अरे हाँ, याद आया। अरे, चन्दू, मेरी एक बेटी भी थी पुष्पा। उसकी शादी मैंने मेरठ के पास बाबूगढ़ में की थी।

रूपचन्द : माँ, यह मोहन उसी का बेटा है।

दादी : (खुश होकर) तो यह मेरा नाती है। मेरे पास आ, मोहन। (मोहन पाँव छूता है। दादी माँ उसका माथा चूमती है।) जुग जुग जियो, मेरे लाल। अरे, तूने खद्दर के कपड़े पहन रखे हैं। तू गांधी बाबा का चेला है?

कमला : चेला नहीं, गुरुघंटाल है।

[सब हँसते हैं।]

दादी : चलो, अच्छा हुआ। घर में एक तो गांधी बाबा को मानने वाला है। वह बहुत बड़े महात्मा थे। उन्होंने ही तो हमें आज़ादी दिलाई थी। और सुन चन्दू, पुष्पा को आज ही तार दे दे कि मैं ठीक हो गयी हूँ। मेरी बेटी कितनी खुश होगी! तुरन्त मुझे मिलने चली आयेगी।

रूपचन्द : (उदास-सा) नहीं माँ, पुष्पा अब नहीं आयेगी।

दादी : क्यों?

रूपचन्द : अब वह इस दुनिया में नहीं।

दादी : (रोकर) हाय, मैं मर गयी। मेरी बेटी भी भगवान् को प्यारी हो गयी और मैं पापिन अभी तक जिन्दा हूँ। अरे, क्या हुआ था मेरी बेटी को?

रूपचन्द : माँ, बड़ी ही दर्दनाक कहानी है। पुष्पा के ससुराल वाले बहुत धनी थे न। एक रात उनके घर डाका पड़ा। डाकुओं ने पुष्पा, उसके पति, उसके सास-ससुर, सबको मौत के घाट उतार दिया। बचा केवल यह ललितमोहन।

दादी : अरे, तो इस आज़ाद भारत में भी डाकू हैं?

कृष्ण : कई तरह के डाकू हैं, दादी माँ।

कमला : (डपटकर) किशू।

दादी : अरे चन्दू, यह कौन है?

रूपचन्द : अरे हाँ, कृष्ण का परिचय तो कराया ही नहीं।

दादी : क्या कहा, परचा कटाया नहीं? क्या यह कोई ऐसा-वैसा...?

[सब हँसते हैं।]

रूपचन्द : (हँसते हुए) नहीं माँ, यह कृष्णगोपाल है—इस कमला का पति...।

दादी : तेरी इस बड़ी लड़की का पति? (बिगड़कर) और यह लड़की हम सबकी मौजूदगी में इसके सामने मुंह उघाड़े बैठी है? (कमला परेशान होकर दूर चली जाती है।) हाय, दैया, यह कैसा ज़माना आ गया! लड़कियों में लाज-शर्म ही नहीं रही। चन्दू, याद है तुझे, जब घर में कोई आता था, तो मैं तेरे बापू के सामने कभी मुंह नंगा नहीं करती थी। (रूपचन्द और कमला के अलावा सब छुप-छुपकर हंसते हैं।) और हां, मैंने कुछ देर पहले देखा था कि यह कमला अपने पति को डांट भी रही थी।

रूपचन्द : (बीच-बचाव करता हुआ) मां, दरअसल बात यह है कि ये कमला और कृष्ण बचपन से ही एक-दूसरे को···।

दादी : अरे, चुप रह। मैं सब समझूं हूं। घर में कोई बड़ी-बूढ़ी न होने से तेरी यह लड़कियां बेमुहार हो गयी हैं। मैं ज़रा ठीक हो जाऊं, तो···।

पण्डित : यजमान, ये बातें तो बाद में होती रहेंगी। जल्दी-से आकर पूजा कराइये। दूसरा मुहूर्त भी निकला जा रहा है।

दादी : (सोफे से उठकर) अरे चन्दू, तेरे घर में आज पूजा है?

रूपचन्द : हां मां, आज मेरा जन्म-दिन है न। तुमने ही तो मेरे जन्मदिन पर पूजा की रीत डाली थी।

दादी : अरे हां, मैं बड़ी विधि से तुम्हारी पूजा कराती थी। चल, पूजा करा। मैं तेरे पास बैठूंगी।

सरला : (दादी मां को जल्दी-से पकड़कर) दादी मां, अभी आप चलिए नहीं।

दादी : (अपने आप को छुड़ाकर) अरी, छोड़ मुझे। मेरे बेटे का आज जन्म-दिन है और मैं चलूं-फिरूं भी नहीं?

[रूपचन्द मां को सहारा देकर पूजा की वेदी पर लाता है।]

रूपचन्द : (भक्ति-भाव से मां के पांव छूकर) मां, मेरा आज का यह जन्मदिन बड़ा ही शुभ है। मुझे आशीर्वाद देने के लिए ही जैसे आज तुम २५ बरस की नींद से जागी हो।

दादी : (रूपचन्द के सिर पर हाथ रखकर) बेटा, तू जुग-जुग जिये, फूले-फले, यश की बेल बढ़ाये, बाप-दादा का नाम रौशन करे। [illegible]

[दोनों आसनों पर बैठते हैं। पण्डित पूजा का जाप शुरू करता

है। कमला, विमला, बब्बू और पार्वती चुपचाप पास बैठ जाते हैं। अमला रसोई के दरवाजे के पास जाकर खड़ी हो जाती है। कृष्णगोपाल और ललितमोहन उसके पास पहुँचते हैं और खुसर-फुसर शुरू करते हैं।)

कृष्ण (धीरे-से) अमला, तू यहाँ मुँह फुलाए क्यों बैठी है? क्या तुम्हें दादी माँ के जागने की खुशी नहीं?

अमला . (धीरे-से) अच्छा हुआ जो दादी माँ ने जागकर जीजी और पिताजी को डाँट दिया। दोनों में से किसी ने भी दादी माँ से मेरा परिचय नहीं कराया।

तोड़ू : (रसोई से निकलकर) अजी, परिचय तो मेरा भी नहीं कराया।

मोहन : अरे तोड़ूराम, जब तू प्लेटें तोड़ेगा, तो तेरा परिचय अपने आप हो जाएगा।

कृष्ण और अमला, जब तुम नाच का एक तोड़ा तोड़ोगी, तो···।

मोहन हाँ, हाँ, सबका परिचय हो जाएगा। अब नानी कहीं भागी तो जा नहीं रही। एक बार जागकर फिर सोयेंगी थोड़े ही।

कृष्ण : लगता है, अब दादी माँ ही इस घर को चलाएँगी।

मोहन जीजाजी, अब मज़ा आयेगा।

कृष्ण वह कैसे?

मोहन · रानी पर महारानी जो आ गई हैं।

[दोनों हँसते हैं। इसके साथ ही मंच पर दृश्य-समाप्ति-सूचक अंधेरा हो जाता है।]

दूसरा दृश्य

स्थान—कोठी का ड्राइंग-रूम।

समय—दूसरे दिन सायंकाल।

[दादी माँ ड्राइंगरूम में आराम-कुर्सी पर बैठी हैं। रूपचन्द नीचे बैठकर उसके पाँव दबा रहा है।]

दादी : (पाँव हटाकर) अरे रूपू, छोड़ मेरे पाँव। अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ।

रूपचन्द : नहीं, माँ, इन चरणों में ही मेरा सब-कुछ है। दस बरस की बीमारी के बाद तुम देवी-माता की तरह फिर प्रकट हुई हो। कैसे इन चरणों को छोड़ दूँ?

दादी : (हँसकर) पगला! आज मुझे देवी-माता बनाता है और कल मुझे किसी मंदिर में ले जाकर बैठा देगा।

रूपचन्द : माँ, यह कोठी, यह लाखों की जायदाद, यह सब तुम्हारा मन्दिर ही तो है।

दादी : (गंभीर होकर) अरे, सुन। तूने बताया था कि तू इमारतें बनाने की ठेकेदारी करता है। ठेकेदारी के उसी धन्धे से तू लाखों रुपये कमा चुका है और कमा भी रहा है। इधर जब से मैं बीमारी से उठी हूँ, तू मेरे पास यहाँ घर में ही बैठा रहता है। तेरे उस ठेकेदारी के धन्धे को कौन चलाता है?

रूपचन्द : माँ, मैं बता चुका हूँ न कि मेरे उस सारे धन्धे को तुम्हारी बड़ी पोती कमला अपने पति कृष्णगोपाल की मदद से चलाती है—आज से नहीं, बरसों से चलाती आ रही है। तुमने जब बेहोश होकर चारपाई पकड़ ली थी, तो मेरा ज्यादा समय तुम्हारे इलाज के लिए डाक्टरों के पीछे भागने में बीतने लगा था। छह साल पहले जब तुम्हारी बहू हीरादेवी की अचानक मौत हुई, तो मैं असमय ही बूढ़ा हो गया। मेरे मन में कुछ ऐसा वैराग्य पैदा हुआ कि सब-कुछ कमला पर छोड़कर तुम्हारे चरणों में पड़ा रहता था। बड़ी योग्य है कमला! बी० ए० तक पढ़ी हुई है और…।

दादी : लेकिन है तो लड़की।

रूपचन्द : नहीं माँ, मैं तो उसे अपना बड़ा लड़का मानता हूँ। जिस खूबी से घर के साथ-साथ ठेकेदारी का काम सँभाल रही है, कोई लड़का क्या संभाल सकेगा। बड़े-बड़े अफसरों से मिलकर सरकारों के ठेके लेना, आर्किटेक्टों से उन इमारतों के नक्शे लेना, लेबर से काम लेना, बिल्डिंग मैटीरियल जुटाना, हिसाब रखना, बिल पास कराना और…।

बाद भी इतना बड़ा टेका ! वाह !!

कमला : तो तुमने मेरी सब बातें सुनीं।

मोहन : नहीं, नहीं, बस, मतलब की...।"

कमला : (गुस्से से) मेरा जी चाहता है कि तुम्हें अभी ...।

मोहन : जीजी, क्या जादू किया आपने उस इंजीनियर पर। जल्दी-से अपने पाँव जरा आगे कीजिए, मैं छूना चाहता हूँ।

[ललितमोहन फौरन साष्टांग लेट जाता है। उसी समय कृष्णगोपाल बाहर से आता है।]

कृष्ण : (चौंककर) एँ, यह मैं क्या देख रहा हूँ! ललितमोहन बसल यानी कि एल० एम० बी० युवा नेता कमला रानी के पाँव की धूल चाट रहा है!

मोहन : (जल्दी-से उठकर, हँसकर) जीजाजी, मैं देख रहा था कि जो धूल आप रोज़ चाटते हैं, उसका स्वाद कैसा है।

कमला : (हँसकर) मोहन, तुम बदतमीज़ी से बाज नहीं आओगे।

कृष्ण : कमला, पता है, इसके नाम एल० एम० बी० का क्या अर्थ है?—लूटो, मेरे भाई!

कमला : (डाँटकर) किशू!

मोहन : जीजी, मेरे नाम का यही अर्थ है। मैं लूट ही तो रहा हूँ खुशियाँ आप के राज में।

कमला : अरे, राज अब मेरा नहीं, तुम्हारी नानी का है।

मोहन : कहाँ हैं वे?

कमला : अपने कमरे में।

मोहन : और मामाजी?

कमला : (हँसकर) जहाँ एक मातृभक्त बेटे को होना चाहिए—आठों पहर माँ के चरणों में।

मोहन : (हँसते हुए) मामाजी तो जैसे माँ के चरणों में धूनी रमाकर बैठ गए हैं।

[तभी बब्बू रसोई से आता है, पार्वती के साथ।]

बब्बू : (आते हुए) मम्मी, मम्मी...!

कृष्ण : और हमारा यह बब्बू ?

मोहन : अरे, यह बब्बू मातृभक्त थोड़े ही है। यह तो आया-भक्त है।

पार्वती : (हँसते हुए) मोहन बाबू, आप मुझे आया की नौकरी से निकलवा कर छोड़ेंगे।

बब्बू : नहीं आया, तुम्हें यहाँ से कोई नहीं निकाल सकता।

कमला : अरे हाँ, याद आया। किशू, हफ्ते-भर से खराब पड़े उस टैलीविज़न सैट का क्या हुआ ?

कृष्ण : उधर दफ्तर में मैकेनिक उसे ठीक कर रहा है।

कमला : तो तुम यहाँ क्या करने चले आये ? वहीं रहकर सैट को जल्दी ठीक कराते। आज सात बजे अमला का प्रोग्राम है। सभी देखना चाहते हैं।

कृष्ण : मुझे मालूम है। इसीलिए तो मैं पूछने आया था कि ''खैर मैं जाता हूँ।

[बाहर पोर्टिको की ओर चल देता है।]

मोहन : (हँसकर) आये भी वह, गये भी वह, खत्म तमाशा हो गया।

कमला : मोहन, तुम भी जाओ। जैसे भी हो, सात बजे से पहले सैट ठीक कराके ले आओ।

मोहन : अच्छा, जीजी ! (बाहर वाले दरवाजे की ओर जाता है।)

बब्बू : मम्मी, मैं भी अंकल के साथ जाता हूँ।

मोहन : (जाते-जाते घड़ी के पास रुककर) अरे, इस घड़ी को आज किसी ने चाबी ही नहीं दी।

[ललितमोहन चाबी देने के बहाने घड़ी को आधा घंटा पीछे करता है और फिर बब्बू के साथ बाहर चला जाता है। इधर कमला पार्वती को पास बुलाकर कान में कुछ कहती है और फिर सीढ़ियों से ऊपर चली जाती है। तभी रूपचन्द दादी माँ को सहारा देकर कमरे से लाता है। पार्वती सीढ़ियों की आड़ में खड़ी हो जाती है।]

दादी : (आते हुए) अरे चन्दू, तेरी लड़कियों के लच्छन देखकर मुझे तो चिंता होने लगी है। किसी ने उन्हें घर-गृहस्थी का काम सिखाया ही नहीं।

हमारे समय में बहुत हुआ, तो लड़की ने रामायण पढ़ ली, नित-नेम सीख लिया। बाकी सारा समय घर की देख-भाल करती, चौका-बर्तन करती, खाना बनाती, सीना-पिरोना सीखती। लेकिन तेरी कोई लड़की ठेकेदार है, कोई परफ़ेसर है, कोई डॉक्टर है और कोई नचैया-गवैया है। (कहती हुई सोफ़े पर बैठ जाती है।)

रूपचन्द : माँ, बात यह है कि…।

दादी : (बात काटकर) अरे, सुन। तेरी इन चारों लड़कियों में से सिर्फ़ कमला की ही शादी हुई है न?

रूपचन्द : हाँ, माँ।

दादी : बाकी तीनों भी तो ब्याह जोग है। ज़रा बता तो, उनकी उम्रें क्या हैं?

रूपचन्द : बताता हूँ (सोचते हुए) सबसे छोटी अमला २२ बरस की हो चुकी है। उससे बड़ी सरला २५ बरस की और विमला कोई २७ बरस की होगी।

दादी : हाय दैया! इतनी बड़ी-बड़ी लड़कियाँ तूने घर में कुआँरी बैठा रखी हैं। मैं कहती हूँ, चन्दू, तेरी अकल को क्या हो गया है?

रूपचन्द : माँ, बात यह है कि अभी तीनों लड़कियाँ ब्याह करना नहीं चाहतीं, अभी और आगे पढ़ना चाहती हैं। जब ये चाहेंगी, मैं फ़ौरन शादी कर दूँगा।

दादी : क्या कहा, जब लड़कियाँ चाहेंगी, तब शादी करेगा? नहीं, नहीं, लड़की की शादी माँ-बाप की मर्ज़ी से होवे है।

रूपचन्द : माँ, समय बदल गया है। शादी में लड़की की मर्ज़ी ज़रूरी है। लड़की को गाय की तरह एक खूँटे से खोलकर दूसरे खूँटे से बाँधना न्याय नहीं।

दादी : (बिगड़कर) अरे, न्याय के ठेकेदार, मेरी कोख से जन्म लेकर मुझे ही उपदेश देवे है?

रूपचन्द : (घबराकर) माँ!

दादी : माँ के बच्चे, क्या तू जानता नहीं कि जवान लड़कियों को घर में कुआँरी बैठाये रखना कितना बड़ा पाप है? मेरा ब्याह १३ बरस की उम्र में हो गया था। तेरी बहू चौदह बरस की थी, जब तेरा ब्याह हुआ था।

रूपचन्द : लेकिन माँ, अब इतनी छोटी उम्र की लड़की को ब्याह करना जुर्म है।

दादी : तेरी ये लड़कियाँ तो इतनी छोटी नहीं। अब बैठा सोच रहा है? वर-घर ढूंढ और इनके हाथ पीले कर। तेरे लाखों रुपये किस काम आयेंगे ?

रूपचन्द : माँ, चिन्ता न करो, सब-कुछ हो जायेगा।

दादी : अरे, कब हो जायेगा ? मैं कहती हूँ, घर में तीन-तीन जवान कुमारी लड़कियों के रहते तुझे रात को नींद कैसे आती है ? मैं तो ऐसे घर में अन्न-जल भी ग्रहण न करूँ।

रूपचन्द : (घबराकर) मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ, माँ, ऐसी बात न कहो। तुम ज़रा स्वस्थ हो जाओ, तो फिर जैसा कहोगी, वैसा ही होगा।

दादी : ठीक है। मैं ज़रा चलने-फिरने के काबिल हो जाऊँ, तो महीने-दो-महीने के अन्दर-अन्दर अपनी पसन्द के वर-घर ढूंढकर इन लड़कियों को विदा कर दूंगी।

[तभी सीढ़ियों के पीछे खटका होता है।]

रूपचन्द : कौन है ?

पार्वती : (सामने आकर) बड़े बाबू, मैं हूँ। पूछने आई थी कि…।

दादी : चन्दू, यह कौन है ?

रूपचन्द : हमारे बब्बू की आया। माँ, मैंने बताया था न कि तुम्हारी बीमारी के दिनों में इसने तुम्हारी बड़ी सेवा की थी।

दादी : ठीक है। अब मुझे सेवा-टहल की कोई ज़रूरत नहीं। यह बेकार ही मेरे आस-पास डोलती रहती है। अरी, खड़ी क्यों है ? जा यहाँ से। (पार्वती सीढ़ियों से ऊपर चली जाती है) सुन चन्दू, जब बब्बू की माँ कमला है, तो इस आया की क्या ज़रूरत है ? यह तो नई बात सुनी —बच्चा जने कोई, संभाले कोई ! न बाबा, मेरे सामने यह चोंचले नहीं चलेंगे।

रूपचन्द : (बात बदलते हुए) माँ, तुम कह रही थी कि खाना शाम होते ही आ लेना चाहिए…।

दादी : हाँ रे, लेकिन मुझे तो अभी भूख नहीं। खाना तो नौकर बनाता है न ?

रूपचन्द : हाँ, माँ, जोह्रराम बहुत अच्छा खाना बनाता है।

दादी . चल देखूँ, आज वह क्या पका रहा है ?

[रूपचन्द दादी माँ को सहारा देकर बाईं ओर के दरवाजे से रसोई में ले जाता है। अमला कोई गीत गुनगुनाती साज-सिंगार किये सीढ़ियों से उतरती है। तभी बाहर वाले दरवाजे से सीटी बजाती हुई, रैकेट घुमाती हुई, फुदकती हुई सरला आती है। उसने सफ़ेद स्कर्ट, सफ़ेद ब्लाउज, सफ़ेद शू और सफ़ेद जुराबें पहन रखी हैं।]

सरला . (ठिठककर, अमला को सिर से पाँव तक निहारकर) ज़ालिम, आज तो तुम क़त्ल किये डाल रही हो !

अमला . (हँसकर) क़त्ल तो तुम करके आई हो डाक्टर कैलाश आहूजा को।

सरला : (रैकेट को चाकू की तरह चलाकर) क़त्ल नहीं, दिमाग़ का ऑपरेशन करके आई हूँ।

अमला : (झूठमूठ हैरानी से) क्या ? दिमाग़ी रोगों के डॉक्टर के दिमाग़ का ऑपरेशन ?

[विमला किताबें और कापियाँ उठाये हुए बाहर से आती है।]

सरला · बड़ा ऊँचा दिमाग़ लिये फिरता था वह डॉक्टर आहूजा। आज लगातार बार बार हराकर उसका दिमाग़ ठिकाने लगा दिया।

अमला (ताली बजाकर) शाबाश !

विमला : (पास आकर हँसकर) तो फिर आज तो उसने शादी के लिए नहीं कहा होगा ?

सरला : विमला, आज उसने कहा ही नहीं, घुटने टेककर विनती भी की। तुम नहीं जानतीं, वह कितना ढीठ है। बार बार हारा, लेकिन कोई असर नहीं हुआ। टेनिस कोर्ट से चली, तो साथ हो लिया, लेकिन मैंने उसे मुँह नहीं लगाया।

विमला : (शरारत से) मुँह नहीं लगाया ?

[तभी कमला पार्वती के साथ सीढ़ियों से उतरती है। पार्वती रसोई में चली जाती है।]

सरला : अरी, साहित्य की प्रोफ़ैसर होकर भी मुहावरा नहीं समझती ? ख़ैर,

ज्यों ही डॉक्टर आहूजा ने इक्कीसवीं बार शादी का प्रोपोज़ल पेश किया, मैंने अकड़कर कहा—"हारे हुए मर्द से मैं शादी नहीं करने की।"

कमला : नहीं सरला, डॉक्टर आहूजा का शादी का प्रस्ताव मान लो।

तीनों : (चौंककर) ओह, जीजी, तुम ··?

कमला : आया से रिपोर्ट मिली है कि अभी-अभी तुम तीनों को लेकर दादी माँ ने पिताजी को बुरी तरह डाँटा और कहा कि तीन-तीन जवान लड़कियों को घर मे कुँआरी बैठाये रखना बहुत बड़ा पाप है और अल्टीमेटम दिया कि वे महीने-दो-महीने में अपनी पसन्द के वर-घर ढूँढकर तुम तीनों की शादियाँ कर देंगी।

विमला : (हैरान-परेशान-सी) बिना हमारी मर्जी के शादी ?

सरला : (हैरान-परेशान-सी) बिना हमारी इच्छा के शादी ?

अमला : (हैरान-परेशान-सी) बिना हमारी पसंद के शादी ?

कमला : हाँ, हाँ, हाँ ! दादी माँ विवाह-योग्य लड़कियों की पसंद-नापसंद और इच्छा-अनिच्छा मे विश्वास नहीं रखती।

विमला . लेकिन जीजी, तुमने और पिताजी ने जीवन में कुछ करने, कुछ बनने की जो हमे शिक्षा दी थी···।

कमला : वह सब भूल जाओ। पिताजी अब वही करेंगे, जो माँ कहेंगी। पिताजी की मातृभक्ति तो तुम सब दादी माँ की बीमारी के दौरान देख चुकी हो—और कल से भी देख रही हो। ऐसा मातृभक्त पुत्र क्या माँ की आज्ञा की अवहेलना कर सकता है ?

सरला : लेकिन जीजी, तुम तो···।

कमला : नहीं सरला, अब इस घर में मेरी नहीं, दादी माँ की ही चलेगी। इसलिए तुम तीनों को मेरी सलाह है कि इससे पहले कि दादी माँ अपनी पसन्द के ऊल-जलूल लड़के चुनकर तुम्हें धर्म-धक्का दे दें, तुम अपने-अपने प्रेमी के गले में वरमाला डाल दो।

सरला : नहीं, मैं शादी से पहले एफ़० आर० सी० एस० की डिग्री के लिए ज़रूर इंग्लैण्ड जाऊँगी।

अमला : और मैं भरत-नाट्यम सीखने के लिए ज़रूर मद्रास जाऊँगी।

रूपचन्द . हाँ, माँ, जोड़ूराम बहुत अच्छा खाना बनाता है।

दादी . चल देखूं, आज वह क्या पका रहा है ?

[रूपचन्द दादी माँ को सहारा देकर बाई ओर के दरवाजे से रसोई मे ले जाता है। अमला कोई गीत गुनगुनाती साज-सिंगार किये सीढियों से उतरती है। तभी बाहर वाले दरवाजे से सीटी बजाती हुई, रैकेट घुमाती हुई, फुदकती हुई सरला आती है। उसने सफेद स्कर्ट, सफ़ेद ब्लाऊज, सफेद शू और सफेद जुराबें पहन रखी हैं।]

सरला . (ठिककर, अमला को सिर से पाँव तक निहारकर) जालिम, आज तो तुम कत्ल किये डाल रही हो !

अमला . (हँसकर) कत्ल तो तुम करके आई हो डाक्टर कैलाश आहूजा को।

सरला : (रैकेट को चाकू की तरह चलाकर) कत्ल नही, दिमाग का आँपरेशन करके आई हूँ।

अमला : (झूठमूठ हैरानी से) क्या ? दिमागी रोगों के डॉक्टर के दिमाग का ऑपरेशन ?

[विमला किताबें और कापियाँ उठाये हुए बाहर से आती है।]

सरला : बड़ा ऊँचा दिमाग लिये फिरता था वह डॉक्टर आहूजा। आज लगातार चार बार हराकर उसका दिमाग ठिकाने लगा दिया।

अमला (ताली बजाकर) शाबाश !

विमला . (पास आकर हँसकर) तो फिर आज तो उसने शादी के लिए नहीं कहा होगा ?

सरला : विमला, आज उसने कहा ही नहीं, घुटने टेककर विनती भी की। तुम नही जानती, वह कितना ढीठ है। चार बार हारा, लेकिन कोई असर नहीं हुआ। टेनिस कोर्ट से चली, तो साथ हो लिया, लेकिन मैंने उसे मुँह नही लगाया।

विमला : (शरारत से) मुँह नहीं लगाया ?

[तभी कमला पार्वती के साथ सीढियों से उतरती है। पार्वती रसोई मे चली जाती है।]

सरला : अरी, साहित्य की प्रोफ़ेसर होकर भी मुहावरा नही समझती ? खैर,

ज्यों ही डॉक्टर ग्राहूजा ने इक्कीसवीं बार शादी का प्रोपोज़ल पेश किया, मैंने भ्रकड़कर कहा—"हारे हुए मर्द से मैं शादी नहीं करने की।"

कमला : नहीं सरला, डॉक्टर ग्राहूजा का शादी का प्रस्ताव मान लो।

तीनों : (चौंककर) ओह, जीजी, तुम··?

कमला : श्राया से रिपोर्ट मिली है कि अभी-अभी तुम तीनों को लेकर दादी माँ ने पिताजी को बुरी तरह डाँटा और कहा कि तीन-तीन जवान लड़कियों को घर में कुँआरी बैठाये रखना बहुत बड़ा पाप है और अल्टीमेटम दिया कि वे महीने-दो-महीने में अपनी पसन्द के वर-घर ढूँढ़कर तुम तीनों की शादियाँ कर देंगी।

विमला : (हैरान-परेशान-सी) बिना हमारी मर्ज़ी के शादी ?

सरला : (हैरान-परेशान-सी) बिना हमारी इच्छा के शादी ?

अमला : (हैरान-परेशान-सी) बिना हमारी पसंद के शादी ?

कमला : हाँ, हाँ, हाँ! दादी माँ विवाह-योग्य लड़कियों की पसंद-नापसंद और इच्छा-अनिच्छा में विश्वास नहीं रखतीं।

विमला : लेकिन जीजी, तुमने और पिताजी ने जीवन में कुछ करने, कुछ बनने की जो हमें शिक्षा दी थी···।

कमला : वह सब भूल जाओ। पिताजी अब वही करेंगे, जो माँ कहेंगी। पिताजी की मातृभक्ति तो तुम सब दादी माँ की बीमारी के दौरान देख चुकी हो—और कल से भी देख रही हो। ऐसा मातृभक्त पुत्र क्या माँ की आज्ञा की अवहेलना कर सकता है ?

सरला : लेकिन जीजी, तुम तो···।

कमला : नहीं सरला, अब इस घर में मेरी नहीं, दादी माँ की ही चलेगी। इसलिए तुम तीनों को मेरी सलाह है कि इससे पहले कि दादी माँ अपनी पसन्द के ऊल-जलूल लड़के चुनकर तुम्हें धर्म-धक्का दे दें, तुम अपने-अपने प्रेमी के गले में वरमाला डाल दो।

सरला : नहीं, मैं शादी से पहले एफ० आर० सी० एस० की डिग्री के लिए ज़रूर इंग्लैण्ड जाऊँगी।

अमला : और मैं भरत-नाट्यम सीखने के लिए ज़रूर मद्रास जाऊँगी।

कमला : अगर दादी माँ ने न जाने दिया, तो···?

दोनों : तो ?

कमला . खैर, मैं समझती हूँ, शादी के मामले में विमला को जल्दी करनी चाहिए।

विमला : क्यों ?

कमला : क्योंकि तीनों में तुम बड़ी हो और दादी माँ सबसे पहले तुम्हारे ही हाथ पीले करना चाहेंगी।

विमला लेकिन जीजी, मैंने तो अभी कॉलिज से आते हुए रमेश से कह दिया है कि मैं पी-एच० डी० करने के बाद ही उससे शादी करूँगी।

कमला . अपना फैसला फौरन बदल डालो।

विमला (घबराकर) कैसे बदल डालूं ? रमेश जल्दी शादी करने के लिए बेताब था। मैंने अभी शादी न करने का फैसला सुनाया, तो वह नाराज हो गया। गुस्से-से यह कहकर चला गया कि वह मुझसे कभी बात नहीं करेगा।

कमला : (पर्स में चाबियाँ निकालकर) यह लो कार की चाबियाँ। इससे पहले कि रमेश किसी और लड़की से बात करे, तुम फौरन जाकर उसे मना लो। रमेश जैसा पति तुम्हें कभी नहीं मिलेगा।

सरला . जीजी ठीक कहती हैं, विमला।

विमला : तो फिर मैं जाती हूँ रमेश के पास।

[कार की चाबियाँ लेकर विमला जल्दी-से बाहर चली जाती है।]

अमला : (ड्राइंग रूम की घड़ी देखकर) जीजी, सात बजने को हैं और टैली-विज़न सैट ठीक होकर नहीं आया।

कमला · उधर दफ्तर में मोहन और तुम्हारे जीजा मिकैनिक से ठीक करवा रहे हैं। उन्हें पता है कि सात बजे तुम्हारा प्रोग्राम है। ओह, शाम हो गई। अभी दादी माँ खाना माँगेंगी। ज़रा देखूँ, रसोई में वह मुआ तोड़ूराम क्या कर रहा है। (रसोई में जाती है।)

सरला : (हँसकर) प्लेटें तोड रहा होगा। अरे हाँ, अमला, बातों-बातों में मैंने पूछा ही नहीं कि आज तुम्हारे म्यूज़िक-प्रोग्राम का रिकार्डिंग कैसा

हुआ ?

अमला : बहुत बढ़िया हुआ। अभी देख लेना न सात से सवा सात तक।

सरला : तुमने कौन-सा गाना गाया ?

अमला : वही—

हे प्राण, तुम्हारा इन्तज़ार !

चरणों पर अर्पित होने को युग-युग का संचित विकल प्यार !

सरला : (शरारत से) कोमल जी का लिखा गीत ?

अमला : हाँ ! (विभोर-सी) मेरी नज़र में तो उनके सिवा इस दुनिया में और कोई कवि नहीं।

सरला : (छेड़कर) अरी, कहो, कोई पति नहीं। (एकाएक) ओह, अब समझ में आया राज़ तुम्हारे इस बनाव-सिंगार का। तुम्हें विश्वास है कि आज टी० वी० पर तुम्हारा नृत्य-संगीत का प्रोग्राम देखकर कोमल जी भागे-भागे बधाई देने आएँगे।

अमला : (हँसकर) सरला, लगता है, तुम डाक्टर ही नहीं, ज्योतिषी भी हो।

[तभी कमला जल्दी-से रसोई से आती है—घबराई हुई-सी।]

कमला : सरला !

सरला : क्या बात है, जीजी ?

कमला : रसोई में तो दादी माँ पहुँची हुई हैं। जोड़ राम और माया को खाना बनाना सिखाकर वे पिताजी के साथ यहाँ आने ही वाली हैं।

सरला : तो ?

कमला : तुम जल्दी-से कपड़े बदल आओ।

अमला : (हँसकर) नहीं तो तुम्हें इस वेश में देखकर दादी माँ फिर पूछेंगी कि यह लड़का है या लड़की ?

सरला : (खीझकर) क्या मुसीबत है ! इस घर में अब कपड़े पहनने की भी आज़ादी नहीं रही। (अकड़कर) नहीं जीजी, मैं इसी लिबास में दादी माँ के सामने…।

कमला : (कड़ाई से) सरला, ज़िद न करो। दादी माँ पहले ही पिताजी के काफी कान भर रही हैं। मैं नहीं चाहती कि उन्हें यह फिर कहने का मौका मिले कि मैंने अपनी छोटी बहनों को अक्ल नहीं सिखाई। जाओ

साड़ी पहन आओ।

[सरला बड़बड़ करती सीढ़ियों से ऊपर चली जाती है। तभी रसोई से निकलकर रूपचन्द आता है।]

रूपचन्द : (आते हुए) कमला, माँ अभी खाना खाना चाहती हैं। साढ़े सात बज रहे हैं। तुम सब भी डाइनिंग रूम में आकर साथ ही खाना खा लो।

कमला : पिताजी, साढ़े सात कहाँ, अभी तो सात भी नहीं बजे। देखिए ड्राइंग-रूम की घड़ी।

[रूपचन्द पहले ड्राइंग रूम की घड़ी की ओर देखता है और फिर अपनी कलाई की घड़ी की ओर।]

रूपचन्द : (विमूढ़-सा) पता नहीं, कौन-सी घड़ी ठीक है? मेरी घड़ी में तो···

कमला : (एकाएक अपनी कलाई की घड़ी देखकर) पिताजी, आपकी घड़ी ठीक है। मैं अब तक ड्राइंग रूम की घड़ी को ही देखती रही, अपनी कलाई की घड़ी पर मेरी नज़र ही नहीं गई। हाँ, साढ़े सात ही बजने वाले हैं।

अमला : (घबराकर) साढ़े सात? तो इसका मतलब है कि मेरा टी० वी० प्रोग्राम टैलीकास्ट हो चुका है। ओह! इस घड़ी के कारण···(दुखी होकर सोफे पर बैठ जाती है।)

रूपचन्द : अरे हाँ, याद आया। अमला तुम आज दूरदर्शन-केन्द्र पर अपना वह प्रोग्राम रिकार्ड कराने गई थी। कब था उसका प्रसारण?

अमला : (दुख से) सात से सवा सात तक।

रूपचन्द : वह तो हो चुका। पहले पता होता तो वह प्रोग्राम मैं माँ को दिखाता। वे खुश होतीं।

कमला : पिताजी, क्या बताऊँ, उस प्रोग्राम की खातिर ही मैंने टैलीविज़न सैट को ठीक कराने के लिए एक मिकैनिक को विशेष रूप से अपने दफ्तर में बुलाया था। लेकिन इस घड़ी ने धोखा दिया।

बब्बू : (बाहर से आते हुए) मम्मी, मम्मी, हमारा टैलीविजन सैट ठीक हो गया। अंकल और डैडी ला रहे हैं।

[कृष्णगोपाल और ललितमोहन बाहर के दरवाज़े से सैट उठाकर अन्दर लाते हैं।]

अमला : (गुस्से से) अब सैंट लाने का क्या फायदा ? फेंक दो इसे। जिस प्रोग्राम के लिए इसे ठीक कराया था, वह तो हो चुका।

कमला : लेकिन मैं हैरान हूँ कि ड्राइंग रूम की यह घड़ी लंच के समय तक तो ठीक थी, बाद में यह आधा घण्टा कैसे पीछे हो गयी ?

कृष्ण : कमाल है, इस घर की हर चीज़ अब पीछे की ओर जा रही है !

बब्बू घड़ी कैसे पीछे हो गई ? इसे तो जाते-जाते मोहन अंकल ने ठीक किया था।

सब : क्या ?

मोहन : नहीं, नहीं, मैंने तो·····।

कमला : (गुस्से से) सुन लिया, पिताजी ? मैं पहले ही जानती थी कि यह शरारत इस मोहन ने ही की है। यह नहीं चाहता था कि मैं सैंट के लिए जल्दी मचाऊँ और दादी माँ को अमला का प्रोग्राम दिखाऊँ।

मोहन : जीजी, कसम है, जो मैंने ऐसी कोई शरारत की हो।

कमला : मैं सब समझती हूँ, श्रीमान् चाणक्य जी !

बब्बू : डैडी, टी० वी० लगाइये न।

रूपचन्द : नहीं, कृष्ण, अभी रहने दो। सब डाइनिंग रूम में चलकर खाना खाओ। माँ अन्दर इन्तज़ार कर रही हैं।

कमला : बब्बू, तुम आया के पास रसोई में जाओ।

[बब्बू रसोई में जाता है। तभी दरवाज़े की घण्टी बजती है।]

रूपचन्द : मैं देखता हूँ कौन आया है ?

[रूपचन्द बाहर वाले दरवाज़े की ओर जाता है। सबकी आँखें उस ओर उठ जाती हैं। अमला के चेहरे पर विशेष उत्सुकता दिखाई देती है। तभी रूपचन्द कवि कोमल को लेकर अन्दर आता है। कवि कोमल वाकई कोमल सुकुमार है। कंधों तक लम्बे घुंघराले बाल लहरा रहे हैं। दाढ़ी-मूँछ-विहीन चेहरे पर नारी-सौन्दर्य की झलक है, जिसे काजल की रेखा ने द्विगुणित कर दिया है। कवि जी ने लम्बे रेशमी कुर्ते के नीचे धोती पहनी हुई है।]

रूपचन्द : (आते हुए) देखो अमला, कवि कोमल जी आये हैं।

अमला (जल्दी-से आगे बढ़कर) नमस्कार ! आप अचानक · !

[तभी सरला साड़ी पहने हुए सीढ़ियों से उतरती है ।]

कोमल (विभोर-सा) वाह, अमला जी, वाह ! अभी दूरदर्शन पर आपका नृत्य-संगीत-कार्यक्रम देखकर हम इतने गद्गद् हुए, भाव-विभोर हुए कि तत्काल तिपहिया वाहन लेकर आपको आपके दूरदर्शन कार्यक्रम की सफलता पर बधाई देने के लिए तथा आपके प्रति आभार प्रकट करने के लिए आपके द्वार पर प्रस्तुत हो गए।

अमला (हर्ष-विभोर-सी) मैं धन्य हुई ! (सोफे की ओर इशारा करते हुए) आइये, विराजिये । जीजी, इनके लिए चाय···।

रूपचन्द नहीं, नहीं, कोमल जी खाना खाकर जाएँगे ।

कोमल · (और भी गद्गद् होकर) आहा, नृत्य-कला और संगीत का दिव्य मिलन ! अमला जी, हम आभारी हैं कि आपने अपनी अनुपम कला एवं मधुर वाणी के जादू से हमारे गीत को सजीव ही नहीं, अमर कर दिया । हम तो यह भी कहेंगे कि एक सुदर्शना ने दूरदर्शन को शुभ-दर्शन बना दिया ।

दादी माँ (रसोई के दरवाजे पर आकर) अरे, भगवान् के सुदर्शन-चक्र की क्या बात हो रही है ?

[सब चौंकते हैं । रूपचन्द और मोहन दादी माँ की ओर लपकते हैं ।]

रूपचन्द . (माँ की ओर लपककर) माँ, तुम्हें इस तरह अपने-आप उठकर नहीं आना चाहिए था ।

[रूपचन्द और मोहन सहारा देते हैं और दादी माँ को लाकर सोफ़े पर बिठाते हैं ।]

मोहन . नानी, मुझे पुकार लेती, तो···।

दादी . रसोई में खाने की मेज पर बैठी मैं तुम लोगों की राह देख रही थी । जब भगवान् के सुदर्शन-चक्र के शुभ दर्शन की बात सुनी, तो··· (लड़कियाँ हँसती हैं ।) अरी लड़कियो, तुम हँस क्यों रही हो ? बड़ों का कोई लिहाज़ ही नहीं ? अरे, वह सुदर्शन-चक्र की क्या बात थी ?

सरला : (हँसते हुए) दादी माँ, सुदर्शन-चक्र नहीं, दूरदर्शन, यानी टी० वी०...।

दादी : (चौंक कर) क्या कहा टी० वी० ? तपेदिक ? (सब हँसते हैं) अरी सरला, किसी को अगर यह बुरा रोग है, तो हँस क्यों रही है ? अच्छी डाक्टर है तू !

रूपचन्द : माँ, टी० वी० का मतलब है टैलीविजन। मैंने तुम्हें बताया था न कि हमारे घर में वह बक्सा भी है, जिसमें बाइस्कोप जैसी तस्वीरें दिखाई देती हैं...।

कोमल : अमला जी, आज प्रातः दूरदर्शन-केन्द्र पर आपने अपनी इसी दादी के सम्बन्ध में बताया था, जो २५ वर्ष की निद्रा से जागी हैं ?

दादी : अरे कमला, यह तेरी सहेली क्या कहे है ?

लड़कियाँ : (चौंककर) सहेली ?

रूपचन्द : माँ, यह कोमल जी हैं, बड़े प्रसिद्ध कवि और...।

दादी : (चकित-सी) तो क्या यह कोई मर्द है ?

[सरला और मोहन हँसते है, कमला और कृष्णगोपाल झुँझलाते हैं, कोमल जी लज्जित और अमला परेशान नजर आती है।]

मोहन : (हँसकर) हाँ, नानी, यह बिल्कुल मर्द है।

दादी : हाय दैया, मर्द होकर औरतों की तरह बाल बढ़ा रखे हैं। बाल क्यों ? इसके तो नैन-नक्श भी औरतों जैसे है। न दाढ़ी, न मूंछ। ओह, कैसा जमाना आ गया है। औरतें मर्द बनी हुई हैं और मर्द औरतें।

[सिवाय अमला और कोमल के सब हँसते हैं।]

मोहन : (हँसते हुए) नानी माँ, जब आप सो रही थी, तो सारी दुनिया में महिला-वर्ष मनाया गया था। तभी से औरतों का दर्जा बहुत ऊँचा देखकर मर्द औरत बनने की कोशिश में हैं। (सब हँसते हैं।)

अमला : (बिगड़कर) भैया, तुम भी...?

कोमल : (एकाएक उठकर गुस्से से) हम जा रहे हैं। हम एक क्षण भी नहीं रुक सकते।

रूपचन्द : (रोककर) कोमल जी, मेरी माँ की बात का बुरा न मानें। ये जरा

पुराने जमाने की हैं ।

दादी : (बिगड़कर) अरे चन्दू, क्या कह रहा है ? मैं पुराने जमाने की हूँ ? तो यह जनानड़ा…?

अमला : (चिल्लाकर) दादी माँ…!

कोमल : (गुस्से से)हमारा यहाँ घोर अपमान हुआ है । अमला, आज से हमारा-तुम्हारा चिरतन सम्बन्ध समाप्त । हम ऐसे असभ्य तथा संस्कारहीन गृह में कभी पुन पदार्पण नहीं करेंगे ।

[कहकर कवि कोमल तेजी-से बाहर जाता है । उसके पीछे रूपचन्द, कृष्णगोपाल और अमला "सुनिये, तो कोमल जी" कहते हुए भागते हैं ।)

दादी (हैरान-सी) अरे मोहन, यह जनानड़ा क्या बोली बोले था और … और…यह चन्दू, किसन और अमला उसे मनाने क्यों गये हैं ?

मोहन : नानी, आपने घर आये मेहमान का अपमान करके सब गड़बड़ कर दिया ।

दादी क्या गडबड कर दिया ? (मोहन कमला की भृकुटी देखकर चुप हो जाता है) अरे, बोलता क्यों नहीं ? अरी कमला, तू ही बता, मैंने क्या गड़बड़ कर दिया ? उस मुए कवि की शक्ल देखकर मैंने जनानड़ा कह दिया, तो क्या बुरा किया ?

कमला · दादी माँ, कोमल जी बहुत बड़े कवि हैं । इन्हीं की मदद से हमारी अमला नृत्य और सगीत की इतनी बडी कलाकार बनी है । पिताजी सोच रहे थे कि कोमल जी से अमला की शादी कर दी जाय ।

दादी . (बिगड़ कर) उस जनानड़े से मेरी पोती की शादी ? हर्गिज नहीं ।

[तभी अमला रोती हुई आती है और तेजी-से सीढ़ियों पर चढ जाती है । उसके बाद रूपचन्द और कृष्णगोपाल मुँह लटकाये हुए आते हैं ।]

कमला : सरला, किशू, ऊपर जाकर अमला को सभालो । निराश होकर कुछ कर न बैठे । (दोनों सीढ़ियों से ऊपर जाते हैं ।)

दादी : क्यों रे चन्दू, तू उस जनानड़े से अपनी अमला की शादी करने की सोच रहा था ?

रूपचन्द : (उदास-सा) हाँ, माँ। दरअसल दोनों का आपस में इतना प्यार हो गया था कि······।

दादी : अरे, क्या कह रहा है? शादी से पहले ही तेरी यह अमला उस पराये मर्द से प्यार का खेल खेलने लगी थी। कलजुग, घोर कलजुग! सबकी आँखों के सामने यह पाप-कर्म होता रहा, खानदान की इज्जत मिट्टी में मिलती रही और बाप अंधा बना रहा। (एकाएक उठकर कड़ाई से) कान खोल कर सुन ले, चन्दू। अब इस घर में यह आजादी नहीं चलेगी। ये तीनों लड़कियाँ जवान हैं, ब्याह-जोग हैं। आज से न घर में कोई पराया मर्द आयेगा और न ही कोई लड़की बाहर जाकर······।

[दादी माँ के शोर के कारण अमला, सरला और कृष्णगोपाल ऊपर से उतरकर सीढ़ियों में खड़े हो जाते हैं।]

रूपचन्द : लेकिन माँ, मेरी लड़कियाँ पढ़ी-लिखी हैं, वे अपना भला-बुरा समझती हैं।

दादी : अरे, चुप कर। पढ़ाई ने ही तेरा घर घाला है। खैर, अब इस घर को मैं सभालूँगी और महीने-दो-महीने के बीच वर-घर ढूँढ कर तीनों लड़कियों के हाथ पीले कर दूँगी।

[तभी बाहर से विमला आती है।]

कमला : (लपककर) विमला, सब ठीक हो गया न?

विमला : हां, जीजी। (कमला के कान में खुसर-फुसर करती है।)

दादी : अरे, यह विमला कहीं बाहर से आई है? हाँ, याद आया। शाम से इसे मैंने देखा ही नहीं था। अरी, अपनी बहन के कान में क्या खुसर-फुसर कर रही है? मुझे बता तू कहाँ से आई है?

कमला : दादी माँ, मैं बताती हूं। विमला ने अपना वर-घर खुद ढूँढ लिया है और शादी का दिन-मुहूर्त भी तय कर लिया है।

[सरला और अमला लपककर विमला को गले लगाती हैं।]

दादी : (जैसे दुःख से चिल्लाकर) क्या? इस लड़की ने खुद ही अपना वर-घर ढूँढकर शादी का दिन-मुहूर्त तय कर लिया? यह मैं क्या सुन रही हूँ। हे भगवान्, मुझे फिर सुना दे। कलजुग में भी स्वयंवर होने

पुराने जमाने की हैं।

दादी . (बिगड़कर) अरे चन्दू, क्या कह रहा है? मैं पुराने जमाने की हूँ? तो यह जनानड़ा…?

अमला : (चिल्लाकर) दादी माँ…!

कोमल (गुस्से से) हमारा यहाँ घोर अपमान हुआ है। अमला, आज से हमारा-तुम्हारा चिरतन सम्बन्ध समाप्त। हम ऐसे असभ्य तथा संस्कारहीन गृह में कभी पुन पदार्पण नहीं करेंगे।

[कहकर कवि कोमल तेजी-से बाहर जाता है। उसके पीछे रूपचन्द, कृष्णगोपाल और अमला "सुनिये, तो कोमल जी" कहते हुए भागते हैं।)

दादी · (हैरान-सी) अरे मोहन, यह जनानडा क्या बोली बोले था और… और …यह चन्दू, किसन और अमला उसे मनाने क्यों गये हैं?

मोहन : नानी, आपने घर आये मेहमान का अपमान करके सब गड़बड़ कर दिया।

दादी . क्या गड़बड़ कर दिया? (मोहन कमला की भृकुटी देखकर चुप हो जाता है) अरे, बोलता क्यो नहीं? अरी कमला, तू ही बता, मैंने क्या गड़बड़ कर दिया? उस मुए कवि की शक्ल देखकर मैंने जनानडा कह दिया, तो क्या बुरा किया?

कमला · दादी माँ, कोमल जी बहुत बड़े कवि हैं। इन्हीं की मदद से हमारी अमला नृत्य और संगीत की इतनी बडी कलाकार बनी है। पिताजी सोच रहे थे कि कोमल जी से अमला की शादी कर दी जाय।

दादी · (बिगड़ कर) उस जनानडे से मेरी पोती की शादी? हर्गिज नहीं।

[तभी अमला रोती हुई आती है और तेजी-से सीढियों पर चढ जाती है। उसके बाद रूपचन्द और कृष्णगोपाल मुँह लटकाये हुए आते हैं।]

कमला : सरला, किशू, ऊपर जाकर अमला को संभालो। निराश होकर कुछ कर न बैठे। (दोनों सीढ़ियों से ऊपर जाते हैं।)

दादी · क्यो रे चन्दू, तू उस जनानडे से अपनी अमला की शादी करने की सोच रहा था?

रूपचन्द : (उदास-सा) हाँ, माँ। दरअसल दोनों का आपस में इतना प्यार हो गया था कि...... ।

दादी : अरे, क्या कह रहा है? शादी से पहले ही तेरी यह अमला उस पराये मर्द से प्यार का खेल खेलने लगी थी। कलजुग, घोर कलजुग! सबकी आँखों के सामने यह पाप-कर्म होता रहा, खानदान की इज्जत मिट्टी में मिलती रही और बाप अंधा बना रहा। (एकाएक उठकर कड़ाई से) कान खोल कर सुन ले, चन्दू। अब इस घर में यह आज़ादी नहीं चलेगी। ये तीनों लड़कियाँ जवान हैं, ब्याह-जोग हैं। आज से न घर में कोई पराया मर्द आयेगा और न ही कोई लड़की बाहर जाकर...... ।

[दादी माँ के शोर के कारण अमला, सरला और कृष्णगोपाल ऊपर से उतरकर सीढ़ियों में खड़े हो जाते हैं।]

रूपचन्द : लेकिन माँ, मेरी लड़कियाँ पढ़ी-लिखी हैं, वे अपना भला-बुरा समझती हैं।

दादी : अरे, चुप कर। पढ़ाई ने ही तेरा घर घाला है। खैर, अब इस घर को मैं संभालूँगी और महीने-दो-महीने के बीच वर-घर ढूंढ कर तीनों लड़कियों के हाथ पीले कर दूंगी।

[तभी बाहर से विमला आती है।]

कमला : (लपककर) विमला, सब ठीक हो गया न?

विमला : हां, जीजी। (कमला के कान में खुसर-फुसर करती है।)

दादी : अरे, यह विमला कहीं बाहर से आई है? हाँ, याद आया। शाम से इसे मैंने देखा ही नहीं था। अरी, अपनी बहन के कान में क्या खुसर-फुसर कर रही है? मुझे बता तू कहाँ से आई है?

कमला : दादी माँ, मैं बताती हूं। विमला ने अपना वर-घर खुद ढूंढ लिया है और शादी का दिन-मुहूर्त भी तय कर लिया है।

[सरला और अमला लपककर विमला को गले लगाती है।]

दादी : (जैसे दुःख से चिल्लाकर) क्या? इस लड़की ने खुद ही अपना वर-घर ढूंढकर शादी का दिन-मुहूर्त तय कर लिया? यह मैं क्या सुन रही हूँ। हे भगवान्, मुझे फिर सुला दे। कलजुग में भी स्वयंवर होने

लगे। मुझ से यह सब देखा नहीं जाता।

[शोर सुनकर रसोई के दरवाजे पर पार्वती, बब्बू और जोड़ूराम आ जाते हैं। जोड़ूराम के हाथ में बहुत-सी प्लेटें हैं।]

रूपचन्द : माँ, तुम यह क्या कह रही हो। तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि...।

दादी : (बात अनसुनी करके) अरी विमला, बता, वह लड़का कौन है, किस कुल-गोत्र का है, क्या करता है?

कमला . दादी माँ, मैं बताती हूँ। लड़के का नाम है रमेश, बहुत बड़ा सरकारी अफसर है, हम वैश्य हैं और वह ब्राह्मण है।

दादी : क्या यह लड़की जात से बाहर शादी कर रही है? हाय मैं मरी!

[निढाल होकर सोफे पर लुढ़क जाती है।]

रूपचन्द : (घबराकर) माँ!

मोहन . अरे, नानी तो बेहोश हो गयी!

बब्बू · (आगे बढ़कर) अंकल जल्दी-से भूचाल को फिर बुलाओ।

[सब हँसते हैं। तभी जोड़ूराम के हाथ से प्लेटें गिरने से जोर की आवाज होती है। दादी माँ जल्दी-से उठकर हैरान होती हैं।]

रूपचन्द . (खुश होकर) माँ!

कमला . (डाँटकर) अरे, जोड़ूराम, आज फिर प्लेटें तोड़ी।

जोड़ू : (बात तोड़ते हुए) बीबी जी, आज तो मुझे इनाम मिलना चाहिए। दादी माँ फिर सो गई थी। मैंने प्लेटें गिराकर उन्हें जगा दिया।

मोहन : अरे, तू तो चीनी के बर्तनों की दुकान में घुसा हुआ साँड है। तुझे तो काजी-हाउस भेजना चाहिए।

कमला . अरे, देखता क्या है? उठा ये टुकड़े।

[जोड़ूराम बैठकर टूटी प्लेटों के टुकड़े उठाने लगता है।]

दादी : कमला, क्यों डाँट रही हो इसे? बर्तन टूटना भी तो कभी-कभी शुभ होता है।

रूपचन्द : (माँ के पाँव पकड़कर) तो माँ, विमला के विवाह के लिए यह शुभ शकुन हुआ न? हाँ, कह दो न!

दादी : तू जिद करे है, तो मैं पहले खुद जाकर लड़के का घर-बार देखूँगी,

उसके माँ-बाप से बात करूँगी और फिर सोचूँगी कि······।

रूपचन्द : (घबराकर) क्या ?

मोहन : कि शहनाई बजे या न बजे ।

दादी : (मोहन के सिर पर हाथ रखकर प्यार से) मैं सदके जाऊँ, यह मोहन मेरी बात समझे है।

[मोहन मुस्कराता है। लड़कियाँ उसे गुस्से और नफ़रत से देखती है।]

पर्दा गिरता है।

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—कोठी का ड्राइंग-रूम।
समय—सायंकाल।

[ड्राइंग-रूम खाली है। जोड़ूराम बाहर के पोर्टिको वाले दरवाज़े में खड़ा एक हाथ से सिर के बाल तोड़ रहा है और दूसरे हाथ से उंगलियों पर कुछ गिन रहा है। माली बाहर से आकर उसे कुछ देर गौर से देखता है।]

माली : अरे ओ, तोड़ूराम! सिर के ज्यादा बाल तोड़ोगे तो गंजे हो जाओगे।

जोड़ू : (चौंककर, डांटकर) माली के बच्चे, तुझे कई बार कहा है कि मेरा नाम न बिगाड़ा कर। मैं तोड़ूराम नहीं, जोड़ूराम हूं, जोड़ूराम। (फिर उंगलियों पर गिनता है और झुंझलाता है।) ओह, सारा हिसाब गड़बड़ कर दिया।

माली : हिसाब? किस निन्नानवे के फेर में पड़े हो? (बात करते हुए दोनों ड्राइंग-रूम में आ जाते हैं।)

जोड़ू : घासीराम, तू तो जानता ही है कि मैं जो प्लेटें तोड़ता हूं, उनकी कीमत घर की मालकिन कमलारानी मेरी तनखाह में से काट लेती हैं। इस तरह मुझे हर महीने डेढ़ सौ रुपये में से सिर्फ चालीस-पचास रुपये ही मिलते हैं।

माली : लेकिन, जोड़ूराम, अब घर की मालकिन कमला रानी नहीं, दादी माँ हैं।

जोड़ू : घर की मालकिन दादी माँ? (खुश होकर, सिर का एक बाल

तोड़कर) अरे, राजनीति का यह दाँव मुझे पहले क्यों नहीं सूझा ? अगर मैं कमलारानी की पार्टी छोड़कर दादी माँ की पार्टी में शामिल हो जाऊँ, तो मेरे सारे जुर्म माफ़ हो जाएँगे।

माली : (हँसकर) हाँ, हाँ, बन जा दलबदलूराम, भगवान् भली करेगा। (ज़रा रुककर) और सुनो, आज शाम के छह बजे ही इस तरह खाली-खाली क्यों बैठे हो ?

जोड़ू : जब सारी कोठी ही खाली है, तो मैं क्यों न खाली बैठूं ?

माली : अरे हाँ, रधिया बता रही थी कि दादी माँ होश में आने के बाद आज पहली बार कोठी से बाहर गई हैं—इस नये जमाने की दिल्ली को देखने के लिए।

जोड़ू : दिल्ली को ही नहीं, विमला बीबी के वर-घर को भी देखने गई हैं। उनके साथ गये हैं बड़े मालिक और मोहन बाबू। माया बच्चू को रसोई में खिला-पिला रही है। छोटी मालकिन और छोटे मालिक अपनी कम्पनी के दफ्तर में काम कर रहे हैं। सरला बीबी अस्पताल मे मरीज़ देख रही हैं। विमला बीबी ऊपर अपने कमरे में किताब पढ़ रही हैं और छोटी अमला बीबी ऊपर कोपभवन मे अटवाटी-खटवाटी लिये पड़ी हैं।

माली : अटवाटी-खटवाटी लिये क्यों पड़ी हैं ?

जोड़ू : दादी माँ ने उस जनानड़े कवि से उसका मिलना-जुलना बन्द जो कर दिया है।

माली : अरे हाँ, याद आया। क्या यह सच है कि दादी माँ ने दो महीने के अन्दर-अन्दर अपनी सब पोतियों की शादी करने का फ़ैसला किया है ?

जोड़ू : हाँ, किया तो है।

माली : अरे, तो शादियों की इसी धकापेल में तुम भी माया से शादी कर लो न।

जोड़ू : (घबराकर) क्या बकते हो, माली ? (आँख दबाकर) माया तो···

[तभी बाहर के दरवाज़े से रधिया गुनगुनाती हुई आ जाती है।]

रधिया : (आते हुए) बापू, बापू, अम्मा बुला रही है।

माली : क्या बात है, रधिया ?

रधिया : उसी से जाकर पूछ लो।

[माली बाहर जाता है। उसके पीछे-पीछे रधिया भी जाने लगती है।]

जोड़ू : सुनो, रधिया।

रधिया : (पलटकर, हँसकर) कहो, जोड़ूराम ?

जोड़ू : हाय, जब तुम गाती हो, तो तुम्हारे मुँह से फूल झड़ते हैं।

रधिया : जैसे तुम्हारे सिर से टूट-टूटकर बाल झड़ते हैं। (हँसती हुई चली जाती है।)

जोड़ू : (आह भरकर, स्वगत) बेटा जोड़ूराम, तू जिन्दगीभर रडुआ का रंडुआ ही रहेगा—बड़े मालिक की तरह।

[टैलीफोन की घण्टी बजती है। इधर जोड़ूराम टैलीफ़ोन की ओर लपकता है, उधर विमला सीढ़ियों से तेज़ी से उतरती है।]

विमला : (आते हुए) अरे, मैं सुने लेती हूँ। (रिसीवर उठाकर) हेलो···। कौन रमेश ? हाँ, मैं विमला बोल रही हूँ·· ज़रा ठहरो।

(टैलीफोन उठाकर दूर कोने में चली जाती है और जोड़ूराम की तरफ़ पीठ करके धीमे-धीमे बातें करने लगती है। तभी कमला गुस्से से बिफरी हुई बाहर से आती है। उसके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली-सा कृष्णगोपाल आता है।)

कमला : (आते हुए) जोड़ूराम, कार आ गई ?

जोड़ू : नहीं, मालकिन।

कमला : (गुस्से से पाँव पटककर) ओह, कैसी मुसीबत है ! मुझे उस बीस लाख के ठेके के बारे में ठीक छह बजे चन्द्रप्रकाश सिंह से मिलना था और पिताजी से कह दिया था कि दादी माँ को घुमा-फिराकर और विमला के सास-ससुर से मिल-मिलाकर साढ़े पाँच बजे तक कार वापस ले आएँ··।

कृष्ण : लेकिन कमला, यह न भूलो कि कार को पिताजी नहीं, मोहन चला रहा है।

कमला : किशु, यह सब तुम्हारी गलती है।

कृष्ण : मेरी गलती ? मैं तो तुम्हारे साथ पहले ग्राफिस में था, अब यहाँ खड़ा हूँ, कमलारानी।

कमला : (पलटकर) अरे तोड़ूराम, तू यहाँ क्यों खड़ा है ? क्या दादी माँ का नया हुक्म भूल गया कि ठीक आठ बजे मेज पर खाना लग जाना चाहिए। जा रसोई मे। (जोड़ूराम रसोई में जाता है)किशु, तुम्हारी गलती यह है कि तुमने दूसरी कार ठीक नहीं करवाई।

कृष्ण : (सहमकर) गिराज मे भेज तो रखी है।

कमला : ओह, छह तो यही बज गये। अब चन्द्रप्रकाश सिंह से माफी माँगनी होगी कि मैं आज नहीं आ सकूँगी। (कहती हुई टैलीफोन वाले टेबल की तरफ़ जाती है) अरे, टैलीफ़ोन कहाँ गया ?

विमला : (दूर कोने से) जीजी, टैलीफोन मेरे पास है।

[विमला टैलीफोन लाकर टेबल पर रखती है। उधर कृष्ण-गोपाल आराम-कुर्सी पर बैठकर आँखें मूँद लेता है।)

कमला : किसका फोन था, विमला ?

विमला : रमेश का।

कमला : क्या दादी माँ और पिताजी अभी तक उन्हीं के यहाँ हैं?

विमला : नहीं, जीजी। वहाँ से चल दिये हैं। रमेश ने उनके जाने के बाद ही फोन किया था।

कमला : वहाँ क्या हुआ ?

विमला : सब ठीक हो गया। दादी माँ ने तो रमेश की बहन के ससुरालवालो से कोई जान-पहचान भी निकाल ली।

कमला : मतलब यह कि दादी माँ ने तुम्हारी और रमेश की शादी की मंजूरी दे दी है। कल से मैं तुम्हारी शादी की तैयारी शुरू कर दूँगी। मुझे एक जरूरी फोन करना है।

[कहती हुई कमला टैलीफ़ोन उठाकर दूर कोने में ले जाती है और विमला व कृष्णगोपाल की ओर पीठ करके धीमे-धीमे बातें करती है। विमला आँखें बन्द किये बैठे कृष्णगोपाल के पास पहुँचती है।]

विमला : (कृष्णगोपाल की आँखों के सामने हाथ हिलाकर हँसते हुए) अरे, जीजाजी, अब आप दिन में भी सोने लगे ?

कृष्ण : (जल्दी-से आँखें खोलकर) नहीं, नहीं, मैं सो कहाँ रहा था ? मैं तो यो ही आँखें मूँद कर सोच रहा था कि दादी माँ के जाने से आज घर में कितनी शान्ति है !

विमला . (सव्यंग्य) यह शान्ति कुछ ही देर की है, जीजाजी ।

[तभी रसोई से बब्बू भागा-भागा आता है ।]

बब्बू डैडी, डैडी !

कृष्ण : क्या बात है, बेटे ?

बब्बू : अभी आया जोड़ राम से कह रहा था कि दादी माँ भूचाल बनकर आई है, सारे घर को उलट-पलटकर रख दिया है ।

पार्वती (जल्दी-से रसोई से आकर) अरे बब्बू, यह क्या कह रहा है ! मुझे इस घर से निकलवाने का इरादा है क्या ?

विमला : (सीढ़ियों पर चढ़ती हुई) आया, दादी माँ के राज में हम सभी इस घर से एक-एक करके निकाल दी जायेंगी ।

[कमला टैलीफोन पर बात करके आती है ।]

कमला . विमला, तुम ऊपर क्यों चल दी ?

विमला ज़रा अमला को देखूँ । दोपहर से उसे कुछ हरारत है ।

कमला सरला ने उसे कोई दवा नहीं दी ?

कृष्ण . अरे, अमला की दवा तो कवि कोमल के पास है ।

कमला : (डाँटकर) किशू, कभी तो ढँग की बात किया करो । (विमला से) विमला, तुम चलो, मैं भी अभी आती हूँ । (विमला सीढ़ियों से ऊपर जाती है । कमला पार्वती को सम्बोधित करती है) आया, जा बब्बू को बागीचे में घुमा ला ।

पार्वती . अच्छा, मालकिन । आ, बब्बू राजा । (दोनों पोर्टिको से होकर बाहर जाते हैं ।)

कमला : (इधर-उधर देखकर) किशू, यह ललितमोहन कभी तुमसे अपने मन की बात करता है ?

कृष्ण : अरे, राम का नाम लो । वह मिस्टर एल० एम०बी० यानी कि मि०

लूटो-मेरे-भाई इतना चंट है कि कभी अपने-आप से भी मन की बात नहीं करता। क्यों क्या बात है, कमला ?

कमला : अभी-अभी मैंने बोर्ड के इंजीनियर चन्द्रप्रकाश सिंह को फोन किया था—छह बजे के नियत समय पर न पहुँच पाने की माफी माँगने के लिए। बातों-ही-बातों में उसने बताया कि कल ललितमोहन उससे मिला था और उससे ललितमोहन ने कहा कि दादी माँ सब लड़कियों को कोठी से विदा कर रही हैं—मतलब यह है कि मुझे भी।

कृष्ण : तो आया की बात सच निकली।

कमला : कौन-सी बात ?

कृष्ण : तुम जानो, हमारी हिदायत के मुताबिक आया दादी माँ और पिताजी के आस-पास रहती है न ? कुछ दिन हुए उसने दादी माँ को पिताजी से यह कहते सुना था कि लड़कियाँ तो पराये घर की हैं, तेरा अपना कोई बेटा नहीं। क्यों नहीं तू अपनी बहन के लड़के मोहन को ठेकेदारी के काम की जिम्मेदारी सौंपता ?

कमला : पिताजी ने क्या कहा ?

कृष्ण : उन्होंने कहा—हाँ, हाँ, मैं मोहन को बेटे के समान मानता हूँ।

कमला : (सोचते हुए) हूँ, तो इसका मतलब है कि यह ललितमोहन दादी माँ की मदद से मुझे हटाकर इस बिल्डिंग कम्पनी और पिताजी की सारी जायदाद को हथियाने की चाल चल रहा है।

कृष्ण : हाँ, घर की नई महारानी का मन्त्री बनकर।

[तभी बाहर पोर्टिको में कार के आने और रुकने की आवाज सुनाई देती है।]

कृष्ण : कमला, कार आ गई। जाओ, चन्द्रप्रकाश सिंह से मिल आओ।

कमला : नहीं, काफ़ी देर हो गई है। मैंने कल की अपाएण्टमेंट ले ली है।

रूपचन्द : (आते हुए) कमला ! कमला !!

कमला : (बनावटी मुस्कराहट से) आ गये, पिताजी ? अरे, दादी माँ कहाँ रह गयी ?

रूपचन्द : मोहन उन्हें कोठी का बग़ीचा और नौकर-चाकरों के क्वार्टर दिखाने के लिए ले गया है। अभी आती हैं।

कृष्ण : दादी माँ का यह पहला दिल्ली-दर्शन कैसा रहा, पिताजी ?

रूपचन्द : बहुत बढ़िया। मैंने तुम लोगों को बताया था न कि माँ बेहोश होने तक गाँव में ही रही थी। उन्होंने दिल्ली कभी देखी नहीं थी। आज आज़ाद भारत की राजधानी की शान देखकर वे एक बच्चे की तरह खुश हो रही थी। (हँसते हुए) कुछ बातें माँ ने बड़ी मज़ेदार कीं। मसलन कनॉट प्लेस के आस-पास बनी बहुमंज़िली इमारतें देखकर बोलीं—"आसमान नीचे न गिर पड़े, शायद इसीलिए इतनी ऊँची इमारतें बनाई गई हैं।" पाँच बज चुके थे और पार्लियामेंट स्ट्रीट की ओर से बाबुओं की न खत्म होने वाली भीड़ स्कूटरों और साइकिलों पर तेज़ी-से चली आ रही थी। देखकर माँ बोली, "अरे, क्या ये लोग कहीं आग बुझाने जा रहे हैं ?"

कृष्ण : (हँसते हुए) कनॉट प्लेस की फैशन-परेड को देखकर क्या बोलीं ?

कमला : (डाँटकर) किशू ! हाँ, तो पिताजी, विमला के होने वाले सास-ससुर से क्या बातें हुईं ?

रूपचन्द : बेटी, तुम्हारी दादी माँ को रमेश, रमेश के माता-पिता, घर, रिश्तेदार सब बहुत पसन्द आये।

कमला : तो रमेश से विमला का रिश्ता पक्का हो गया। पिताजी, हमें शादी की तैयारी फौरन शुरू कर देनी चाहिए। बहुत थोड़े दिन रह गये हैं।

रूपचन्द : हाँ, बेटी। सब तुम्हें ही करना है।

कमला : कोई दहेज की बात तो नहीं हुई ?

रूपचन्द : नहीं, बिल्कुल नहीं। बल्कि मैंने रमेश के माता-पिता से पूछा भी था कि कोई माँग हो तो बता दीजिए। वे बोले, "हमें लड़की और उसके सौभाग्य के सिवा और कुछ नहीं चाहिए। (ज़रा रुककर) बेटी, मैं ज़रा मुँह-हाथ धो आऊँ।

[रूपचन्द अपने कमरे में चला जाता है। कृष्णगोपाल मुस्कराता है।]

कमला : (सख्ती से) किशू, तुम इस तरह बुद्धू की तरह मुस्करा क्यों रहे हो ?

कृष्ण : बुद्धू जो हूँ, कमला रानी।

[तभी बाहर से बब्बू रोता हुआ आता है।]

कमला : (घबराकर) क्या हुआ, बब्बू ?

बब्बू : (सिसकते हुए) मम्मी, पड़नानी···ने···।

कमला : क्या तुम्हें मारा ?

बब्बू : नहीं मम्मी, पड़नानी ने मेरी आया को घर से निकाल दिया।

कमला-कृष्ण : (चौंककर) क्या ?

[तभी विमला सीढ़ियों से उतरती हुई दिखाई देती है।]

बब्बू : पड़नानी ने आया से जाने को कहा। आया ने कल सवेरे जाने को कहा, लेकिन पड़नानी नहीं मानी। (मिन्नत करते हुए) मम्मी, मेरी आया को रोक लो न।

विमला : हूँ, दादी माँ ने लोगों को इस कोठी से भगाना शुरू कर दिया है।

कमला : मैं हैरान हूँ कि आया ने ऐसा कौन-सा अपराध किया कि उसे···।

[पार्वती बाहर से आती दिखाई देती है।]

कृष्ण : आया खुद ही इधर आ रही है। उससे पता चल जायेगा।

[पार्वती आँसू बहाती हुई आती है।]

बब्बू : (पार्वती से लिपटकर) आया !

कमला : आया, क्या हुआ ?

पार्वती : (इधर-उधर देखकर डरी हुई-सी) मैं दादी माँ की नज़र बचाकर आप लोगों से विदा लेने आई हूँ। वे मोहन के साथ माली और दूसरे नौकरों के क्वार्टर देखने गई हैं।

कमला : आखिर हुआ क्या ?

पार्वती : मुझे खुद कुछ पता नहीं है, मालकिन। मैं बब्बू के साथ बागीचे में थी। दादी माँ मोहन बाबू के साथ अचानक वहाँ पहुँच गई और छूटते ही पूछने लगी, "क्या तू विधवा है ?" मैंने कहा, "हाँ।" इस पर बोली "क्या यह सच है कि तू फिर शादी करना चाहती है ?" मैंने कहा, "अगर कोई देवता-पुरुष मुझ जैसी अनाथ को सहारा देने को तैयार हो, तो···।" मेरी पूरी बात सुने बिना ही दादी माँ आपे से बाहर हो गईं। बोलीं, "इस कोठी से तू अभी इसी पल निकल जा। तुझ जैसी कुलटा को मैं एक पल भी यहाँ नहीं देख सकती।"

विमला : वाह, विधवा स्त्री शादी करना चाहे, तो वह कुलटा हो गई और

रंडुवा पुरुष शादी करना चाहे, तो वह देवता हुग्रा।

पार्वती : (रोकर) मालकिन, मुझे जाने का इतना दुःख नहीं, जितना इस बात का कि मुझे कुलटा कहकर इस घर से निकाला जा रहा है। इस घर की मैंने जो इतने दिन सेवा की, उसका ग्राज मुझे यह फल मिला है। ग्राप तो जानती ही हैं कि ग्राप सबके कहने से ही मैं इधर यह सोचने लगी थी कि···।

कमला : (सोचते हुए) लेकिन, ग्राया, मै हैरान हूँ कि दादी माँ को एकाएक यह कैसे मालूम हो गया कि तुम विधवा हो ग्रौर फिर से शादी करना चाहती हो? (घूरकर) किशू, कहीं तुमने···?

कृष्ण : नही, नही···।

पार्वती : (जल्दी से) नही मालकिन, छोटे मालिक ने कुछ नही कहा। मैं जानती हूँ, यह सारी शरारत उस ललितमोहन की है।

[कमला ग्रौर कृष्णगोपाल एक-दूसरे की ग्रोर देखते हैं।]

बब्बू : मैं ग्रभी जाकर मोहन ग्रंकल से लड़ता हूँ।

कमला : (रोककर) नही। बब्बू, तू चाहता है न कि ग्राया यहाँ से न जाए?

बब्बू : हा, मम्मी।

कमला : तो मोहन ग्रंकल या किसी ग्रौर से कुछ न कहना, बस, चुप रहना। चुप रहेगा न?

बब्बू : (ग्राया से लिपटकर) हां, मम्मी।

विमला : जीजी, तुम पिताजी से बात करो न।

कमला : नही, विमला, दादी माँ के जागने के बाद से हमारे पिता पहले जैसे पिता नही रहे। ग्रगर दादी माँ ने ग्राया को निकालने का फैसला कर लिया है, तो वे कोई विरोध नही करेंगे।

पार्वती : तो फिर मैं जाती हूँ।

कमला : रात के समय तू कहां जायेगी?

पार्वती : भगवान् की छत के नीचे कही भी पडी रहूँगी।

कृष्ण : मैं सोचता हूँ क्यो न ग्राया को फिलहाल ग्रपनी कम्पनी के ग्राफिस मे ठहरा दिया जाए।

कमला : ठीक। (मुस्कराकर) किशू, ग्राज तुमने पहली बार ग्रक्ल की बात

की है। आफिस की चाबी तुम्हारे पास है न ?

कृष्ण : हां। (जेब से चाबी निकालकर) यह रही।

कमला : आया, यह चाबी लो और रात आफिस में गुजारो। कल मैं कोई और प्रबन्ध करूंगी। (पार्वती चाबी लेती है।)

कृष्ण : प्रबन्ध जल्दी करना होगा, क्योंकि हो सकता है कि कल दादी मां के मन में अपने बेटे की कम्पनी का आफिस देखने की भी इच्छा पैदा हो जाए।

बब्बू : आया, मुझे भूख लगी है।

कमला : किशू, तुम बब्बू को रसोई में ले जाकर खाना खिला दो।

कृष्ण : आओ, बब्बू।

विमला : (हंसकर) तो आज से जीजाजी बब्बू की आया भी बन गये।

[कृष्णगोपाल बुद्धू की तरह हंसता है और बब्बू को लेकर रसोई में चला जाता है।]

पार्वती : (जाते-जाते) तो मालकिन, मैं रात दफ्तर में जाकर गुजारती हूं।

कमला : हां, जाओ। विमला, तुम भागकर आया के कमरे में जाओ और इसका सामान इकट्ठा करके···।

[तभी पार्वती बाहर के दरवाजे से लौटकर भागी-भागी आती है।]

पार्वती : (डरी हुई-सी) दादी मां आ गईं। अब मैं कैसे बाहर निकलूं ?

कमला : (जल्दी से फुसफुसाकर) तुम ऊपर मेरे कमरे में जाकर छुप जाओ। जल्दी।

[पार्वती भाग कर सीढ़ियों के ऊपर चढ़ जाती है। तभी बाहर से दादी मां और ललितमोहन आते हैं।]

दादी : (आते हुए) अरे मोहन, यह माली की बेटी तो बहुत अच्छा गावे है। क्या नाम बताया था उसका ?

मोहन : रधिया···मतलब यह कि राधा।

कमला : (आगे बढ़कर बात बनाते हुए) दादी मां, आज आपने बहुत सैर की। हमारी कोठी का बगीचा देख आईं ?

[मोहन चुपके से रसोई की ओर खिसक जाता है।]

दादी . (एकाएक चेहरे पर कड़ाई आ जाती है) हाँ, हां, देख आई। वहीं तुम्हारे लड़के की वह चुड़ैल आया मिल गई थी। उसकी मैंने छुट्टी कर दी है। वह विधवा होकर सुहागिन बनने चली थी। कुलटा कहीं की! मैंने उसे घर में घुसने नहीं दिया, बाहर से ही चलता किया। कुआरी लड़कियों पर ऐसी औरत का तो साया भी नहीं पड़ना चाहिए। (सोफे पर बैठते हुए) हे राम, आज कनॉट प्लेस में इस नये ज़माने की दिल्ली का जो रंग-ढंग देखा, उससे लगा कि घोर कलजुग आ गया है। देखा, औरतें अंग-अंग उघाड़े मानो दुनिया-भर को न्योता दे रही हैं। न बाबा, मैं अपने घर में ऐसी गंदी हवा नहीं आने दूंगी। (तभी उसकी नज़र विमला पर पड़ती है, जिसने साड़ी ऐसे पहनी है कि नाभि दिखाई दे।) अरी विमला, तूने यह साड़ी कैसे बांधी है? सारा पेट उघड़ा हुआ है। अरी, पल्ला ठीक कर। (विमला जल्दी से पेट ढँकती है।) क्या नाम है तेरा…?

कमला : (जल्दी से) विमला। दादी माँ, इसी की शादी की बात तो आप आज पक्की करके आई है। (विमला शरमाकर सीढ़ियों की तरफ़ जाती है।)

दादी : हां, हाँ। अच्छा, तो इसका पाप तो जल्दी कट जायेगा। बाकी बची दो। क्या नाम हैं? ओहो, मुझे तो इन लड़कियों के नाम भी याद नहीं रहते। कोई कमला है, तो कोई गमला है, तो कोई करेला है तो कोई आंवला है…। (विमला को सीढ़ियों पर चढ़ती देखकर) अरी कमला, चन्दू ने बताया था कि ऊपर के कमरों में तुम चारों बहनें रहती हो। नीचे की सारी कोठी देख ली, बाग-बगीचा भी देख लिया। चलो, आज कोठी का ऊपर का हिस्सा भी देख लूं।

[दादी माँ सोफे से उठती है। विमला सीढ़ियों पर रुकती है। उसकी कमला से नजरें मिलती हैं। दोनों घबरा जाती है।]

कमला : (बात बनाते हुए) लेकिन, दादी माँ, आप अभी क्यों कष्ट करती हैं? कल किसी समय…।

विमला : आज आप बाहर घूम-फिर कर काफ़ी थक गई होंगी…।

दादी : (घुटने दबाकर) हाँ, थक तो गई हूँ, लेकिन ये सीढ़ियां तो चढ़ ही सकती हूँ।

[दादी माँ सीढ़ियों पर पाँव रखती हैं। तभी कृष्णगोपाल रसोई से निकल कर स्थिति भाँपता है और सब की आँख बचा-कर रूपचन्द के कमरे में पहुँच जाता है।]

कमला : लेकिन, दादी माँ, वह हमारी सरला डॉक्टर है न ? वह कह रही थी कि अभी आपको सीढ़ियाँ नहीं चढ़नी चाहिएँ।

दादी : (एकाएक) अरी सुन, वह सरला तो इस समय अस्पताल में होगी, लेकिन वह सबसे छोटी लड़की… क्या नाम है उसका ?

मोहन : (रसोई से आकर) नानी, उसका नाम है अमला। अभी-अभी कृष्ण-गोपाल ने बताया कि उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं।

[कमला और विमला ललितमोहन को गुस्से से देखती हैं।]

दादी : तबीयत ठीक नहीं ? मतलब यह कि वह बीमार है। हद हो गई। लड़की बीमार है और किसी ने मुझे बताया नहीं। कहाँ वह ?

मोहन : ऊपर अपने कमरे में होगी।

दादी : (सीढ़ियों पर चढ़ते हुए) आ मोहन, उसे देख आयें। साथ ही मैं सबके कमरे भी देख लूँगी।

विमला : (रास्ता रोककर) दादी माँ, आप…कष्ट क्यों करती हैं…मैं अमला को नीचे ले आती हूँ।

दादी : क्या बीमार को नीचे लायेगी ? नहीं, नहीं, मैं खुद उसके पास जाती हूँ। (डाँटकर) अरी, रास्ता छोड़।

[सीढ़ियाँ चढ़ती है। पीछे-पीछे ललितमोहन भी चढ़ता है। उसी समय रूपचन्द अपने कमरे से निकल कर आता है।]

रूपचन्द : (दूर से) माँ, माँ…!

दादी : (सीढ़ियों पर रुककर) क्या है, चन्दू ?

रूपचन्द : (पास आकर) माँ, तुमने कहा था न कि ठीक आठ बजे सब लोग खाना खायेंगे ? आठ तो बज गये।

दादी : ऐं, आठ बज गये ? हाँ, हाँ, आठ बजे सब खाना खायेंगे। तेरे बापू का यही नियम था।

रूपचन्द : तो माँ, यह नियम नहीं टूटना चाहिए। कमला, जोहूराम से कहो कि फौरन डाइनिंग टेबल पर खाना लगाये।

कमला : (रसोई की ओर जाते हुए) अभी लगवाती हूँ। आओ, मोहन, आओ, विमला, जरा हाथ बटाओ। (ललितमोहन और विमला सीढ़ियों से उतरकर रसोई में जाते हैं।)

दादी : (सीढ़ियों से उतरते हुए) हाँ, याद आया, चन्दू, तुझसे एक बहुत जरूरी बात करनी है। जब तक उधर मेज़ पर खाना लगता है, तू इधर मेरे पास बैठकर मेरी बात सुन। बात मन में रहेगी, तो मुझसे खाना नहीं खाया जाएगा।

रूपचन्द : (दादी माँ के साथ सोफ़े पर बैठते हुए) माँ, ऐसी क्या जरूरी बात है, जो…?

दादी : अरे, अभी बताती हूँ। (इधर-उधर देखकर) सब लोग खाने के कमरे में चले गए न?

रूपचन्द : हाँ, माँ।

[कृष्णगोपाल रूपचन्द के कमरे का दरवाज़ा थोड़ा-सा खोलकर रूपचन्द और दादी माँ की बातें सुनता है।]

दादी : चन्दू, बात यह है कि…।

रूपचन्द : माँ, कहते-कहते रुक क्यों गईं? कहो न।

दादी : (धीमे से) अरे, तू जाने है न कि बिना बेटे के आदमी की इस लोक और परलोक में गति नहीं होवे है।

रूपचन्द : (सतर्क होकर) हाँ, लेकिन, माँ…।

दादी : और तू यह भी जाने है कि लड़कियाँ पराया धन होवे है।

रूपचन्द : हाँ, लेकिन, माँ…।

दादी : अरे, क्या लेकिन-लेकिन लगा रखी है! कभी तूने सोचा कि जब सब लड़कियाँ अपने-अपने घर चली जायेंगी, तो तेरी इतनी बड़ी धन-सम्पत्ति का वारिस कौन होगा?

रूपचन्द : माँ, मैंने तो यही सोच रखा है कि अपनी कमला है, कृष्णगोपाल है, बब्बू है, ललितमोहन है…।

दादी : ओह, लड़कियों के मोह ने तुझे अन्धा बना रखा है। नहीं, नहीं, तेरा यह सोचना सब गलत है। अपने परलोकवासी बापू का ख्याल कर और मेरी बात ध्यान से सुन। मैंने फैसला किया है कि जब सब

लड़कियाँ अपने-अपने घर चली जाएंगी, तो मैं तेरा ब्याह रचाऊंगी।

रूपचन्द : (चौंककर) मेरा ब्याह?

दादी : हाँ, और पोते का मुंह देखूंगी।

रूपचन्द : (हैरान-परेशान-सा) क्या कह रही हो, माँ? इस उम्र में···मैं···?

दादी : अरे, मर्द कभी बुड्ढा नहीं होवे है। बेटे के लिए लोग तीन-तीन चार-चार शादियाँ करे हैं। मैं तो छम-छम करती चाँद-सी बहू लाकर ही रहूँगी। मुझे इस निगोडी दिल्ली की लड़कियाँ पसन्द नहीं। इस विमला के ब्याह की शादी की मिठाई बाँटने जब मैं गाँव जाऊंगी, तो वहीं से कोई नई-नवेली ढूंढकर··।

रूपचन्द : (निढाल-सा) लेकिन, माँ···।

[दादी माँ खुश है, रूपचन्द एकदम स्तब्ध-सा है और उसके कमरे में छुपे हुए कृष्णगोपाल के चेहरे पर गहरी चिन्ता है। इसके साथ ही मंच पर दृश्य-समाप्ति-सूचक अंधेरा हो जाता है।]

दूसरा दृश्य

स्थान—कोठी का ड्राइंग-रूम।

समय—आधी रात, बारह बजे।

(ड्राइंग रूम मे एकदम अंधेरा है। नेपथ्य में दूर से घंटाघर की घड़ी बारह बजाती है और उसके साथ ही कुत्तों के भौंकने और पहरेदार की 'जागते रहो' की आवाज़ सुनाई देती है। कुछ देर बाद सीढ़ियों पर टार्च का मद्धिम-सा प्रकाश होता है और कृष्णगोपाल व पार्वती की आकृतियाँ चुपचाप बड़ी सावधानी से नीचे उतरती हैं। नीचे आने पर टार्च के मद्धिम प्रकाश में कृष्णगोपाल बाहर वाले दरवाज़े की तरफ़ बढ़ता है, परन्तु पार्वती रुककर खड़ी हो जाती है।)

कृष्ण : (धीमे से फुसफुसाकर) मौसी, रुक क्यों गई? डरो नहीं, सब सो रहे हैं।

पार्वती : (धीमे से) कृष्ण, आज रात तुम्हारे आफ़िस मे गुज़ार कर कल सुबह मैं सहारनपुर जाने वाली गाड़ी मे बैठ जाऊँगी ?

कृष्ण : अभी-अभी यही तो तै हुआ है, मौसी।

पार्वती : (धीमे से) सोचती हूँ, इस कोठी से हमेशा के लिए जाने से पहले क्यों न अपने देवता के अन्तिम बार चरण छू लूं।

कृष्ण : (पास आकर) मौसी, तुम मेरे उस ससुर को देवता कहती हो, जिसने तुम्हारे साथ किये गये कौल-करार को भुलाकर अब अपनी माँ की खुशी के लिए किसी नई-नवेली से शादी करने का फैसला कर लिया है ?

पार्वती . (सिसककर दुःख से) मुझे विश्वास नही होता, कृष्ण।

कृष्ण : मौसी, तुम विश्वास करो कि मैंने उस दरवाज़े की आड मे खड़े होकर उन दोनो की सब बातें सुनी, फैसला सुना…।

पार्वती : फिर भी, कृष्ण, मै चाहती हूँ कि अभी उनके कमरे मे जाकर उनका फैसला उनके मुँह से सुनूं।

कृष्ण : यह कैसा पागलपन तुम पर सवार हुआ है, मौसी ? अगर दादी माँ जाग गई, तो तुम छुपने के लिए हमारे आफिस मे भी न पहुँच सकोगी।

पार्वती · मैंने कभी सोचा नही था कि वे इतने निर्मोही और स्वार्थी निकलेंगे। कृष्ण, तुम तो जानते ही हो कि मैंने अपने रंडापे को भुलाकर तन-मन से उनकी कितनी सेवा की, कैसे मैंने उन्हे अपना देवता मानकर… (रोती है।)

कृष्ण : मौसी, रोओ नही। रोना तो मुझे चाहिए, जिसकी सारी योजना ही दादी माँ ने उलटकर रख दी है।

पार्वती : अरे, मैं भी तुम्हारी उसी योजना को सफल बनाने के लिए इस घर मे आकर आया बनी थी। किसी को भी, अपने उस देवता को भी नही बताया था कि मैं तुम्हारी विधवा मौसी हूँ…।

कृष्ण : अच्छा-अच्छा, अब यहाँ ज्यादा देर रुकना ठीक नही। आओ।

[तभी सीढियो पर खटका होता है। कृष्णगोपाल घबराकर टार्च जलाता है। सीढियो से उतरती हुई कमला दिखाई देती है।]

कमला : रुको।

कृष्ण : (डरा हुआ-सा) कमला, तुम...तुम...यहाँ ?

कमला : (सव्यंग्य मद्धिम-सी हँसी हँसकर) हाँ। मैं तुम दोनों के पीछे-पीछे आयी थी और सीढ़ियों पर रुककर तुम दोनों की बातें सुन रही थी। यह ठीक है कि न तुमने, न पार्वती ने किसी को भी बताया नहीं था कि तुम दोनों के बीच मौसी-भानजे का रिश्ता है, लेकिन मुझे शक था कि आया कहलाने वाली यह औरत तुम्हारी कुछ लगती है और... और पिताजी की भी कुछ लगती है। आज वह शक सच निकला।

पार्वती : (सहमकर) ओह !

कृष्ण : (हकलाते हुए) कमला, बात दरअसल यह थी कि...।

कमला : अरे, जो बात दरअसल थी, वह मैं सुन चुकी हूँ। मुझे आज यह जानकर खुशी हुई कि तुम इतने बुद्धू नहीं हो, जितना मैं समझती थी। खैर, तुम्हारी मौसी को वापस सहारनपुर जाने की जरूरत नहीं। ये दिल्ली में ही रहेंगी। कल सुबह मैं इनके ठहरने का इन्तज़ाम एक भरोसे के गैस्ट-हाउस में कर दूँगी।

पार्वती : लेकिन, मालकिन...।

कमला : (हँसकर) पार्वती मौसी, अब यह मालकिन और आया वाला नाटक बन्द करो और चुपचाप देखो कि मैं तुम्हें कैसे अपनी शतरंज का मोहरा बनाती हूँ। खैर, किशू, इससे पहले कि कोई जाग जाए, तुम अपनी मौसी को जल्दी से आफिस में पहुँचाओ।

कृष्ण : आओ, मौसी।

(मंच पर दृश्य-समाप्ति-सूचक अंधेरा हो जाता है।)

तीसरा दृश्य

स्थान—कोठी का ड्राइंग रूम।

समय—सायंकाल।

[दूर विवाह के पण्डाल में गूँजती हुई शहनाई की मधुर ध्वनि के साथ ड्राइंग रूम प्रकाशित होता है। दाईं ओर की दीवार

के साथ खड़े माली घासीराम और नौकर जोड़ूराम फूल-मालाओं से सजावट का काम करते दिखाई देते हैं। इधर बायीं दीवार की खिड़की और पोर्टिको में खुलने वाले सामने के दरवाज़े से बाहर बिजली के रंग-बिरंगे बल्बों की रोशनी से जगमगाते और मेहमानों व बैरों से भरे शादी के शानदार पंडाल का आभास मिलता है। इसी बाईं दीवार के साथ रसोई के दरवाज़े के पास रखी मेज़ पर अमला शादी पर मिले उपहारों को सजा-सम्भाल रही है। अमला नर्तकी की तरह सजी हुई है। कुछ देर बाद बाहर वाले दरवाज़े से विमला की दो सहेलियाँ उपहार लिये हुए आती हैं।]

अमला : (उपहार लेकर हँसते हुए) अरे, विमला जीजी की कॉलिज के सिर्फ दो सहेलियाँ ही आई हैं ?

सहेली : बाकी भी आ रही है। विमला कहाँ है ?

अमला : (हँसते हुए) जहाँ उसका दूल्हा।

सहेली २ : दूल्हा कहाँ है ?

अमला : (हँसते हुए) जहाँ उसकी दुल्हन। (सब हँसती हैं।)

सहेली १ : अरे, यह अमला तो बातों में भी घूमर-नाच नाचने लगी।

अमला : (गम्भीर होकर) अच्छा, बताती हूँ। विमला जीजी की रमेश शर्मा से कोई ढाई बजे कोर्ट में शादी हुई।

दोनों : कोर्ट में ?

अमला : और फिर गिने-चुने घरातियों-बरातियों की होटल में दावत हुई और फिर उसी होटल के एक कमरे में दूल्हा-दुलहन हनीमून मनाने चले गए।

सहेली २ : खूब ! चाँद-चाँदनी का दिन में ही मिलन हो गया। (सब हँसती हैं।)

अमला : अब विमला जीजी शादी के इस रिसेप्शन-समारोह में आने ही वाली हैं।

सहेली १ : (हँसते हुए) तो अब हम विमला के दर्शन नई नवेली के रूप में नहीं…

तीनों : सुहागिन के रूप में करेंगी।

[सहेलियाँ अमला के साथ हँसती हुई पोर्टिको वाले दरवाज़े से

बाहर चली जाती हैं। इधर जोड़ूराम और माली फूलमालाओं से सजावट का काम करते हुए ड्राइंग रूम के आगे की ओर आ जाते हैं। एकाएक जोड़ूराम सिर के बाल तोड़ता हुआ हँसने लगता है)

माली : अरे तोड़ूराम, हंसने क्यों लगे ?

जोड़ू : (हँसते हुए) माली, आज तो मुझे जोड़ूराम कह। आज मेरे ही नाम के प्रताप से इस घर में दो-दो जोड़ियां जुड़ गई हैं—एक विमला और रमेश की, दूसरी मालिक और आया की।

माली : लेकिन तुम हँस क्यों रहे हो ?

जोड़ू : मैं हँस रहा था उस नीली छतरी वाले की लीला पर। अब तक जो हमारे साथ इस घर की नौकरानी थी, वह आज से इस घर की मालकिन बन गई।

माली : सो तो ठीक है, लेकिन आज घर में दो ब्याह हो गए ...।

जोड़ू : एक मन्दिर में और दूसरा कोर्ट में...।

माली : और बेचारी दादी माँ एक भी न देख सकी।

जोड़ू : (धीरे-से फुसफुसाकर) अरे, उन्हें दिखाना कौन चाहता था ? बड़ी चालाकी से दादी माँ को गाँव की बिरादरी को विमला बीबी की शादी की मिठाई देने भेज दिया गया—।

माली : (बात समझकर) हूँ, साथ में उनके नाती मोहन बाबू और मेरी लड़की रधिया को भी भेज दिया।

जोड़ू : (धीरे-से) अरे, तेरी रधिया दादी माँ की आजकल चहेती जो बनी हुई है।

[तभी रूपचन्द के कमरे से पार्वती आती है। उसने नई दुलहन का सिंगार किया हुआ है—कीमती साड़ी, जेवर, हाथों में सुहाग की चूड़ियाँ, माथे पर बिंदी और माँग में सिंदूर।]

पार्वती : (आते हुए मुस्कराकर) अरे, क्या खुसर-फुसर कर रहे हो दोनों ?

जोड़ू : (चौंककर) आया...नहीं, नहीं, मालकिन ! (कानों को हाथ लगाकर) माफी चाहता हूँ। जबान फिसल गई।

पार्वती : (हंसते हुए) जैसे तुम्हारे हाथ से प्लेटें फिसल जाती हैं।

जोड़ू : (बनावटी लहजे में) मालकिन, इस गरीब की तनखा से पैसे तो नहीं काटेंगी ?

पार्वती : अरे, दादी माँ और कमला रानी के रहते मैं कैसे मालकिन बन सकती हूँ ? क्या कर रहे हो ?

माली : कमला जी ने कहा था कि इस ड्राइंग रूम को भी फूलों से सजा दो, सो · ।

पार्वती : अच्छा, अच्छा, मैं भी तुम्हारा हाथ बँटाती हूँ । (फूलमाला उठाती है।)

माली : नहीं, नहीं, यह काम आपका नहीं ।

जोड़ू : आपको तो बाहर पंडाल में जाना चाहिए और मालिक के साथ खड़े होकर मेहमानों का स्वागत करना चाहिए । छोटे मालिक कृष्णगोपाल और कमला बीबी भी तो वहीं हैं ।

पार्वती : (शरमाकर) नहीं, नहीं, मैं यहीं ठीक हूँ ।

[पार्वती, माली और जोड़ूराम के साथ मिलकर ड्राइंग रूम को फूलों से सजाने लगती है । तभी कमला बाहर वाले दरवाज़े से जल्दी-जल्दी आकर टेलीफोन के पास पहुँचती है और डायल घुमाती है ।]

कमला : (फोन पर) हैलो···मि० चन्द्रप्रकाश सिंह···मैं कमला बोल रही हूँ । आप अभी तक रिसेप्शन में क्यों नहीं पहुँचे ? ···आपके इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट के सभी लोग पहुँच गए हैं ···क्या कहा ? हद हो गई, मैं शादी की रिसेप्शन का कार्ड खुद देने आई थी और आप भूल गये कि···हाँ, हाँ, विमला की शादी तीसरे पहर कोर्ट में हो गई थी··· क्या ? हाँ, हाँ, दूसरी शादी हमने गुपचुप मन्दिर में की थी·· (उसी समय अमला बाहर से आकर कमला के पीछे खड़ी हो जाती है।) क्या कहा ? (हँसकर) तुम भी दूसरी शादी करना चाहते हो ? (शरमाकर) चन्द्रप्रकाश, बड़े दुष्ट हो तुम···खैर, यह बातें बाद में होगी । अब फौरन आओ और देखो ठेकेदार रूपचन्द की लड़की की शादी की शान···(प्यार से) हाँ, हाँ, मैं पलकें बिछाकर इन्तजार कर रही हूँ तुम्हारा···।

[कमला टेलीफोन का रिसीवर नीचे रखती है कि अमला पास आ जाती है।]

अमला : जीजी, मैं भी कोमल जी को फोन कर दूँ कि वे भी आ जाएँ शादी की दावत में ?

कमला : (कड़े स्वर में) नहीं, अमला। तुम तो जानती ही हो कि दादी माँ तुम्हारे कोमल जी की शक्ल तक देखना नहीं चाहती।

अमला : (नाराज़ होकर, कटाक्ष करते हुए) शक्ल तो वे इस आया की भी नहीं देखना चाहती, जिसे आप घर की बहू बनाकर वापस ले आई हैं।

कमला : (बिगड़कर) क्या मैं ले आई हूँ ? जो कुछ किया, तुम सबकी मर्ज़ी से किया, सलाह से किया।

अमला : यह क्यों नहीं कहती कि पिताजी इस विधवा से पहले से प्रेम करते थे।

कमला : हाँ, करते थे, और मैं नहीं चाहती थी कि आया को उन्हें बदनाम करने का मौका मिले। मैं यह भी नहीं चाहती थी कि दादी माँ पोते का मुँह देखने की झोंक में गाँव की किसी ऊल-जलूल औरत को लाकर तुम्हारी माँ बना दें।

अमला : (रोकर) मेरी कोई माँ नहीं। मेरी माँ मर चुकी है। अगर मेरी माँ ज़िन्दा होती, तो इस घर में मेरे प्यार की दुनिया इस तरह न उजाड़ी जाती।

कमला : (डाँटकर) अरी, प्यार की बच्ची, क्यों रोकर अपनी बहन की शादी का शगुन बिगाड़ रही है ? जा, तू भी अपने उस जनानड़े प्रेमी से शादी कर ले। कौन रोकता है तुझे ? (तभी कमला की नज़र जोड़ूराम और माली के साथ सजावट का काम करती हुई पार्वती पर पड़ती है।) ओह, यह नौकरों के साथ यहाँ क्या कर रही है ?

[कमला दनदनाती हुई पार्वती की तरफ जाती है और अमला आँसू पोंछती हुई वापस उपहारों वाली मेज की ओर चली जाती है।]

कमला : (गुस्से से आते हुए) आया···ओह, सॉरी···माँ, तुम यहाँ ?

पार्वती : कमरे में बेकार बैठी-बैठी ऊब गई थी, सो···।

कमला : काफी सजावट हो चुकी। माली, ये जो फूलमालाएँ यहाँ हैं, उपर

वेदी पर जाकर लटका दो।

माली : अच्छा, मालकिन। (मालाएँ उठाकर जाता है।)

पार्वती : विमला का कोर्ट मे तो विवाह हो चुका है, अब क्या धार्मिक रीति से भी होगा ?

कमला : हाँ। दादी माँ का मन रखने के लिए पिताजी चाहते हैं कि…

जोड़ू : छोटी मालकिन, जब विमला बीबीजी का विलायती तरीके से विवाह हो गया है, तो अब क्यों अंग्रेजी पुडिंग का देसी हलुआ बनाती है ?

कमला : तोड़ूराम, मै देख रही हूँ कि तू इधर काफी बक-बक करने लगा है। जा रसोई मे।

जोड़ू रसोई में जाकर क्या करूँ, छोटी मालकिन ? आज घर की रसोई का सारा ठेका तो आपने होटल वालों को दे रखा है। खैर, जाकर मैं देखता हूँ कि होटल वालों ने बारात के लिए कैसा खाना तैयार किया है। (सिर के बाल तोड़ता हुआ बाहर चला जाता है।)

कमला : (पार्वती से) तुम…सॉरी, आप यहाँ क्यो खडी है ? दादी माँ गाँव से किसी भी समय आ सकती है। आप जल्दी से ऊपर मेरे कमरे में या पिताजी के कमरे में जाकर छुप जाइए।

पार्वती : लेकिन मैं तो अब छुपना नही चाहती। मैं तो चाहती हूँ कि दादी माँ को गाँव से आते ही पता चल जाए कि जिस विधवा को कुलटा कहकर उन्होने घर से बाहर निकाला था, वह अब घर की बड़ी बहू बनकर आ गई है।

कमला : (समझाते हुए) जरूर पता चलना चाहिए, लेकिन अभी नही। अभी विमला के विवाह की खुशी है, रिसेप्शन की खुशी है। मैं नही चाहती कि दादी माँ तुम्हें अभी घर की बहू के रूप मे देखकर भड़क उठें और खुशी को गमी में बदल दें।

(तभी बाहर से रूपचन्द घबराया हुआ-सा आता है और लपककर कमला के पास पहुँचता है। पार्वती सिर का पल्ला नीचे करके उसके कमरे मे चली जाती है।)

रूपचन्द : (आते हुए) कमला ! कमला !!

कमला : क्या बात है, पिताजी ?

रूपचन्द : आठ बजने को हैं। बारात आने वाली है, लेकिन माँ अभी तक गाँव से नहीं आई।

कमला : घबराइये नहीं, पिताजी, आती ही होंगी। कार में गई हैं, साथ ललितमोहन और माली की लड़की रधिया है...।

रूपचन्द : यह सब ठीक है, लेकिन इतनी देर क्यों लगी? सुबह आठ बजे गई थीं। दस बजे गाँव पहुँच गई होंगी। वहाँ एक-दो घण्टे रुककर उन्हें दो बजे तक वापस आ जाना चाहिए था। ओह, मुझे तो चिन्ता हो रही है।

कमला : पिताजी, चिन्ता न कीजिए। हो सकता है, रास्ते में कार कहीं खराब हो गई हो। आखिर मशीन ही तो है।

रूपचन्द : कमला, कुछ भी हो, तुमने आज शादी के दिन माँ को गाँव भेजकर ठीक नहीं किया।

कमला : (चालाकी से) दादी माँ को मैंने गाँव भेजा? यह क्या कह रहे हैं, पिताजी? आप दोनों ने खुद ही तो फैसला किया था कि गाँव में आपके चाचा-ताऊ के परिवार के जो एक-दो घर हैं, उन्हें मिठाई भेजकर विमला के ब्याह की खबर दी जाए...।

रूपचन्द : लेकिन इस काम के लिए माँ को कल जाना था...।

कमला : कल जा तो रही थीं, लेकिन ऐन मौके पर ड्राइवर बीमार हो गया।

रूपचन्द : (परेशान-सा) ओह, मेरी तो समझ में कुछ नहीं आ रहा है। आज खुशी के समय भी मैं चिन्ता से मरा जा रहा हूँ।

कमला : यह आप क्या कह रहे हैं, पिताजी? मरें आपके दुश्मन।

रूपचन्द : (इधर-उधर देखकर, धीरे-से) बेटी, मुझे कहते हुए शर्म आ रही है...।

कमला : क्या बात है, पिताजी?

रूपचन्द : (सहमकर धीरे-से) बेटी, तुम जानो, तुम सबके जोर देने से मैंने आज माँ से बिना पूछे, बिना उनकी आज्ञा लिये, उनकी अनुपस्थिति में शादी कर ली है...।

कमला : आपने जो कुछ किया, ठीक किया। आखिर दादी माँ भी तो चाहती थीं कि आप दूसरी शादी कर लें। वे तो आज सुबह कहकर भी गई थीं कि गाँव में वे कोई अच्छी-सी लड़की ढूँढ़ेंगी...।

रूपचन्द : और मैंने तुम सबके मजबूर करने पर उस पार्वती से शादी कर ली, जिसे माँ ने घर से निकाल दिया था। माँ कितनी नाराज होंगी अपने इस नालायक और पापी बेटे पर। ओह, मुझे तो डर लग रहा है...।

कमला : आप डरिये नहीं, पिताजी, मैं सब सँभाल लूँगी।

[तभी कृष्णगोपाल बाहर से भागा आता है और सीधा रूपचंद और कमला के पास पहुँचता है।]

कृष्ण : (आते हुए) अरे, आप लोग यहाँ कान्फ्रेंस कर रहे हैं और उधर विमला, उसका दूल्हा, उसके घर के लोग, यार-दोस्त सब आ गये।

कमला : (आँख दबाकर) अरे, कहो न कि बारात आ गई।

रूपचन्द : लेकिन बारात बिना बैंड बाजे के...?

कमला : पिताजी, कोर्ट-मैरिज में न बैंड बजता है, न घुड़चढ़ी होती है।

रूपचन्द : लेकिन बेटी दिखावे के लिए...।

कमला : दिखावे के लिए मैं अभी जाकर जयमाला की रस्म कराती हूँ।

रूपचन्द : और धार्मिक रीति से विवाह संस्कार भी...।

कमला : हाँ, हाँ, सब हो जायेगा। आप चलिए तो।

[रूपचन्द और कमला बाहर के दरवाजे की ओर जाते हैं। कृष्णगोपाल लपककर कमला को दरवाज़े के पास रोक लेता है।]

कृष्ण : (धीरे-से) ड्राइवर ने आज भी कमाल कर दिया। रास्ते में कार खराब कर दी होगी। उसे इनाम देना न भूलना।

कमला : (परेशान-सी) अरे, इनाम तो दे दूँगी, लेकिन लौटने में उसे इतनी देर नहीं करनी चाहिए थी। पिताजी परेशान हो रहे हैं।

[कहकर कमला जल्दी से बाहर जाती है। कृष्णगोपाल ज़रा रुककर मुस्कराता है और फिर अमला के पास जाता है।]

कृष्ण : (मुस्कराकर) अमला, तुम यहाँ क्यों बैठी हो? जाओ, बाहर जाकर शादी की रौनक देखो।

अमला : कैसे जा सकती हूँ, मुंशीजी? आपकी घर-सरकार ने आज मेरी ड्यूटी उपहारों की इस मेज़ पर जो लगा रखी है।

कृष्ण : यह ड्यूटी मैं संभालता हूँ। तुम जाओ।

अमला : (उठकर) थैंक यू, जीजाजी !!

कृष्ण : (अमला को रोककर) सुनो। वह तुम्हारी नई माँ कहाँ है ?

अमला : (बिगड़कर) मेरी कोई नई माँ नहीं। वैसे वह पार्वती सामने पिताजी के कमरे में छुपी बैठी है।

[कहती हुई बाहर जाती है। तभी पार्वती अपने कमरे का दरवाज़ा खोलकर बाहर झाँकती है। कृष्णगोपाल उसकी ओर जाने लगता है, लेकिन उसी समय बाहर शोर मचता है—"दादी माँ आ गई !" पार्वती फौरन अपना दरवाज़ा बन्द कर लेती है और कृष्णगोपाल रसोई में छुप जाता है। कुछ देर बाद दादी माँ नाराज़-सी आती है—ललितमोहन और रधिया के साथ।]

दादी : (आते हुए) कहाँ है चन्दू ? कहाँ है कमला ? ऐसी कार दी कि गाँव जाते भी बिगड़ गई और लौटते भी बिगड़ गई। मैं घर मे तब पहुँची, जब बारात दरवाज़े पर आ गई। पता नहीं, मेरे पीछे किसी ने विमला को तैयार किया है या नहीं। तेल-उबटन लगाना था, मेंहदी लगानी थी, पीला जोड़ा पहनाना था, बिछुए और चूड़ियाँ पहनानी थीं···।

मोहन : नानी, आप परेशान न हों, सब ठीक हो गया होगा।

दादी : अरे, कहाँ ठीक हो गया होगा ? उस कमला को तो ठेकेदारी से ही फुर्सत नहीं। वह सरला और अमला भी कहीं दिखाई नहीं दे रहीं। पता नहीं, सब कहाँ चली गईं ? रधिया, तू मेरा मुँह क्या देख रही है ? जा देख, विमला कहाँ है ? शायद ऊपर अपने कमरे मे होगी।

रधिया : मैं अभी ऊपर जाती हूँ, दादी माँ।

[रधिया सीढ़ियों पर जाती है। कृष्णगोपाल रसोई से निकल कर आता है।]

कृष्ण : (आते हुए) दादी माँ, आप आ गयीं ? बड़ी देर कर दी।

दादी : अरे, किशन, देर की बात फिर पूछना, पहले बता चन्दू कहाँ है?

कृष्ण : पिताजी बाहर पंडाल में हैं, मेहमानों का स्वागत-सत्कार कर रहे हैं।

दादी : लेकिन तू यहाँ क्या कर रहा है ? जा देख द्वार-पूजा हुई या नहीं। मोहन, तू भी जा। (घुटने पकड़कर) ओह, आज दिन-भर के सफ़र

से कितनी थक गयी हूँ।

[सोफ़े पर बैठती है। कृष्णगोपाल और ललितमोहन बाहर जाते है। थोड़ी देर बाद रधिया सीढ़ियों से उतरकर दादी माँ के पास आती है।]

रधिया : दादी माँ, विमला बीबीजी तो अपने कमरे में नही हैं।

दादी : (घबराकर) हाय दैया! बारात घर में आ गयी और लड़की गायब! अरे, चन्दू कहाँ है? आज तो शहर-भर में हमारी नाक कट जायेगी। गाँव की विरादरी मे भी नाक कट जायेगी। कहाँ गयी वह विमला?

रधिया : मैं बाहर पंडाल मे देखकर आती हूँ, दादी माँ।

दादी : नही, नही, तू मेरे पास बैठ जा। मेरा दिल बैठा जा रहा है। हाय, ब्याह के समय ब्याह वाली लड़की गायब!

[रधिया नीचे कालीन पर बैठ जाती है और दादी माँ की टाँगें दबाने लगती है। तभी बाहर से तेज़ी से सरला आती है।]

दादी : कौन? अरी, सरला, तेरी वह बहन विमला कहाँ है?

सरला : (हँसकर) कौन? विमला? ज़रा नमक···। (कहती हुई रसोई में घुस जाती है।)

दादी : हाँ, हाँ, कटी नाक पर नमक छिड़क, ज़रूर छिड़क। हाय, बदशगुनी का डर न होता, तो मैं अभी अपना सिर पीट लेती। (तभी सरला रसोई से नमक का डिब्बा उठाए हुए आती है) अरी, तू बताती क्यो नही कि विमला कहाँ है?

सरला : दादी माँ, मैं डॉक्टर हूँ न। जीजी ने बारात के खाने का निरीक्षण मुझे सौंप रखा है। एक भाजी मे नमक कम निकला है···।

[कहती हुई तेज़ी से बाहर चली जाती है।]

दादी : लो, मेरे सवाल का जवाब दिये बिना ही यह चली गयी। चुड़ैल बहन के ब्याह में डॉक्टरी करती फिरे है। (और भी घबराकर) अरी रधिया, सुना तूने? बारात ने खाना खाना शुरू कर दिया। खाने के बाद ही भाँवरें पड़नी है और···।

[तभी बाहर से बहुत से उपहारों के डिब्बे उठाए हुए अमला आती है।]

दादी : अरी, अमला…।

अमला : दादी माँ, जीजी ने मुझे इन उपहारों को संभालने का काम सौंपा है। रधिया, जरा आना तो।

[अमला ठोकर लगने से लड़खड़ाती है। उपहारों के डिब्बे नीचे गिरते हैं। रधिया आगे बढ़कर संभालती है और उठाकर मेज़ पर रखती है।]

दादी : हर कोई जीजी के हुक्म पर चल रहा है, मेरी कोई नहीं सुनता। (पुकारकर) अरी अमला, बारात खाना भी खाने लगी, परन्तु ब्याह वाली लड़की का कहीं पता नहीं।

अमला : क्यों पता नहीं ?

[तभी सरला मुस्कराती हुई बाहर से आती है।]

सरला : (आकर) दादी माँ, आप कुछ पूछ रही थीं ?

दादी : शुक्र है, किसी को मेरी बात सुनने का समय तो मिला। अरी, मैं पूछती हूँ, वह विमला कहाँ है ?

सरला : दादी माँ, आप परेशान न हों। विमला जीजी बाहर पण्डाल में अपने दूल्हे के पास हैं।

दादी : भगवान तेरा भला करे। मेरी जान में जान आयी। (एकाएक हैरान-सी) लेकिन क्या वह बिना भाँवरों के ही अपने दूल्हे के पास पहुँच गयी ? हे राम, कैसा जमाना आ गया ! अरी जा, उसे बुलाकर ला —साथ में चन्दू और कमला को भी।

सरला : दादी माँ, इस समय कोई नहीं आ सकेगा। आइये, मैं आपको पण्डाल में ले चलूँ। बड़ी रौनक है वहाँ। शहर के बड़े-बड़े लोग, नेता, मन्त्री सरकारी अफसर, पिताजी के मित्र—सभी आये हैं रिसेप्शन में। चलिए।

दादी : नहीं, नहीं ! इतने सारे पराये मर्दों के सामने घूमती हुई मैं क्या अच्छी लगूँगी ?

सरला : तो फिर आइये, ऊपर खिड़की से झाँककर पण्डाल में देखिए।

[सरला दादी माँ को बायीं ओर की खिड़की पर ले जाती है। दादी माँ बाहर देखती है।]

दादी : (खुश होकर) अरे हाँ, पण्डाल में तो बड़ी रौनक है, बड़ी सजावट है, बड़ी धूम-धाम है, बड़ी भीड़-भाड़ है। और हाँ, सरला, बता तो वह विमला कहाँ है ?

सरला : (खिड़की में से इशारा करके) वह देखिए, रमेश जीजाजी के साथ…।

दादी . (परेशान-सी) ऐं, यह मैं क्या देख रही हूँ ? विमला ने शादी का पीला जोड़ा तो पहना नहीं। ओह, यह क्या ? छि, छि ! कैसी निर्लज्ज है यह लड़की। भाँवरें पड़ी नहीं और यह मुँह-सिर उघाड़े मुस्करा रही है, खसम से और पराये मर्दों से बतिया रही है। इसकी जगह मैं होती तो अब तक लाज से धरती में गड़ गई होती। (अमला और रश्मि हँसती हुई पास आ जाती हैं।)

सरला : दादी माँ, यह बेकार की लाज भी क्या ? समाज में जब स्त्री-पुरुष का दर्जा बराबर है, तो …।

दादी : अरी, मेरे साथ बहस करे है। हमारे जमाने में ब्याह वाली लड़की…।

अमला : (हँसते हुए) आपके जमाने में तो ब्याह वाली लड़की ससुराल जाते समय दहाड़ें मारकर ऐसे रोती थी, जैसे…।

दादी : (बात काटकर चकित-सी) तो क्या यह विमला विदा के समय रोयेगी नहीं ? अरी, जाकर उसे समझा दो कि विदा होते समय और नहीं तो झूठमूठ रो दे।

सरला : (हँसकर) झूठमूठ ?

अमला : (हँसते हुए) सरला, तुम डॉक्टर हो। तुम्हारे पास ऐसी कोई दवाई जरूर होगी, जिसे आँखों में डालने से आँसू बहने लगें। (लड़कियाँ हँसती हैं।)

दादी : (खिड़की से झाँकते हुए) अरी लड़कियो, मैं देख रही हूँ कि बारात खाना खा रही है। ऐसे समय तो घर की औरतों को गाली या सीठना गाना चाहिए।

अमला : दादी माँ, सीठना क्या होता है ?

दादी : अरे, तू बड़ी नचैया-गवैया बने है और शादी-ब्याह पर गाया जाने वाला सीठना नहीं जानती ? सीठने में बरातियों का मजाक उड़ाया

जाता है, प्यार-भरी गालियाँ दी जाती हैं…।

सरला : दादी माँ, अमला को ऐसा कोई सीठना सिखा दीजिये न, यह अपने ब्याह में गा लेगी।

अमला : (डाँटकर) मेरा ब्याह…?

रधिया : बारात आने पर सीठना तो गाँव की औरतें गाती हैं, शहर में इसका रिवाज नहीं।

दादी : अरी, रिवाज की बच्ची, तू तो गाँव की है, तुझे कोई सीठना आता है?

रधिया : (शरमाकर) कुछ-कुछ आता है, लेकिन मेरी माँ बहुत अच्छा सीठना गाती है।

दादी : तो जा उसे बुलाकर ला। ब्याह पर सीठने का शकुन तो हो जाए।

[रधिया बाहर जाती है। तभी उधर से ललितमोहन मिठाई लिये हुए आता है—बब्बू के साथ।]

मोहन : (आते हुए) नानी, विमला का ब्याह हो गया। बधाई! लीजिए, मुँह मीठा कीजिए।

दादी : अरे मोहन, यह क्या मजाक कर रहा है? न पण्डित आया, न वेदी सजी, न भाँवरें पड़ीं…।

मोहन : हूँ, तो इसका मतलब है कि इन सरला और अमला ने आपको कुछ नहीं बताया…।

[सरला अमला को एक ओर खींचकर ले जाती है।]

सरला : अमला, मोहन भैया ने पलीते में आग लगा दी, अब धमाका होने ही वाला है।

अमला : आओ, जीजी और पिताजी को खबर करें।

[दोनों तेजी से बाहर जाती हैं।]

दादी : (परेशान-सी) अरे, मोहन बताता क्यों नहीं?

मोहन : नानी माँ, मैं तो दिन भर आपके साथ गाँव के सफर में रहा। यह बब्बू सब कुछ बतायेगा। आप कल कह रही थीं न कि बब्बू को आपने सच बोलना सिखा दिया है?

दादी : हाँ, बब्बू बहुत अच्छा लड़का है। कभी झूठ नहीं बोलता।

मोहन : तो बब्बू, बता अपनी पड़नानी को—आज कचहरी में क्या हुआ था?

बब्बू : विमला मौसी की रमेश मौसा से शादी हुई थी।

दादी : क्या ? कचहरी में विमला की शादी हुई थी ? (धड़ाम से सोफ़े पर बैठते हुए) हाय दैया ! अब तक कचहरी में मुकदमे होते थे, अब शादियाँ भी होने लगीं ? (सिर पर हाथ रखकर) हाय राम, कैसा घोर कलजुग आ गया ! पहले तो अपनी जाति से बाहर ब्राह्मण का घर चुना और अब कचहरी में जाकर भाँवरें डाल लीं। ऐसे ब्याह से तो विमला कुंआरी ही रहती, तो अच्छी थी।(गुस्से से)कहाँ है चन्दू ? मुझे गाँव भेजकर बेटी को कचहरी में ले गया। मेरे जीते जी ऐसा अनर्थ !

[तभी बाहर से पहले रूपचन्द, फिर कमला, कृष्णगोपाल और सरला आते हैं।]

रूपचन्द : (हँसते हुए) माँ, कोई अनर्थ नहीं हुआ। इस अन्तर्जातीय आदर्श विवाह की सारी दिल्ली में सराहना हो रही है। तुम्हें तो आज प्रसन्न होना चाहिए। तुमने विमला की फौरन शादी करने को कहा था न ?

दादी : (गुस्से से) और वह आज कचहरी में हो गई। चन्दू मैं कहती हूँ···।

रूपचन्द : माँ, कचहरी में शादी तो विमला और रमेश का मन रखने के लिए की गई थी। असली शादी तो आज रात को पूरी धार्मिक विधि से पण्डित करायेगा—रात के बारह बजे।

दादी : (शान्त होते हुए) सच कह रहा है न, रे चन्दू ?

रूपचन्द : माँ, मैं भला झूठ क्यों बोलूँगा ?

बब्बू : नानाजी, झूठ मैं भी नहीं बोलूँगा। आज आपकी भी शादी हुई थी न मन्दिर में—मेरी आया से ?

दादी : (एकाएक हैरान-परेशान होकर) क्या ? मेरे चन्दू की शादी ? आया से ?

[ललितमोहन कमला और कृष्णगोपाल की ओर शरारत से देखता है। कमला झपटकर बब्बू को उससे छीन लेती है।]

कमला : (डाँटकर) बब्बू !

दादी : (निढाल-सी) अरे, चन्दू, क्या यह सच है कि तूने आज उस विधवा

आया से शादी कर ली है, जिसे मैंने घर से निकाल दिया था ?

रूपचन्द : **(घबराकर, डरकर)** कमला, तू ही बता मां को। अब तू ही सम्भाल मामले को।

कमला : हां, दादी मां, यह सच है कि आज हम सब लड़कियों ने मिलकर पिताजी की शादी आया से, मतलब यह कि पार्वती से करा दी। आप हठ कर रही थीं न कि पिताजी का ब्याह भी जल्दी हो जाए। पिताजी ने भी सोचा कि विमला के ब्याह में कन्यादान करने के लिए धर्मपत्नी का होना आवश्यक है, इसलिए इन्होंने आज मन्दिर में हम सब की उपस्थिति में अच्छे कुल-गोत्र की विधवा पार्वती से धार्मिक विधि से ब्याह कर लिया।

दादी : **(सोफे पर लुढ़ककर, लड़खड़ाते हुए स्वर में)** विधवा से ब्याह ? मेरे बेटे ने विधवा से ब्याह कर लिया ? मुझे बताया नहीं, पूछा नहीं···। मुझसे छुपाकर ऐसा अधर्म···? **(कहते-कहते आवाज़ डूब जाती है, आंखें मुंद जाती हैं।)**

सरला : **(आगे बढ़कर)** दादी मां, इसमें अधर्म कैसा ? अगर धर्म एक रंडुए पुरुष को दूसरा ब्याह करने की अनुमति देता है, तो विधवा को भी···।

मोहन : **(घबराकर, डांटकर)** सरला, यह नारी-आन्दोलन बाद में चला लेना, पहले नानी की हालत देखो।

रूपचन्द : **(घबराकर)** अरे, क्या हुआ मेरी मां को ?

सरला : **(जल्दी से नब्ज और आंखों की जांच करके)** लगता है, फिर बेहोश हो गई। मैं अभी अपना बैग लेकर आई।

[सरला जल्दी से सीढ़ियां चढ़कर ऊपर जाती है। सब लोग घबरा जाते हैं। कृष्णगोपाल, कमला और ललितमोहन मिलकर दादी मां को सोफे पर लिटाते हैं। रूपचन्द उसके सिरहाने बैठ जाता है। शोर सुनकर पार्वती भी अपने कमरे से भागी-भागी आ जाती है।]

बब्बू : **(कृष्णगोपाल से)** डैडी, क्या पड़नानी फिर सो गई ? भूचाल को बुलाओ।

कमला (डाँटकर) बब्बू !

रूपचन्द (सिसकते हुए) हाय, मैं जानता था कि मेरे ब्याह की खबर सुनकर माँ के दिल को धक्का लगेगा। कमला, मैंने कहा था न कि माँ से पूछ लिया जाए, लेकिन तुम नहीं मानी...।

[सरला बैग लेकर आती है और स्टैथस्कोप लगाकर दादी माँ की जाँच करती है।]

रूपचन्द (रोकर) अरी, अब क्या जाँच कर रही है ? माँ मुझसे नाराज होकर सदा के लिए सो गयी।

दादी (एकाएक उठकर) अरे, सदा के लिए सोयें मेरे दुश्मन !

[सब पहले हैरान होते हैं और फिर खुश होते हैं।]

सब (खुश होकर) दादी माँ फिर जाग गई !

[दादी माँ जोर से हँसती है। सब हैरान होते है।]

दादी (हँसकर) अरे, मैं सोई ही कब थी ? तुम लोगों की परीक्षा लेने के लिए मैंने तो यों ही आँखें मूँद ली थी। (रूपचन्द से) अरे चन्दू, तू क्यों रोने लगा था ? अपनी शादी के दिन ऐसी बदशगुनी ? कहाँ है तेरी बहू ?

बब्बू आया, तुझे पड़नानी बुला रही है।

दादी : (प्यार से डाँटकर) बब्बू, अब यह तेरी आया नहीं, मानी है। पैर छू इनके। (बब्बू पार्वती के पाँव छूता है। पार्वती उसे गले से लगा लेती है।) अरी बहू, तू अपनी सास के पाँव नहीं छूएगी ? (पार्वती शरमाकर दादी माँ के पाँव छूती है और दादी माँ उसके सिर पर हाथ रखकर आसीसें देती है।) अखंड सुहागवती हो ! दूधों नहाओ, पूतों फलो ! (पार्वती को अपने पास बैठा लेती है और बब्बू को अपनी गोद में ले लेती है।) अरे मोहन, अब ला वह मिठाई, मैं मुँह मीठा करूँ। (मिठाई खाती है।) तुम सब मेरी इन हरकतों पर हैरान हो रहे होगे। हैरान होने की कोई बात नहीं। आज मैं बहुत खुश हूँ। चन्दू से पार्वती का ब्याह इस कमला और कृष्णगोपाल ने नहीं, एक तरह से मैंने कराया है। पूछो कैसे ? उस दिन मैंने पार्वती को घर से निकाल दिया था। बाद में बब्बू से पता चला कि इन लड़कियों और कृष्ण-

गोपाल ने इसे पहले ऊपर के कमरे में छुपाया, फिर आफिस में छुपाया और फिर एक गैस्ट-हाउस में ठहराया। (बब्बू मुस्कराता है।)

कृष्ण : (धीरे से) कमला, अपना यह बब्बू ही विभीषण बन गया।

कमला : (डाँटकर) किशू, तुम चुप नहीं रहोगे ?

दादी : (हँसकर) लो, यह कमला अब भी अपने पति को डाँट रही है, यह जानते हुए भी कि इसकी यह नई माँ इसके पति की मौसी लगती है!

रूपचन्द : ऐं, यह मैं क्या सुन रहा हूँ ? (कमला और कृष्णगोपाल झेंपते हैं और शेष सब हैरान होते हैं।)

दादी : अरे बेटा, प्रेम में लोग अंधे हो जाते हैं, तू बहरा हो गया था। (हँसकर) अरे, शरमा नहीं ! मुझे बब्बू से पता चल गया था कि तू इसकी माया से प्यार करता है। खैर, जब मुझे पार्वती के ऊँचे कुल-गोत्र का भी पता चल गया, तो मैंने चन्दू से इसका ब्याह कराने का फैसला किया। मैं जानती थी कि चन्दू मेरे सामने न तो पार्वती की बात करेगा और न ही इससे ब्याह करेगा। तो मैंने गाँव जाने की योजना बनाई और जाते-जाते सबको सुनाकर यह झूठ-मूठ ऐलान भी कर दिया कि मैं अपने चंदू के लिए गाँव से बहू ढूंढकर ला रही हूँ। (हँसती है।) और जो मैंने सोचा था, वही सब मेरे पीछे हुआ। और हाँ, कमला, बार-बार कार बिगाड़ कर देरी करने वाले ड्राइवर को इनाम दे दिया न ? (कमला शर्मिन्दा होती है।)

मोहन : (हँसते हुए) मानो माँ, आप तो जीजी और जीजाजी से भी ज्यादा चालाक निकलीं।

दादी : अरे, चालाक नहीं, समझदार कह। समझदार वह होता है, जो समय के साथ अपने आपको बदल ले।

रूपचन्द : (लपककर अपनी माँ के पाँव पकड़ लेता है।) माँ, तुम धन्य हो !

दादी : अरे, छोड़ मेरे पाँव। आज से तू माँ का गुलाम नहीं, जोरू का गुलाम बन। (सब हँसते हैं) अरी सरला, अब तुझे यकीन हो गया न कि मैं विधवा-विवाह के खिलाफ़ नहीं। (एकाएक) अरे, यह क्या ? तुम सब यहाँ इकट्ठे हो गये। वहाँ पंडाल में विमला के दूल्हा, सास-ससुर और

मेहमानों की कौन देख-भाल कर रहा है ?

अमला : (बाहर से आते हुए) दादी माँ, देख-भाल का महकमा आजकल आपकी इस छोटी पोती के पास है। देखिये, मैं आपके पास किन्हें लेकर आई हूँ !

[अमला के पीछे-पीछे बाहर वाले दरवाजे से दुल्हन के रूप में सजी हुई विमला अपने पति रमेश शर्मा के साथ आती है ।]

अमला : (जैसे उद्घोषणा करते हुए) नई दुल्हन विमलारानी और उसके दूल्हा श्री रमेश शर्मा पधार रहे हैं ! (दोनों आगे बढ़कर दादी माँ, रूपचन्द और पार्वती के पाँव छूते हैं। तीनों उनको आशीर्वाद देते हैं।)

दादी : (विमला को प्यार से अपने पास बैठाकर) अरी विमला, एक बात तो बता। तूने कचहरी में जाकर क्यों शादी की ? (विमला शरमाती है।)

रमेश : (हँसते हुए) ताकि यह जब जी चाहे मुझे तलाक दे सके।

दादी : (हँसते हुए) वाह, शादी के साथ ही तलाक की भी तैयारी !

मोहन : ठीक ही तो है, नानी माँ। आप ही बताइये, आज के जमाने में तलाक का कारण क्या होता है ?

दादी : शादी।

[सब हँसते हैं।]

पर्दा गिरता है।

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—कोठी का ड्राइंग-रूम।
समय—रात के दस बजे।

[जब पर्दा उठता है, तो ड्राइंग रूम खाली है। बिजली की रोशनी भी मद्धिम है। बाहर के पोर्टिको वाले दरवाजे से बाईं ओर के भाग मे बिजली का प्रकाश आ रहा है। उसी प्रकाश मे जोड़ूराम पोर्टिको से आता हुआ दिखाई देता है। वह परेशान है और बार-बार सिर के बाल तोडता है।]

जोड़ू : (स्वगत) वह अभी तक नही आई। दादी माँ ने हुक्म दिया था कि बाहर वाला यह दरवाजा रात को ठीक दस बजे बंद हो जाना चाहिए। दस तो बजने ही वाले हैं। अगर मैंने दरवाजा बद कर दिया, तो वह···वह अमला बीबी नाराज होगी और···और···(**सिर का बाल तोड़कर**) ओह, कैसी मुसीबत है! (**तभी दादी माँ के कमरे से ललितमोहन, दादी माँ और रधिया के हँसने की आवाज़ आती है। उधर देखते हुए**) ओह, यह ललितमोहन बंसल! बंसल नहीं, बंसी वाला! रधिया को पढ़ाने के बहाने रोज रात को यह दादी माँ के कमरे में खूब रास रचाता है! और रधिया? वह राधा बनकर बंसी वाले की हो गई है। मुझसे अब सीधे मुँह बात भी नही करती। काटने को दौड़ती है। हाय, राधा, तेरे प्रेम मे मैं रह गया आधा! गाँव से माँ की चिट्ठी आई है कि वह बीमार है। उसे क्या पता कि उसका बेटा खुद ही बीमार है। अब मेरा इलाज कौन करे?

हे री, मैं तो प्रेम-दिवाना, मेरा दरद न जाने कोय,
दरद का मारा बन-बन डोलूँ, बैद न मिलयो कोय।

[जोड़ूराम माहें भरता हुआ कुर्सी पर बैठ जाता है। उसी समय बाहर वाले दरवाज़े से माली आता है।]

माली : अरे, किसे वैद नहीं मिला, जोड़ूराम ?

जोड़ू : (चौंककर, उठकर) कौन ? (माली को देखकर बिगड़कर) माली घासीराम, तुम्हें शर्म नहीं आती ? वक़्त-बेवक़्त भूत की तरह मेरे पीछे लगा रहता है।

माली : (हँसकर) तुम जब-जब मुझे बाल-तोड़ जादू से बुलाते हो, (भूत की तरह बोलकर) मैं प्रकट हो जाता हूँ। ख़ैर, सुना है कि तुम्हें माँ की बीमारी की चिट्ठी आई है।

जोड़ू : हाँ, माँ ने फ़ौरन बुलाया है। छुट्टी लेकर कल सुबह गाँव जा रहा हूँ। अब तू भी जा।

माली : जाता हूँ। मैं तो आया हूँ कि रधिया की पढ़ाई ख़त्म हो चुकी हो, तो उसे ले जाऊँ।

जोड़ू : अरे, वह मोहन बंसीवाला, नहीं, नहीं, ललितमोहन बंसल उसकी पढ़ाई क्यों ख़त्म होने देगा ?

माली : तुम ठीक कहते हो, जोड़ूराम। रधिया गाँव में छठी क्लास तक पढ़ी थी। मोहन बाबू उसे आठवीं क्लास का इम्तहान दिला रहे हैं। और फिर दसवीं क्लास का इम्तहान दिलायेंगे। बड़े अच्छे हैं मोहन बाबू! और हाँ, एक मज़े की बात सुनो। रधिया बता रही थी कि दादी माँ भी उसके साथ मोहन बाबू से पढ़ती हैं। अब अख़बार भी पढ़ने लगी हैं।

जोड़ू : (कुछ अधीर होकर) अच्छा, यह ख़बर सुन ली, अब तू जा यहाँ से।

माली : अरे जोड़ूराम, तू मुझे इस तरह भगा क्यों रहा है ? (ज़रा रुककर) हूँ, समझा। अम्मा बीबी बाहर से आने वाली है और तू नहीं चाहता आते हुए

जोड़

मिलेगा।

रहना

जोड़ू : (परेशान-सा) यह क्या बकता है, माली के बच्चे ?

माली : अरे मर्द, बकता नहीं, जो जानता हूँ, वही कह रहा हूँ। घर में तो अमला बीबी कह गई हैं कि वह अपने नृत्य-संगीत के स्कूल के जल्से में उर्वशी का नाटक करने जा रही हैं, लेकिन मैं जानता हूँ कि वह अपने उस प्रेमी कवि कोमल से मिलने गई हैं। अरे, अब बोलता क्यों नहीं ? मैं यह भी जानता हूँ कि दादी माँ अमला बीबी का ब्याह उस जनानड़े प्रेमी से कभी नहीं होने देंगी।

जोड़ू : (बिगड़कर) क्यों नहीं होने देंगी ? प्रेमियों के ब्याह तो इस बड़े घर की रीत है रीत। सबसे पहले इस बड़े घर की बड़ी लड़की कमला ने बाप की कम्पनी के क्लर्क कृष्णगोपाल से प्रेम किया और फिर ब्याह किया। अभी पिछले दिनों दूसरी लड़की विमला ने रमेश शर्मा से प्रेम किया और फिर ब्याह किया। और बड़े मालिक को,घर की आया से क्यों ब्याह करना पड़ा, वह तो तू जानता ही है।

माली : लेकिन यह तै है कि दादी माँ अमला बीबी का ब्याह उस मामूली-से कवि कोमल से कभी नहीं होने देंगी। याद है, उस रात दादी माँ ने उस जनानड़े कवि को कैसे धक्के मार-मार कर कोठी से निकाल दिया था।

जोड़ू : अरे, कोठी से निकाल दिया था, अमला बीबी के दिल से तो नहीं। (तभी दादी माँ के कमरे का दरवाज़ा खुलता है। चौंककर, घबराकर) वे लोग आ रहे हैं। (माली को बाहर धकेलते हुए) आ बाहर चलें।

[दोनों बाहर चले जाते हैं। दादी माँ अपने कमरे से हँसती हुई निकलती है। उसके साथ ललितमोहन और रधिया आते हैं। दादी माँ के हाथ में अख़बार है और रधिया ने पुस्तकें और कापियाँ उठायी हुई हैं।]

दादी : (हँसते हुए) हाँ, हाँ, मोहन, कह दे कि बूढ़ा तोता क्या पढ़ेगा !

मोहन : नहीं, नानी माँ, आप तो···।

दादी : अरे, कुछ भी कह, मैं हूँ तो बूढ़ा तोता ही न। लेकिन नहीं, ज्ञान पाने के लिए उम्र का ख्याल नहीं करना चाहिए। मैंने सोचा, अख़बार पढ़ने लायक तो हो जाऊँ। हमारे ज़माने में लड़की को रामायण पढ़ना

ही सिखाया जाता था। बस, मेरी पढाई भी रामायण तक ही हुई थी। लेकिन अब सुना है कि आज के जमाने में जो अखबार नहीं पढ़ता, लोग उसे गंवार समझते है। (सोफ़े पर बैठकर अखबार पर नज़र डालते हुए) मोहन, ज़रा बत्ती तो जलाना। (ललितमोहन स्विच दबाकर बिजली जलाता है) वैसे इस अखबार में मेरे पढने लायक बहुत कुछ होता नही। अधिकतर तो फ़िल्मों के इश्तिहार और फ़िल्मों की खबरें ही रहती है इसमें। सुन, इन फ़िल्मो में होता क्या है?

रधिया : दादी माँ, आपने कभी कोई फिल्म नहीं देखी?

दादी : अरी, देखी थी सिर्फ़ एक बार। इस मोहन के नाना मुझे 'राजा हरिश्चन्द्र' की फ़िल्म दिखाने ले गये थे। वहाँ सत्यवादी राजा और रानी की विपत्तियाँ देखकर मैं इतना रोई, इतना रोई कि इसके नाना ने फिर कभी मुझे कोई सिनेमा नही दिखाया। अरे मोहन, अब क्या वैसी धार्मिक फ़िल्में नही आतीं?

मोहन : आती हैं, लेकिन बहुत कम। ज्यादातर फ़िल्में देवी-देवताओं के बारे में नही, आजकल के लडके-लड़कियो के बारे मे होती हैं।

दादी : क्या करते हैं ये लड़के-लडकियाँ फ़िल्मों मे?

मोहन : एक-दूसरे को टक्कर मारते हैं? (कनखियों से रधिया की ओर देखता है।)

दादी : (हैरानी से) टक्कर मारते हैं? क्या मतलब?

मोहन : मतलब यह कि लड़के-लड़की में से एक कार, साइकिल या छकडा-गाड़ी मे होता है, दूसरा पैदल। अगर कॉलेज का प्रसग हो, तो लड़की के हाथो में किताबों का ढेर होता है। इस हालत में लड़का-लड़की एक-दूसरे से टकरा जाते हैं।

दादी : फिर क्या होता है?

मोहन : लड़की लड़के को बड़े जोर से थप्पड़ मारती है।

दादी : फिर क्या होता है?

मोहन : लड़के-लडकी में प्यार हो जाता है।

दादी : वाह, प्यार करने का अजीब फिल्मी तरीका है यह! अरे हाँ, याद आया। दो-तीन दिन हुए मैंने बब्बू से कहा था—बब्बू, तुमसे मुझे

बहुत प्यार हो गया है। वह बोला, "झूठ! आपने मुझे अभी तक थप्पड़ तो मारा ही नहीं।"

रधिया : (हँसते हुए) दादी माँ, बब्बू ने आपसे यह नहीं कहा, "आइये, अब बन्दरों की तरह उछल-कूदकर गाना गायें—मुझे तुमसे प्यार हो गया···?"

दादी : छि-छि. ! इन फिल्मों ने बच्चों को कितना बिगाड़ दिया है !

मोहन : दरअसल हमारा यह बब्बू बहुत फिल्में देखता है—कभी मम्मी-डैडी के साथ, कभी मौसियों के साथ···।

दादी : अरे, मैं जानती हूँ। इस घर में सभी को मलेरिये जैसा फ़िल्मेरिया है। क्या वक़्त हुआ है ?

मोहन : (कलाई की घड़ी देखकर) दस बज गये है, नानी माँ।

दादी ऐं, बातों-बातों मे इतनी देर हो गई। सभी सो गये हैं। जा, मोहन, रधिया को इसके घर छोड़ आ।

मोहन · अच्छा, नानी माँ।

[रधिया ललितमोहन के साथ जाने लगती है।]

दादी : लेकिन ठहर। जोड़ूराम ने ताला लगाकर बाहर वाला दरवाजा अन्दर से बन्द कर दिया होगा। मैंने ही उससे ऐसा करने को कहा था। जा मोहन उससे चाबी ले आ।

[मोहन रसोई की ओर जाते-जाते रुक जाता है।]

मोहन : लेकिन, नानी माँ, बाहर का दरवाज़ा तो खुला पड़ा है।

दादी : (हैरान होकर) क्या कहा, दरवाज़ा खुला पड़ा है ? अभी तक जोड़ूराम ने बन्द नहीं किया ? कहाँ है जोड़ूराम ? बुला उसे।

मोहन : (रसोई के दरवाजे पर जाकर, पुकारते हुए)जोड़ूराम ! जोड़ूराम !

[जोड़ूराम घबराया हुआ, डरा हुआ, सिर के बाल तोड़ता हुआ बाहर से आता है। रधिया अपने आप बाहर चली जाती है।]

जोड़ू : क्या हुक्म है, मोहन बाबू ?

मोहन : (गुस्से से) हुक्म के बच्चे, दरवाज़ा अभी तक बन्द क्यों नहीं किया ?

दादी : मैंने कहा नहीं था कि बाहर वाला दरवाज़ा रात को दस बजे बन्द हो जाएगा ? तूने बन्द क्यों नहीं किया ? बाहर क्या कर रहा था ?

जोड़ू : (हकलाकर) जी, वह मैं बाहर···जरा खुली हवा में···।

मोहन : (दादी माँ के पास आकर धीमे से) लगता है, अमला अभी तक नहीं आई।

दादी : (चौंककर) क्या ? अमला अभी तक नहीं आई ? क्यों, जोड़ू राम ?

जोड़ू : (हकलाकर) जी···मैं ··मैं ··झूठ नहीं बोलूँगा। अमला बीबी अभी तक···।

दादी : (एकाएक भड़ककर) हद हो गई। दस बज गये और वह लड़की अभी तक नहीं बाहर···(गुस्से से पुकारकर) चन्दू, चन्दू ! अरे मोहन, जा अपने मामा को बुलाकर ला···।

[रूपचन्द कुर्ते-पाजामे में अपने कमरे से भागा-भागा आता है। उसके पीछे-पीछे पार्वती भी आती है। जोड़ू राम चुपके से रसोई में चला जाता है।]

रूपचन्द : क्या बात है, माँ ?

दादी : कुछ पता है, दस बज गये हैं और तेरी वह लाडली बेटी अमला अभी तक घर नहीं आई ? ओह, मेरा तो चिन्ता से दिल बैठा जा रहा है। नाचने-गाने वाली कुँआरी जवान लड़की इतनी रात गये तक घर से बाहर ! कहीं कुछ हो-हवा गया, तो हम मुँह दिखाने लायक नहीं रहेंगे। ओह, मेरा तो जी चाहता है कि मैं दीवार से टक्करें मार-मारकर अभी इसी वक्त अपने आपको खत्म कर डालूँ।

रूपचन्द : माँ, इतना परेशान होने की कोई बात नहीं। स्कूल के प्रिंसिपल साहब अमला को अपने साथ लेकर गये थे, वही उसे घर छोड़ जाएँगे।

दादी : अरे, याद है, उस बुड्ढे प्रिंसिपल ने क्या कहा था ? कहा था कि स्कूल का वह नाच-गाने का जल्सा सात बजे तक खत्म हो जाएगा। सात बजे जल्सा खत्म हुआ, तो अमला को साढ़े सात आठ बजे तक घर पहुँच जाना चाहिए था। अब बज गये हैं दस। ओह, मेरा मुँह क्या ताक रहा है, चन्दू ? जा अमला को ढूँढकर ला। मोहन, जल्दी से कार निकाल।

मोहन : कार की चाबी तो कमला जीजी के पास है।

दादी : ओह, इस कमला ने घर की हर चीज पर कब्जा कर रखा है। जा,

ऊपर जाकर उससे कार की चाबी ला।

[मोहन जल्दी से सीढ़ियों से होकर ऊपर जाता है।]

दादी : (बड़बड़ाते हुए) शाम के खाने के समय मैंने पूछा कि अमला आ गई? सबने कहा आ जाएगी और सब अपने-अपने कमरे मे जाकर सो गये। इस घर मे चिन्ता करने के लिए सिर्फ़ मैं ही रह गयी हूँ। बहू, जाते समय अमला तुमसे कुछ कह गई थी?

पार्वती : (दुःख से) मुझसे? माँ जी, आप तो जानती ही हैं कि इधर उसने मुझसे बात तक करना बन्द कर दिया है। मैं उसे एक आँख नहीं भाती। वह समझती है, जैसे मैंने उससे उसके बाप को छीन लिया है।

रूपचन्द पार्वती, मैं तुमसे कई बार कह चुका हूँ कि ज़रा धीरज से काम लो। धीरे-धीरे अमला का व्यवहार ठीक हो जाएगा।

दादी . अरे, क्या ठीक हो जायेगा! तेरे लाड़-प्यार ने उसे बिगाड़ दिया है।

रूपचन्द माँ, क्या बताऊँ, जब तुम्हारी बहू हीरादेवी का देहान्त हुआ, तो अमला बहुत छोटी थी। मैंने ही उसे माँ का प्यार दिया।

पार्वती · (कड़वाहट से) और माँ के गहने भी उसे दे दिये।

दादी : अरे चन्दू, यह मैं क्या सुन रही हूँ?

रूपचन्द . कुछ नहीं, माँ। हीरादेवी की मौत के बाद मैंने उसके गहनों का डिब्बा अमला को दे दिया था सभालने के लिए।

दादी · तो अब वह डिब्बा पार्वती को मिलना चाहिए।

रूपचन्द : लेकिन माँ, एक दिन अमला की भी तो शादी होगी। उन्ही गहनो के साथ हम उसके हाथ पीले कर देंगे।

[तभी मोहन के पीछे-पीछे गाउन मे कमला और नाइट-सूट पहने कृष्णगोपाल सीढ़ियों से उतरकर आते हैं। कमला घूरकर स्थिति का जायजा लेती है।]

मोहन : नानी माँ, मैं कार की चाबी ले आया हूँ। आइये, मामाजी।

कृष्ण : नही, पिताजी, आप रुकिये। मोहन के साथ मैं जाता हूँ।

कमला : किशू, पहले स्कूल में जाना।

[ललितमोहन और कृष्णगोपाल बाहर वाले दरवाज़े की तरफ़ जाते हैं।]

दादी : अरी कमला, देख लिये अपनी छोटी बहन के लच्छन !

[तभी बाहर से ललितमोहन और फिर कृष्णगोपाल के साथ अमला आती हुई दिखाई देती है। वह उर्वशी का श्रृंगार किये हुए है।]

मोहन : (आते हुए) अमला आ गई, अमला आ गई।

कमला : मैं तो जानती थी कि अमला अपने आप आ जायेगी।

दादी : कमला, तू चुप रह। अमला, घड़ी देखी ? कहाँ थी अब तक तू ?

अमला : (बात बनाते हुए) दादी माँ, स्कूल के उस उत्सव में मेरा कार्यक्रम काफी देर से शुरू हुआ। अन्त मे कुछ चाय-पानी था। सो देर हो ही गयी।

[तभी सीढियों से बब्बू आँखें मलता हुआ उतरता है।]

रूपचन्द : तो बेटी, तुम सीधी स्कूल से आ रही हो ?

अमला . हाँ, पिताजी।

बब्बू : (चिल्लाकर) बिल्कुल झूठ।

[सबकी नजरें बब्बू की तरफ़ उठ जाती है। अमला सकपकाती है।]

कमला : (डाँटकर) बब्बू, तुझे किसने कहा था नीचे आने को ? किशू, जाओ, इसे ले जाकर सुला दो।

[कृष्णगोपाल बब्बू को गोद मे उठाने लगता है।]

बब्बू : ठहरिये, डैडी। पड़नानी कहती है—अच्छे बच्चे सदा सच बोलते हैं। यह छोटी मौसी अच्छा बच्चा नही। आज दोपहर को छोटी मौसी कवि कोमल को फोन कर रही थी। मैं यहाँ उनके पीछे सीढियों मे खड़ा था। ये कवि कोमल से कह रही थी कि आज शाम को जल्से के बाद उससे मिलेंगी।

[सब स्तब्ध रह जाते हैं।]

कमला : (गुस्से से) किशू, यह बकवास बन्द नहीं करेगा। ले जाओ इसे ऊपर।

[कृष्णगोपाल बब्बू को ऊपर ले जाता है।]

दादी : कमला, सच बोलने वाले बेटे को शाबाश देने की बजाय डाँट रही

हो ! खैर, अब बोल, अमला ।

अमला : (अकड़कर) हाँ, मैं कोमल जी से मिलकर आयी हूँ ।

दादी : मेरे रोकने पर भी ?

अमला : मैं उनसे आज ही नहीं, पहले भी कई बार जाकर मिल चुकी हूँ । पहले वे मेरे गुरु थे । अब मैंने उन्हें तन-मन से पति-परमेश्वर के रूप में स्वीकार कर लिया है । इसलिए उनसे मिलने में कोई पाप नहीं । आपके रोकने पर भी मैं उनसे मिलूँगी ।

[कहकर सीढ़ियों की ओर जाती है ।]

रूपचन्द : (बिगड़कर) अमला, अपनी दादी से इस तरह बात करते हुए तुझे शर्म नहीं आई ?

दादी : तू चुप रह, चन्दू । ऊपर जाने से पहले मेरी भी बात सुन ले, अमला । मुझे शक था कि रात को पिछले दरवाज़े से तू बाहर जाती है । आज सुबह मैंने उस पर ताला डलवा दिया था और जोड़ूराम से यह दरवाज़ा रात को ठीक दस बजे बन्द करने को कह दिया था । कल से मैं लाठी लेकर इस दरवाज़े पर बैठूँगी । अगर तूने बाहर जाने की कोशिश की, तो मैं तेरी टाँगें तोड़ दूँगी । मैं तुझे उस जनानड़े कवि से कभी नहीं मिलने दूँगी ।

अमला : दादी माँ, आप भूलती हैं कि मैं बालिग हूँ और कानून ने मुझे अपना जीवन-साथी चुनने का पूरा अधिकार दे रखा है । मैंने कोमल जी से शादी करने का निश्चय कर लिया है । आपकी या किसी की भी कोई धमकी मेरे निश्चय को बदल नहीं सकती ।

[अमला सीढ़ियों पर चढ़ने लगती है ।]

दादी : (चिल्लाकर) अरी, जब मैं तुझे इस कोठी से बाहर पाँव रखने नहीं दूँगी, तो कैसे तू अपने उस कवि से शादी करेगी ?

अमला : (पलटकर) वैसे ही, जैसे इस घर के और लोगों ने अपने-अपने प्रेमियों और प्रेमिकाओं से शादी की है ।

[अमला यह कहकर तेज़ी से ऊपर चली जाती है । कुछ देर के लिए चारों ओर सन्नाटा छा जाता है ।]

कमला : (कुछ देर बाद) दादी माँ, अगर आप बुरा न मानें, तो एक बात कहूँ ।

दादी : (बेहद दुःखी होकर) हाँ, कमला, तू भी अपनी कह ले। वह तो मेरी उतारकर मेरे हाथ मे दे गई है।

कमला दादी माँ, अमला नासमझ है। मैं उसकी ओर से माफी माँगती हूँ।

रूपचन्द : हाँ-हाँ, अमला नासमझ है। नासमझ ही नही, बहुत भोली है।

दादी : *अरे, इसीलिए तो मै उसे मनमानी नही करने दे रही। मुझे डर है कि* अपने भोलेपन मे वह कही धोखा न खा जाए। सरला कुछ दिनो से अस्पताल मे रात की ड्यूटी पर जाती है। मुझे उसकी कोई चिन्ता नही, क्योकि मैं जानती हूँ कि वह अपना भला-बुरा सब समझती है। लेकिन मुझे अमला की चिन्ता है। बचपन में एक कहावत सुनी थी— 'साज-सिंगार नारि को साजे, मर्द करे तो झूठा बाजे।' उस दिन उस कवि को देखते ही मुझे लगा था कि औरतों की तरह सजने-सँवरने *वाला यह आदमी ठीक नही।*

कमला · नही, दादी माँ, कोमल जी श्रीकृष्ण के बहुत बडे भक्त हैं, बहुत बडे कवि हैं, बहुत बडे सगीतकार हैं। वे हर शनिवार-रविवार को वृन्दावन जाकर अपने गुरु स्वामी हरिदास की समाधि पर काव्य और संगीत की साधना करते है। अपनी इसी साधना के कारण अभी तक उन्होंने शादी नही की।

मोहन : लेकिन, जीजी, मैंने तो सुना है कि कोमलजी मथुरा के पास के किसी *गाँव के रहने वाले हैं और हर शनिवार-रविवार को वे अपने गाँव* जाते हैं।

[सीढियों पर कृष्णगोपाल दिखाई देता है।]

रूपचन्द . अरे, वृन्दावन भी तो आखिर एक गाँव ही है। माँ, कमला ठीक कहती है। हमारा सौभाग्य है कि देश के इतने बडे कवि और कलाकार ने हमारी अमला को पसन्द किया है। कोमल जी से शादी करके अमला भी देश की बहुत बडी कलाकार बन जायेगी। और हाँ, कोमल जी का *आगे-पीछे कोई नही। अमला बहुत सुखी रहेगी।*

दादी : ठीक है, लेकिन तेरा यह महान् कलाकार कुछ कमाता भी है या नही?

कमला : (कृष्णगोपाल की ओर इशारा करके) यह बात आप इनसे पूछिए।

कृष्ण : दादी माँ, कोमल जी मेरे मित्र हैं। उनका बड़े-बड़े नेताओं, अधिकारियों और सेठों से मेल-जोल है। मैं जानता हूँ कि वे हर महीने कवि-सम्मेलनों से कोई दो-तीन हज़ार रुपये कमाते हैं। नृत्य-संगीत विद्यालय से उन्हें कोई हज़ार-बारह सौ माहवार अलग मिलते हैं।

रूपचन्द : इस तरह कोमल जी की मासिक आय तीन-चार हज़ार से कम नहीं। माँ, मेरा तो विचार है कि कोमल जी से अमला की शादी कर ही दी जाए।

दादी : जल्दी न कर, चन्दू, मुझे सोचने दे।

पार्वती : माँ जी, जब सब चाहते हैं, तो इसमें सोचने की क्या बात है ? लड़का अच्छा है, तो···।

दादी : (झिड़ककर) चुप रह, बहू। मैं घर की बड़ी हूँ। मुझे सोचने का भी अधिकार नहीं क्या ? और तू उस कवि को लड़का कहे है ? अरी, ३०-३५ साल का पूरा मर्द है मर्द। खैर, रात काफी हो गई है। तुम सब अब जाकर सोओ। और हाँ, कमला, अपनी उस छोटी बहन से कह देना, जब तक शादी का फैसला न हो जाय, तब तक वह घर से बाहर जाने की कोशिश न करे। मैं सचमुच लाठी लेकर दरवाज़े पर बैठूँगी।

[कमला और कृष्णगोपाल अप्रसन्न-से सीढ़ियों पर चढ़ते हैं।]

रूपचन्द : माँ, तुम भी चलकर सोओ न।

दादी : अरे, सोती हूँ। तू जा अपने कमरे में। बहू, तू भी जा।

[पार्वती सास के पाँव छूकर रूपचन्द के साथ अपने कमरे में जाती है।]

मोहन : नानी माँ, मैं भी···।

दादी : (हाथ पकड़कर) अरे, तू बैठ मेरे पास। (मोहन दादी माँ के चरणों में बैठ जाता है।) मोहन, मेरा जी बहुत घबरा रहा है। सबने उस कवि की तारीफ़ की, उससे अमला की शादी की वकालत की, लेकिन पता नहीं क्यों, मेरी तसल्ली नहीं हुई। (धीमे-से) अरे, सुन। सब कहते हैं कि तू बड़ा चतुर-चालाक है। क्या तू उस कवि के घर-बार, कुल-गोत्र, चाल-चलन, सगे-सम्बन्धियों का पता लगा सकता है ?

मोहन : क्यों नहीं, नानी माँ। आप हुक्म करें, तो मैं कल से ही उस कवि के

पीछे लग जाता हूँ।

दादी : अरे हाँ, कल शनिवार है। कल वह कवि अपने गाँव जाएगा। लेकिन मोहन, तू यहाँ घर के लोगों से जाने का क्या बहाना करेगा?

मोहन : मामाजी जानते हैं कि पीछे गाँव में मेरी जायदाद का कुछ झगड़ा है। मैं वह झगड़ा निपटाने गाँव जा रहा हूँ।

दादी : हां, हां, यह बहाना ठीक रहेगा। लेकिन सब पता लगाकर जल्दी लौट आना और किसी को कानों-कान खबर न हो।

मोहन : आप चिन्ता न कीजिए।

[मंच पर दृश्य-समाप्ति-सूचक अँधेरा हो जाता है]

दूसरा दृश्य

स्थान—कोठी का ड्राइंग-रूम।
समय—दो दिन बाद, तीसरा पहर।

[अमला फ़ोन पर बात कर रही है। इधर सोफ़े के पास कुर्सियाँ रखकर रूपचन्द, कमला और कृष्णगोपाल बैठे हैं। सामने डाक रखी हुई है। कमला के हाथ में सिनेमा के आठ टिकट हैं। कृष्ण-गोपाल और रूपचन्द के चेहरों पर आश्चर्य का भाव है। पास खड़ा बब्बू बहुत खुश है। तभी लाठी लिये हुए दादी माँ अपने कमरे से निकलती है। अमला को फोन करते देखकर उसके माथे पर त्यौरी चढ़ जाती है। बब्बू उसकी ओर भागता है।]

बब्बू : पड़नानी! पड़नानी!! सिनेमा के आठ टिकट आए हैं।

दादी : (गुस्से से) भाड़ में गया सिनेमा और सिनेमा के टिकट। अमला, किसे फोन कर रही है?

कमला : दादी माँ, अमला किसी को फोन नहीं कर रही है। इसकी सहेली मेनका का अभी-अभी फ़ोन आया था। उसी को यह सुन रही है।

दादी : लेकिन इस मेनका नाम की सहेली का इसे कल भी फ़ोन आया था। कल इसने अमला को अपने जन्म-दिन की पार्टी में बुलाया था। आज

यह क्या कह रही है ? अरी अमला, बोलती क्यों नहीं ?

अमला : दादी माँ, यह गिला कर रही है कि कल मैं इसकी बर्थ-डे पार्टी में क्यों नहीं पहुँची। आप ही बताइये, जब आप दरवाज़े पर लाठी लिये खड़ी थीं, तो मैं कैसे इसकी पार्टी में पहुँच सकती थी ?

दादी : ठीक है, ठीक है। अब यह फ़ोन बन्द कर।

अमला : अच्छा, दादी माँ। (फ़ोन पर) प्यारी मेनका, अब तक तो मेरे बाहर जाने और फ़ोन करने पर ही प्रतिबन्ध था, अब फ़ोन सुनने पर भी प्रतिबन्ध लग गया है। क्या ?...हाँ, हाँ, तुम्हीं आ जाओ...क्या ? ...हाँ, तुम्हारा प्यार मुझे मिल गया...हाँ, हाँ, सन्देश भी मिल गया। धन्यवाद ! अब मैं फ़ोन बन्द करती हूँ। **(रिसीवर नीचे रखती है और चुपचाप वहीं खड़ी हो जाती है।)**

बब्बू : पड़नानी जी, अब मेरी बात भी सुनिये। सिनेमा के आठ टिकट आये हैं। अभी चलना है। अमला मौसी भी हमारे साथ चलेंगी। मैं नई नानी को भी बताता हूँ।

[कहता हुआ बब्बू रसोई में जाता है।]

दादी : अरे चन्दू, यह बब्बू क्या कह रहा है ? कहाँ चलना है ?

रूपचन्द : (पास आते हुए, हँसकर) माँ, अभी हम आज की डाक देख रहे थे कि एक लिफाफे से आज के मैटिनी-शो के फ़र्स्ट क्लास के आठ टिकट निकले—फिल्म 'सम्पूर्ण रामायण' के आठ टिकट।

दादी : टिकट किसने भेजे ?

रूपचन्द : यही तो पता नहीं चल रहा। साथ में कोई चिट्ठी भी नहीं। हम हैरान हैं कि आठ टिकटों का यह गुमनाम उपहार...।

कमला : पिताजी, मुझे लगता है, यह आपके दोस्त सरदार मिल्खासिंह की शरारत है। मैंने सुना है कि उन्होंने ठेकेदारी के साथ-साथ अब फिल्म-डिस्ट्रीब्यूशन का भी काम शुरू कर दिया है।

रूपचन्द : (चुटकी बजाकर) अरे हाँ, कमला, तुम्हारा अनुमान बिल्कुल ठीक है। ऐसे मज़ाक करने की मिल्खासिंह की पुरानी आदत है। मैं अभी उसे फ़ोन करता हूँ।

[पार्वती रसोई से बब्बू के साथ आती है।]

कृष्ण : पिताजी, फोन तो बाद में भी हो सकता है। मैंने जाँच कर ली है, आठों के आठों टिकट असली हैं। सवा तीन बज रहे हैं। साढ़े तीन बजे मैटिनी-शो शुरू हो जायेगा। अगर हम अभी नहीं चले, तो ये फ़र्स्ट क्लास के आठों टिकट बेकार हो जायेंगे।

कमला : पिताजी, किशू ठीक कहता है। हमें फौरन चल देना चाहिए। आज हमारे आफिस में कोई काम तो है नहीं। किसी ने चाहे गुमनाम ही उपहार भेजा है, उसका निरादर नहीं होना चाहिए।

कृष्ण . और कहीं दूर जाना भी नहीं। हमारी कोठी के सामने ही तो है सिनेमा-हॉल।

रूपचन्द · तो चलो, माँ को भी साथ ले चलते हैं। दो मिनट का रास्ता है।

दादी अरे, मैं नहीं देखती सिनेमा-विनेमा। तुम सब जाओ। अमला को भी ले जाओ।

रूपचन्द · माँ, यह सिनेमा-विनेमा नहीं, भगवान श्रीराम की सम्पूर्ण रामायण है। तुम रोज़ जो रामायण पढ़ती और सुनती हो, उसे साक्षात् पर्दे पर देखोगी।

बब्बू (प्यार से जिद करते हुए) पड़नानी, चलो न। अगर आप नहीं गयीं, तो मैं भी नहीं जाऊँगा।

पार्वती माँ जी, अपने इस बब्बू की बात तो मान ही लीजिये।

दादी अरे, तुम सब मजबूर करते हो तो चलती हूँ।

बब्बू (लिपटकर) पड़नानी, आप कितनी अच्छी है !

पार्वती . सुनो, सुनो। कृष्ण, हम जाने वाले तो सात है और टिकट है आठ।

कृष्ण लगता है, टिकट भेजने वाले ने ललितमोहन को भी गिन लिया होगा।

रूपचन्द : लेकिन वह तो जायदाद का झगड़ा निपटाने के लिए अपने गाँव गया हुआ है।

कमला एक टिकट जाया नहीं जाना चाहिए। फोन करके सरला को अस्पताल से बुला लेते हैं।

दादी : अरी, वह अस्पताल की ड्यूटी छोड़कर कैसे आ सकती है? माली की लडकी रधिया को साथ ले चलो। मुझे ज़रा सहारा रहेगा।

कृष्ण . ठीक है, मैं रधिया को बुलाता हूँ। आप सब लोग जल्दी से आइये।

कपड़े-वपड़े बदलने की जरूरत नहीं। देर नहीं करनी चाहिए।

[कहता हुआ कृष्णगोपाल बाहर दरवाजे की ओर जाता है।]

रूपचन्द : (पुकारकर) कृष्ण गोपाल !

कृष्ण : (दूर से) जी, पिताजी !

रूपचन्द : अरे, जोड़ूराम तो छुट्टी पर गांव गया हुआ है। माली से कहना कि कोठी का ध्यान रखे।

कृष्ण : माली को मैं अभी भेजता हूँ, पिताजी। (बाहर चला जाता है।)

बब्बू : (सबसे) चलिए न। पिक्चर शुरू होने वाली है।

कमला : हाँ, हाँ, जल्दी चलिए। आओ, दादी माँ, आओ माँ, आओ अमला ! सब अपना-अपना टिकट ले लें।

[कमला जल्दी-जल्दी टिकट बाँटती है। सब लोग बाहर जाते है। पोर्टिको मे उन्हें कृष्णगोपाल और रधिया मिल जाते हैं। माली पोर्टिको मे खड़ा रहता है।]

रूपचन्द : (दूर से) माली, बड़ी होशियारी से कोठी की चौकीदारी करना।

माली : जो हुक्म, मालिक। (कुछ देर बाद माली ड्राइंग-रूम में आता है। स्वगत) लगता है, कोई बहुत बढ़िया फिल्म है। कोठी के सब लोग देखने गये हैं। साथ मेरी बेटी को भी ले गये हैं। अपने भाग्य मे तो फिल्म देखना बदा नहीं। गृहस्थी का खर्च चलाना मुश्किल है, फिल्म के लिए पैसे कहाँ से आयें ?

[तभी बाहर से अमला वापस आती है। उसने अपना पेट पकड़ रखा है।]

अमला : (आते हुए, दर्द से कराहते हुए) माली !

माली : (हैरान होकर) अरे, अमला बीबी, आप वापस लौट आईं ?

अमला : (पेट दबाकर, कराहकर) मेरे पेट मे अचानक बड़े जोर का दर्द होने लगा है। इसीलिए वापस लौट आई। वे सब लोग गये हैं।

माली : (चिंतित होकर) पेट-दर्द के लिए कोई दवा···?

अमला : (पर्स खोलकर) वह मेरे पास है। जल्दी से रसोई से पानी का एक गिलास ले आ।

माली : अभी लाया।

[माली रसोई की ओर जाने लगता है कि अमला उसे रोकती है।]

अमला : ठहर, माली। मेरे पास पेट-दर्द की जो गोली है, वह चूसने के लिए है, पानी से निगलने के लिए नही। (पर्स से झूठमूठ गोली निकालकर मुंह में डालती है और दोनों हाथों से पेट दबाकर आंखें मूंद लेती है। कुछ देर बाद वह आंखें खोलकर जरा मुस्कराती है।) अरे, वाह! इस गोली ने तो जादू का-सा असर किया। मेरा पेट-दर्द धीरे-धीरे कम हो रहा है। ज़रा लेटूंगी, तो ठीक हो जायेगा। (सोफे पर लेटती है।)

माली : सरला बीबी को अस्पताल फोन करके बुला लीजिये न।

अमला : उसे फोन करने की जरूरत नही। उसका ड्यूटी से आने का वक्त हो गया है। (थोड़ी देर बाद, एकाएक) अरे, मैं भी कैसी भुलक्कड हूं। अपना सिनेमा का टिकट मैं अपने साथ ही ले आयी। (पर्स से टिकट निकालती है) यह टिकट ज़ाया नही जाना चाहिए। माली, यह टिकट तुम ले लो और जाकर सिनेमा देखो। बहुत अच्छी धार्मिक फ़िल्म है। रधिया भी गई है।

माली (टिकट को ललचाई नजरों से देखते हुए) लेकिन आपको इस तरह बीमार छोड़कर मैं कैसे जा सकता हूं?

अमला अरे, अब मैं ठीक हूं। थोडी-सी कमजोरी है। और फिर सरला अस्पताल से आ ही रही है। तुम जाओ। (माली को टिकट पकड़ाती है।)

माली . अच्छा, तो आप कहती हैं, तो··· (जाते-जाते रुककर) बड़े मालिक को समझा दीजियेगा।

अमला . (हंसकर) अरे, मैं कह दूंगी कि तुम्हे मैंने ज़बरदस्ती सिनेमा देखने भेजा था। अब जल्दी जाओ।

[माली टिकट लेकर जल्दी से बाहर जाता है। अमला लपककर बाहर वाला दरवाज़ा अन्दर से बन्द करती है और फिर मुस्कराती हुई सीढियो से ऊपर जाती है। क्षण-भर मे वह एक सूट-केस लेकर नीचे उतरती है। उसे एक तरफ रखकर वह शीशे के सामने खडी होकर अपना मेक-अप ठीक करती है और 'हे प्राण, तुम्हारा इतज़ार' की पक्ति गुनगुनाती हुई अपने बाल संवारती है। तभी बाहर वाले दरवाज़े की घण्टी

बजती है। अमला लपककर दरवाजा खोलती है। कवि कोमल मुस्कराता हुआ अन्दर आता है।]

कोमल : (अमला को बाँहों में लेकर) मेरी उर्वशी !

अमला : (हँसकर शरारत से) मेरी मेनका !

कोमल : (हँसकर) हाँ, हम उर्वशी की सहेली मेनका भी हैं। प्रिये, कल जब फोन तुम्हारी दादी माँ ने उठाया, तो हमें मेनका का स्वाँग भरना ही पड़ा। आज भी वही स्वाँग भरा। हमारी अभिनय-कला की श्रेष्ठता का विश्वास हो गया न ?

अमला : मेरे देवता, आपकी अभिनय-कला, काव्य-कला और संगीत-कला की श्रेष्ठता का विश्वास तो मुझे पहले से ही था। आज तो मैं आपकी विलक्षण बुद्धि का लोहा मान गई। सिनेमा के टिकटों का गुमनाम उपहार भेजकर किस सफाई से आपने घर के सब लोगों को भगा दिया। (हँसती है।)

कोमल : अपनी हृदयेश्वरी को दादी माँ के कारागृह से मुक्त कराने का और कोई उपाय ही नहीं था। और हाँ, तुम कैसे पीछे रहने में सफल हुई ?

अमला : आपने फोन पर जो युक्ति बताई थी, उसी की मदद से। मैं सबके साथ सिनेमा देखने चली। बाहर सड़क पर पहुँचते ही मैंने पेट-दर्द का बहाना किया और वापस आ गई।

कोमल : उदर-शूल का अभिनय स्वाभाविक रहा होगा न ? हम प्रसन्न हैं कि तुम नृत्य-संगीत के साथ अभिनय-कला में भी प्रवीण हो। (इधर-उधर देखकर) कोठी में कोई है तो नहीं ?

अमला : (हँसकर) माली था। अपना टिकट देकर मैंने उसे भी सिनेमा देखने भेज दिया।

कोमल : ठीक किया। अब हमें बातों में समय नष्ट नहीं करना चाहिए। आओ, बाहर टैक्सी खड़ी है। (अमला का सूटकेस उठाता है) स्वर्णाभूषणों का वह डिब्बा इसमें रख लिया है न ?

अमला : हाँ, मेरे देवता ! मैंने अपनी जीवन-नैया की पतवार आपके हाथों में दे दी है। जहाँ ले चलेंगे, चलूँगी।

कोमल : हम सीधे वम्बई जा रहे हैं।

अमला . (जरा घबराकर) वम्बई ?

कोमल हाँ, प्रिये, वम्बई, फिल्म-नगरी वम्बई। देश की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी, सर्वश्रेष्ठ नृत्यागना, सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के गुणो की सही परख वम्बई मे ही हो सकती है।

अमला · लेकिन शादी ?

कोमल . प्रिये, हमारी शादी तव होगी, जव तुम पचास फिल्मो की हीरोइन वनकर प्रसिद्धि के स्वर्ण-शिखर पर पहुँच जाओगी, जव तुम कोटि-कोटि हृदयो की सम्राज्ञी वनकर रत्नजटित संगमर्मर के राजमहल मे रहने लगोगी। (प्यार से बांह पकड़कर) आओ, मैंने कुछ ही देर वाद वम्बई प्रस्थान करने वाले वायुयान में दो सीटें आरक्षित करवा रखी है।

[कवि कोमल सूटकेस उठाता है। दोनो वाहर वाले दरवाजे की ओर कदम बढ़ाते है। तभी वहाँ रधिया के साथ दादी माँ प्रकट होती है।]

दादी (चिल्लाकर) रुको !

[कोमल और अमला बुरी तरह चौककर घवरा जाते है। कोमल के कांपते हुए हाथो से सूटकेस नीचे गिर कर खुल जाता है। उसमें जेवरो का डिब्बा दिखाई देता है।]

रधिया . (हैरान होकर) ऐं, कवि कोमल के साथ अमला वीवी भाग रही थी ? दादी माँ, आपका शक ठीक निकला।

दादी · अरी, शक तो मुझे टिकटों के मुफ्त उपहार और इस अमला के पेट-दर्द के वहाने मे ही हो गया था। वह शक तव और पक्का हुआ जब मैंने तेरे वाप को भी सिनेमा-हॉल मे बैठे देखा। मै समझ गई कि इस जनानडे रावण ने अमला को भगाने के लिए पूरी तरह मैदान साफ कर लिया है। फौरन मैंने भी पेट-दर्द का वहाना किया और फिल्म वीच मे छोड़कर तुम्हारे साथ चली आई। भगवान का शुक्र है कि ठीक मौके पर पहुँच गई। (एकाएक) अरी रधिया, देख तो सूटकेस के इस डिब्बे में क्या है ?

अमला : (जल्दी से डिब्बा उठाकर) ख़बरदार, रधिया, जो इस डिब्बे को हाथ लगाया।

दादी : मैं समझ गई। अमला, यह तेरी माँ के ज़ेवरों का डिब्बा है न ? हूँ, इन ज़ेवरों के लिए ही तुझे यह जनानड़ा भगाकर ले जा रहा था। मैं अभी पुलिस को बुलाती हूँ। (कोमल बुरी तरह डर जाता है।)

अमला : (कोमल का हाथ पकड़कर बड़ी दिलेरी से) दादी माँ, पुलिस को बुलाने की धमकी न दीजिये। मैं बालिग हूँ। मैं अपनी मर्ज़ी से किसी के भी साथ जा सकती हूँ। यह मेरे पति हैं। मैं इनके साथ॰ ।

कोमल : (हाथ छुड़ाकर) नहीं, नहीं, मैं जा रहा हूँ।

[कवि कोमल तेज़ी से बाहर वाले दरवाज़े की तरफ भागता है। वहीं उसे ललितमोहन दबोच लेता है। उसने बूढ़े साधु का भेस बना रखा है।

मोहन : अरे, कहाँ भागे जा रहे हो, बच्चा कालूराम ? अपने तीन बच्चों की माँ से तो मिल लो। (पुकारकर) बेटी दुर्गा, आओ, सम्भालो अपने पति कालूराम उर्फ़ कवि कोमल को।

[तभी एक भारी-भरकम देहाती औरत अन्दर आती है। अमला, दादी माँ और रधिया उसे हैरानी से देखती हैं।]

दुर्गा : (चण्डी की तरह) हूँ, तो इस भैरव बाबा की बात सही निकली। इन्होंने बताया था कि तू एक बड़े घर की मालदार लड़की पर डोरे डालकर शादी कर रहा है। तीन बच्चों वाली बीवी के रहते दूसरी शादी ? (कोमल को गले से पकड़कर) नासपीटे, मैं अभी तेरी हड्डी-पसली एक करती हूँ। मुझसे कहकर आया था कि बम्बई में बड़ी नौकरी मिल गई है। जाते ही मकान लेकर मुझे और बच्चों को वहाँ बुला लेगा। (थप्पड़ मारकर) मेरे साथ यह धोखा ?

मोहन : बेटी, इस कोमल कवि को इस तरह न मारो। इसकी जुल्फ़ों का तो ख़याल करो।

दुर्गा : (कोमल के बाल पकड़कर) मैं इसकी जुल्फें नोचकर अभी इसके हाथ में पकड़ाती हूँ।

कोमल : (हाथ जोड़कर घिघियाते हुए) दुर्गा, मुझे माफ़ कर दो ! (अमला

की ओर इशारा करके) यह लड़की मुझे फँसा कर…अपने साथ… बम्बई …।

अमला : क्या ?

[पूरी बात समझकर अमला रोने लगती है। दादी माँ अमला को गले से लगाती है।]

दादी (डाँटकर) खबरदार जो मेरी भोली-भाली पोती पर कोई दोष लगाया। यह मेरी पोती नहीं, बेटी है। (अमला 'माँ' कहकर दादी माँ से लिपट जाती है। दुर्गा से) बहू, ले जा अपने इस दुष्ट रावण को अपने गाँव। इसने मेरी सीता जैसी बेटी पर ऐसा जादू किया था कि…।

दुर्गा : माँ जी, आप चिन्ता न कीजिये। मैं किसान की बेटी हूँ। मैं इसे गाँव ले जाकर इस तरह हल में जोतूँगी कि कभी शहर की तरफ़ मुँह ही न करे।

[यह कहती हुई दुर्गा कवि कोमल को घसीटती हुई बाहर ले जाती है।]

अमला : (लपककर) ठहरो! मै इस बदमाश को पुलिस के हवाले करूँगी। इसने मुझे धोखा दिया। मेरे माथे पर हमेशा के लिए कलक का टीका लगा दिया। (रोती है।)

दादी : (प्यार से) नही अमला, तुझे कोई कलंक नही लगा। तू गौरा की तरह पवित्र है। आज की इस घटना का पता किसी को नही चलेगा। इन भैरव बाबा को धन्यवाद दो कि इन्होंने ऐन मौके पर पहुँचकर तेरी ही नही, तेरे बाप के वश की भी इज्जत बचाई है। छुओ इनके पाँव। (अमला ललितमोहन के पाँव छूने लगती है।)

रधिया . नही, अमला बीबी। पाँव छूने से पहले बाबाजी की यह दाढ़ी छुओ।

[रधिया ललितमोहन की दाढ़ी खीचती है। नक्ली दाढ़ी उतर जाती है।]

मोहन : (झूठमूठ गुस्से से) यह क्या किया, बालिके ?

दादी : (हैरानी-से) अरे, मोहन, तुम…?

मोहन : (हँसते हुए हाथ जोड़कर) नानी माँ के हुक्म का बन्दा हाज़िर है।

[सब हँसते है । मंच पर दृश्य-समाप्ति-सूचक अँधेरा हो जाता है।]

तीसरा दृश्य

स्थान—कोठी का ड्राइंग-रूम।

समय—रात साढ़े आठ बजे के बाद।

[रधिया पुस्तकें और कापियाँ उठाये गुनगुनाती हुई बाहर वाले दरवाज़े से आती है। तभी रसोई से निकलकर जोड़ूराम सामने खड़ा हो जाता है।]

जोड़ू : (सिर का बाल तोड़कर) अरी रधिया, किससे पढ़ने आई है। तुम्हारा वह बंसीवाला मास्टर तो…।

रधिया : बंसीवाला मास्टर कौन, तोड़ूराम ?

जोड़ू : अरे, वही अपने बाबू ललितमोहन बंसल। वे तो अभी गाँव से आए नहीं।

रधिया : (ज़रा चिन्तित होकर) ऐं, आज सुबह-सवेरे के गए वे लोग अभी तक वापस नहीं आए ?

जोड़ू : अरी, मोहन बाबू नहीं आए, तो क्या हुआ ? विद्या तो मेरे पास भी है।

रधिया : (हँसकर) सिर के बाल और प्लेटें तोड़ने की विद्या न ?

जोड़ू : (मुग्ध भाव से देखते हुए) रधिया, जब तुम हँसती हो, तो मुँह से फूल झड़ते हैं।

रधिया : अरे, तोड़ूराम, यह बात तो तुम पहले भी कई बार कह चुके हो। कोई नयी बात कहो न।

जोड़ू : (सिर के बाल तोड़ते हुए) कोई नयी बात…?

[तभी पार्वती अपने कमरे से निकलकर आती है।]

पार्वती : जोड़ूराम ! कमला, बब्बू और कृष्ण ने खाना खा लिया ?

जोड़ू : हाँ, मालकिन। कमला बीबी खाना खाकर बब्बू के साथ ऊपर अपने

कमरे में चली गई हैं और कृष्ण बाबू बाहर घूमने गए हैं। चलकर आप भी खाना खा लीजिए।

पार्वती : नही रे। गाँव से वे सब लोग आ जायें, तो उनके साथ ही खाऊँगी। कहते थे शाम तक लौट आयेंगे। अब आते ही होंगे। पौने नौ बज गए हैं। (रधिया को देखकर) रधिया, तू पढने आई है? किससे पढ़ेगी? मोहन भी तो उनके साथ ही गया हुआ है। खैर, आ गई है, तो जरा ड्राइग रूम को झाड़-बुहार दे। दिन भर धूल-मिट्टी उडती रही है। माँ जी को गन्दगी पसन्द नही।

रधिया : अच्छा मालकिन! मैं झाड़न ले आऊँ।

[पुस्तकें और कापियाँ तिपाई पर रखकर रसोई मे जाती है।]

पार्वती : जोड़ूराम, मुझे चिन्ता हो रही है।

जोड़ू : कैसी चिन्ता, मालकिन?

पार्वती : कल रात गाँव से जो लडका तुम्हारे मालिक और माँ जी को बुलाने आया था, वह कह रहा था कि माँ जी के देवर की हालत काफी खराब है। मुझे डर है कि कही उसका देहान्त न हो गया हो।

जोड़ू : हो सकता है, मालकिन। शायद इसीलिए उन्हें लौटने मे देर हो गई है।

पार्वती . माँ जी को भी पता नही क्या सूझी, अपने साथ सरला और अमला को भी ले गयी।

जोड़ू . सरला बीबी डॉक्टर है न।

[तभी रधिया रसोई से झाडन लेकर आती है और कोई प्रेम-गीत गुनगुनाती हुई ड्राइग रूम की सफाई करने लगती है।]

पार्वती : जोड़ूराम, मैं सोचती हूँ, थोड़ा-बहुत खाना खा ही लूँ।

जोड़ू : मैं यह कहने ही वाला था, मालकिन।

पार्वती : तू तो मेरा खाना लगा, मैं अभी आती हूँ।

[पार्वती अपने कमरे मे और जोड़ूराम रसोई में जाता है। रधिया झाड़ती-बुहारती हुई प्रेमगीत गाने लगती है। कुछ देर बाद बाहर से कृष्णगोपाल आता है। वह ठिठककर मुग्ध भाव से रधिया के गाने की दाद देने लगता है। तभी कमला सीढ़ियों

से उतरती है। उसके माथे पर बल पड़ जाते हैं।]

कमला : (डांटकर) रधिया, बन्द कर अपना यह रंगीला गाना। इस मुई को मर्द देखकर ही गाने की सूझती है।

[रधिया गाना बन्द करके बड़ी आहत दृष्टि से कमला की ओर देखती है।]

कृष्ण : (बिगड़कर) कमला, तुम बड़ी शक्की स्वभाव की हो। तुम्हारा मतलब है कि यह रधिया मुझे रिझाने के लिए गा रही थी?

[शोर सुनकर पार्वती अपने कमरे के दरवाज़े पर आ जाती है।]

कमला : मैं क्या जानूँ? जो देखा, सो कह दिया। मैं तो जवान कुंआरी लड़की को घर में नौकर रखने के पक्ष में ही नहीं थी। दादी माँ ने ही अपने लाड़ले नाती की सिफ़ारिश पर इसे'''।

रधिया : (कांपती हुई-सी) बस-बस, छोटी मालकिन, आपने काफ़ी कुछ कह दिया है। मैं जा रही हूँ। अब कभी इस कोठी में कदम नहीं रखूंगी।

कमला : जा दफ़ा हो।

[रधिया अपनी पुस्तकें और कापियां लेकर बाहर वाले दरवाज़े की तरफ़ कदम बढ़ाती है। पार्वती जल्दी से आगे बढ़कर उसे रोकती है। कमला घमंड से गर्दन मटकाकर रसोई में चली जाती है।]

पार्वती : रधिया, कहां जा रही है?

रधिया : (रुआंसी-सी) मालकिन, मुझे अब इस कोठी में नौकरी नहीं करनी है। मैं एक गरीब बाप की कुंआरी जवान लड़की हूँ, इसलिए तोहमत लगा दी कि मैं इस कोठी में मर्दों को रिझाने के लिए गाना गाती हूँ। आप अमीर लोग क्या जानें कि कोई गरीब औरत रंगीला गाना क्यों गाती है? वह रंगीला गाना गाती है अपना दुःख-दर्द भुलाने के लिए, गरीबी की आंच से राहत पाने के लिए। अच्छा, मैं जाती हूँ। (जाने लगती है।)

पार्वती : नहीं, रधिया, तू इस तरह नहीं जा सकती।

कृष्ण : तुझ पर कोई तोहमत नहीं लगायी गयी है।

पार्वती : तू तो दादी माँ की ही नहीं, मेरी भी बेटी के समान है।

रधिया : रहने दीजिए, मालकिन। गरीब की लड़की किसी की बहन या बेटी नहीं होती। वह तो, खैर, दोष मेरे माँ-बाप का है। मैं अपने घर मे सबसे बड़ी हूँ। जब मैं पैदा हुई थी, तो जमना पार की बस्ती में मेरे बापू की दूध की डेयरी थी। घर में तीन भैंसे थी। बापू दूध के धन्धे से खूब कमाई करते थे और हम ठाठ से रहते थे। बापू ने एक बागीचा भी लगा लिया था। मेरे बाद मेरा भाई आया। माँ-बाप ने बड़े होने पर हम दोनों को स्कूल और कॉलिज मे भेजने की योजनाएँ बनायी। लेकिन हमारे बाद जब एक-एक दो-दो साल के बाद चार बच्चे और आ गए, तो सब योजनाएँ धरी-की-धरी रह गयी।

पार्वती : ओह!

रधिया : घर के आठ प्राणियो के पेट की आग में तीनों भैंसें भस्म हो गयी, बाप का दूध का धन्धा ठप्प हो गया, बागीचा उजड गया, मुझे और छोटे भाई को मामा के पास जाना पडा, बापू को यहां आकर माली की नौकरी करनी पडी, छोटे भाई को कच्ची उम्र मे मामा की वर्कशाप में काम करना पडा और अब मुझे भी यहाँ नौकरी करनी पड़ी। अब हमारे घर मे सातवां बच्चा आने वाला है। इसका मतलब है कि…

[रधिया फूट-फूटकर रो पड़ती है और बाहर चली जाती है। तभी कमला रसोई के दरवाजे पर आती है। कृष्णगोपाल गुस्से से उसकी ओर देखता है।]

कृष्ण : कमला, तुम्हें उस गरीब लडकी को इस तरह बुरा-भला नहीं कहना चाहिए था।

पार्वती : माँजी सुनेंगी, तो…।

कमला : (एकाएक भड़ककर) तो क्या मुझे फाँसी पर लटका देंगी? मुझे न दादी माँ की परवाह है, न तुम दोनों—मौसी-भानजे की।

कृष्ण : यह न भूलो कि मेरी मौसी अब इस घर की मालकिन है।

कमला : इसे मालकिन किसने बनाया? मैंने। और किशू, तुम भी न भूलो कि एक मामूली मुशी से मैंने ही तुम्हें इस घर का दामाद बनाया है और मैं जब चाहूँ, तुम्हे तलाक देकर सड़क पर फेंक सकती हूँ।

कृष्ण : (हँसकर) तलाक ? किस बिना पर मुझे तलाक़ दोगी ?

कमला : छोकरीबाज़ी की बिना पर।

कृष्ण : (चौंककर) क्या ?

कमला : मुझे सब पता चल गया है कि तुमने उस कवि कोमल से क्यों दोस्ती की हुई थी। तुम उससे मिलने के बहाने उस नृत्य-संगीत-विद्यालय में जाते थे और लड़कियों को पटाते थे।

कृष्ण : और तुम जो ठेकेदारनी बनकर बोर्ड के इंजीनियरों और अफ़सरों को पटाती हो…?

कमला : (गुस्से से पागल होकर) मुंशी के बच्चे, तुम्हें मेरे चरित्र पर यह लाछन लगाने की हिम्मत कैसे हुई ?

पार्वती : (बीच-बचाव करते हुए) अरे, यह क्या कर रहे हो तुम दोनों ? पागल हो गए हो ? तुम दोनों आपस में लड़ोगे, तो दुश्मन का कैसे मुकाबला करोगे ? तुम्हे पता नही कि दादी माँ तुम्हारे पिता को किस रास्ते पर ले जा रही हैं। कृष्ण, तुम्हें कमला का इस तरह अपमान नही करना चाहिए था। इसमे कोई शक नहीं कि हम दोनों कमला के कारण ही इस कोठी में है। कमला से माफी माँगो। मैं कहती हूँ—फौरन माँगो कमला से माफी। (उसे आँख से इशारा करती है।)

कृष्ण : (कुछ देर सोचकर) कमला, मुझे माफ़ कर दो।

पार्वती : कमला, गुस्सा थूक डालो। पति-पत्नी मे झगड़ा होता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि…।

कमला : (रुआँसी-सी)मौसी, इसने मुझे उस दो कौड़ी की नौकरानी के कारण अपमानित किया, मेरे चाल-चलन पर लाछन लगाया। तुम तो जानती ही हो कि पिछले पाँच-छह बरस से पिताजी ने काम-धन्धे की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया—सुबह-शाम अपनी बेहोश माँ के चरणों मे बैठे रहे और…।

पार्वती : मैं सब जानती हूँ, कमला। पिछले पाँच-छह बरस से तुम ही इस ठेकेदारी के काम को चला रही हो। तुम्हारी ही सूझ-बूझ से, मेहनत से बड़े-बड़े ठेके मिले है, लाखों की आमदनी हुई है, जायदाद बनी है,

लेकिन—लेकिन मुझे दु:ख है कि अब यह लाखो की जायदाद धीरे-धीरे हाथ से निकलने वाली है।

कमला : ... है ?

पार्वती : ... नही, अपनी ... अमला के पास ... । अब माँ की सलाह मानकर तुम्हारे पिता साथ वाली कोठी भी अमला के नाम कर रहे है।

कमला : (**हैरान होकर**) क्या ? अमला क्या करेगी उस कोठी का ?

पार्वती : वह मीराबाई बनकर उस कोठी मे नृत्य-सगीत का स्कूल चलायेगी। (**व्यंग्य से**) कवि कोमल से धोखा खाने के बाद अब अमला में ऐसा वैराग्य पैदा हुआ है कि उसने दादी माँ की मर्जी से आजीवन कुँआरी रहने का फैसला किया है।

कमला : कमाल है ! पिताजी ने मुझसे इस बात का जिक्र तक नही किया। और...और मै हैरान हूँ, जो दादी माँ लडकियो को दो महीने के अंदर-अन्दर ससुराल भेजने का नारा लगाती थी, वही अब अमला को छाती से लगाकर घर मे रोक रही है। दादी माँ भूल गईं कि अमला ने उस लफगे कवि कोमल के साथ ज़ेवर लेकर भागने की कोशिश की थी।

पार्वती : तुम्हारी दादी माँ उसका दोष भी तुम्हे देती है। उस घटना के बाद एक दिन अमला के सिर पर हाथ फेरते हुए कह रही थी कि बडी बहन ने इस बिन-माँ की नासमझ बेटी की अच्छी तरह देखभाल नही की।

कृष्ण : खैर, अमला के घर मे रुकने और साथ वाली कोठी पर कब्जा करने से हमारी सारी योजना ही गडबड़ हो गई। मैंने सोचा था कि विमला के बाद दादी माँ अमला और सरला को भी विदा कर देंगी और पीछे जायदाद सम्भालने के लिए हमी रह जायेंगे—कमला, आप, बब्बू, मैं...।

पार्वती : कृष्ण, तुम अपने ससुरजी के भानजे ललितमोहन बसल को कैसे भूल

गये, जिसे माँजी अपनी इकलौती बेटी की इकलौती निशानी मानती हैं।

कृष्ण : उसका क्या हक़ है इस जायदाद पर ?

पार्वती : अगर तुम्हारे ससुर की 'रूपचन्द एण्ड कम्पनी' प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी बन जाए और ललितमोहन तुम दोनों के साथ उसका पार्टनर बना दिया जाए, तो उसका अपने आप हक हो जायेगा।

कमला : तो क्या ऐसा भी सोचा जा रहा है ?

पार्वती : हाँ। तुम दोनों एक बात ध्यान में रखो। तुम्हारी दादी माँ अब पहले जैसी दादी माँ नहीं। वे रोज अखबार पढ़ती हैं, देश-विदेश की घटनाओं पर टीका-टिप्पणी करती हैं, ठेकेदारी और व्यापार के मामलों की जानकारी हासिल करती हैं, समाज की समस्याओं के बारे में सोचती हैं...।

कृष्ण : क्या सरला और डॉ० कैलाश आहूजा की शादी के बारे में भी कुछ सोच रही हैं या नहीं ?

पार्वती : हाँ। दादी माँ ने कैलाश को पसन्द कर लिया है...।

कमला : पता चला है कि शादी के बाद सरला और कैलाश फ़ौरन इंग्लैण्ड चले जायेंगे। दोनों को वहाँ नौकरी मिल गयी है।

कृष्ण : (खुश होकर) चलो, यह दूसरी लड़की भी गयी।

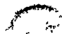
कमला : लेकिन, किशू, दादी माँ की पाँचवीं पोती बनकर यह जो रधिया आ गयी है...?

पार्वती : और कमला, तुम्हारे बाप के चाचा-ताऊ के परिवारों के लोग भी तो अब आने लगे हैं।

कमला : ओह, मैंने गाँव के उन भुक्खड़ों से पिताजी का मेल-जोल बिल्कुल बन्द करा दिया था, लेकिन दादी माँ ने फिर उनसे नाता जोड़ लिया है।

पार्वती : तुम्हारी दादी माँ कहती हैं कि नाखूनों से कभी मास जुदा नहीं हो सकता और अपनी जड़ से कटकर पेड़ कभी हरा-भरा नहीं रह सकता।

कृष्ण : इस कोठी का पेड़ तो जड़ से जुड़कर सूखता नजर आ रहा है।



पार्वती : हां रे, तुम्हारे ससुरजी जेब में पांच हजार रुपये डालकर अपने बीमार चाचा को देखने गये हैं आज। बाद में और कितने हजार वहां पहुंचते हैं, यह देखते जाओ। दादी मां अपना परलोक सुधारने के लिए दान-पुण्य और दीन-दुखियों की सेवा में विश्वास रखती है।

कमला . (दृढ़ निश्चय से उठकर) नही, यह नहीं होगा। हमारी मेहनत की कमाई इस तरह भूखे-नंगो मे नही बांटी जा सकती। यह सदावर्त रोकने के लिए हमें कुछ करना होगा—फौरन कुछ करना होगा।

[कृष्णगोपाल और पार्वती की आंखे मिलती है।]

कृष्ण · कमला रानी, जब तक दादी मां हैं, तब तक कुछ नही हो सकता।

पार्वती : जैसे-कैसे दादी मां को बीच में से हटाना होगा।

कमला : (एकाएक चौंककर) क्या दादी मां की हत्या करनी होगी ?

कृष्ण . (घबराकर) नही, नही।

पार्वती · (हंसकर धीमे स्वर में) डरो नही। मै दादी मां को मारकर नही, फिर से सुलाकर···।

कमला : फिर से सुलाकर ?

कृष्ण . कैसे ?

पार्वती : रात को सोने से पहले दादी मां के हुक्म से सब लोग दूध पीते हैं। दादी मां भी पीती है। अगर उनके दूध के गिलास मे नीद की तीन-तीन गोलियां रोज दो सप्ताह तक पीसकर डाल दी जायें, तो धीरे-धीरे उन्हे दिन मे भी नीद आने लगेगी और फिर एक दिन हमेशा के लिए···।

कमला (डरकर, सहमकर) नही, नही···।

[उसी समय जोड़ूराम रसोई से आता है।]

जोड़ू . (पार्वती से) मालकिन, मेज पर खाना लगा दिया है।

कमला मां, तुमने अभी तक खाना नहीं खाया ? नौ बजने को हैं।

पार्वती . सोच रही थी कि वे लोग गांव से आ जायें, तो उनके साथ ही···। (तभी पोर्टिको में कार के आने और रुकने की आवाज सुनायी देती है) लगता है, वे लोग आ गये। जोड़ूराम, जा जल्दी से सबका खाना लगा।

[जोड़ूराम रसोई में जाता है। पार्वती लपककर बाहर वाले दरवाज़े की ओर जाती है। वहाँ से पहले दादी माँ और रूपचंद आते हैं और फिर उनके पीछे-पीछे ललितमोहन, सरला और अमला आते हैं। सब के चेहरों पर थकावट और उदासी है।]

दादी : (आते हुए) अरी बहू, बहुत बुरा हुआ। सुबह हमारे पहुँचने से पहले ही चन्दू का चाचा भगवान् को प्यारा हो गया।

पार्वती : ओह, यह तो वाकई बहुत बुरा हुआ, माँ जी।

कृष्ण : बहुत अफ़सोस है, पिताजी।

दादी : (रोकर) बेचारा घोर गरीबी में, बिना इलाज के मर गया। उसकी घरवाली तो पहले ही मर गयी थी। दाह-संस्कार का सारा काम, सारा प्रबन्ध चन्दू ने किया।

कमला : तभी आप लोगों को लौटने में इतनी देर हुई।

[दादी माँ ड्राइंग रूम में आकर सोफ़े पर बैठ जाती है।]

पार्वती : माँ जी, आप सब दिन-भर के थके-मादे हैं। पहले चलकर खाना खा लीजिये।

दादी : शाम को गाँव का चौधरी खाना बनवाकर ले आया था। सबने थोड़ा बहुत खा लिया था। फिर भी चन्दू, मोहन और लड़कियों से पूछ लो।

अमला : (अपना सिर दबाते हुए) मुझे तो भूख नहीं।

सरला : भूख तो मुझे भी नहीं।

[दोनों सीढ़ियों पर चढ़ जाती हैं। उनके पीछे-पीछे कमला और कृष्णगोपाल भी चले जाते हैं। मोहन सबकी आँख बचाकर बाहर जाता है।]

रूपचन्द : माँ, तुमने गाँव में कुछ नहीं खाया था।

पार्वती : चलिए, माँ जी, आप कुछ खा लीजिये।

दादी : नहीं बहू, मेरा कुछ खाने को जी नहीं चाहता।

पार्वती : माँ जी, इस तरह फाका न कीजिये। जाने वाला चला गया। अब सिवाय सब्र के चारा ही क्या है?

दादी : (रोकर) हाय बहू, रह-रहकर देवरजी की सूरत मेरी आँखों के सामने आ जाती है। चन्दू के बापू के दो भाई थे। एक बड़ा और दूसरा यह

छोटा। जेठ-जेठानी के मन में कोई मोह-ममता नही थी, इसलिए यह देवर मेरे हाथों मे ही पला था। हाय, मैं कर्मों जली अभी तक ज़िन्दा हूँ और वह लछमन जैसा देवर चला गया...। (रोती है।)

पार्वती : रोइये नही, माँ जी। आई के आगे किसी की पेश नही चलती है।

दादी : अरी, पेश न चले, मन को तसल्ली तो होती है कि घर वालों ने बीमार की सेवा मे कोई कसर नहीं उठा रखी। यहाँ चन्दू के घर मे अपनी डॉक्टर बेटी थी। चन्दू अपने बीमार चाचा को गाँव से यहाँ ले आता, तो...।

रूपचन्द : कैसे ले आता, माँ? इसी चाचा ने तो बापू के मरने पर और तुम्हारे बेहोश होने पर ताऊ से मिलकर घर और दुकान पर कब्जा कर लिया था।

दादी : अरे, तो अपनों ने ही कब्जा किया था, किसी गैर ने तो नही। तू तो यहाँ दिल्ली आ गया था। उस घर और दुकान की देखभाल कैसे करता? और बेटा, उन्होंने तुम्हारे साथ बदी की, तो भगवान् ने उन्हें घोर गरीबी मे डालकर दण्ड दिया और तुम्हारा घर दौलत से भर दिया। तुम्हे अपना दिल बड़ा करके उनकी बदी का बदला नेकी से चुकाना चाहिए था। लेकिन तुम्हारा भी कसूर नहीं। शहर की सभ्यता आदमी को पत्थर-दिल बना देती है। अपनी कमला को ही लो। उसे तुम्हारे गाँव के रिश्तेदारो से कितनी नफरत है! अभी हम आये, तो उसने चन्दू के चाचा की मौत पर कोई अफसोस नही किया, एक आँसू तक नही बहाया। मजे से अपने खसम के साथ ऊपर अपने चौबारे मे चली गई।

[सरला सीढियों से उतरकर आती है।]

दादी : अरी सरला, क्या बात है?

सरला : कुछ नही, दादी माँ। अमला के लिए दवाई लेने आई हूँ।

रूपचन्द : क्या हुआ उसे?

सरला : उसके सिर मे दर्द है, नींद नही आ रही।

दादी : सिर में दर्द तो होगा ही। अर्थी उठते देखकर वह कितना रोई थी वहाँ। और फिर गाँव का सफर...।

सरला : (पार्वती से) माँ, मैंने आपको वह नींद की गोलियों की शीशी दी थी न ?

पार्वती : (सकपकाकर) हाँ, हाँ ! शीशी अन्दर मेरे कमरे की अलमारी में रखी है।

सरला : नहीं, मुझे शीशी नहीं चाहिए, अमला के लिए सिर्फ एक गोली चाहिए।

[पार्वती सरला को लेकर अपने कमरे में जाती है।]

दादी : अरे, चन्दू, तेरी लड़कियों में से इस अमला के ही दिल में दूसरों के लिए हमदर्दी है। बेचारी दुखिया है न। एक दुखिया ही दूसरों के दुःख-दर्द को समझ सकता है। छोटी उम्र में ही चोट खा गयी। मैं सोचती हूँ, अगर साथ वाली कोठी में नाच-गाने का स्कूल खुल जाय, तो अमला का मन बहल जाएगा।

रूपचन्द : हां, माँ, मैं जल्दी ही स्कूल खोल दूँगा। नाम रखूँगा—"फूलवती कन्या विद्यालय।'

दादी : मेरे नाम पर स्कूल खोलेगा ? नहीं, नहीं, अपने स्वर्गीय बाप के नाम पर खोलना।

[पार्वती और सरला कमरे से आती हैं। सरला जल्दी से सीढ़ियों की ओर बढ़ती है।]

दादी : अरी सरला, अमला को दवाई देकर जरा मेरे पास आना। तुझसे एक जरूरी बात करनी है।

सरला : (सीढ़ियों पर चढ़ते हुए) अभी आयी, दादी माँ।

दादी : अरी बहू, वह रधिया कहीं दिखायी नहीं दी।

पार्वती : (बात बनाकर) वह…वह रधिया आज छुट्टी ले गयी थी।

[तभी बाहर से ललितमोहन आता है।]

मोहन : नहीं, नानी माँ, रधिया ने छुट्टी नहीं ली। उसको छुट्टी कर दी गयी है। मैं अभी उससे मिलकर आ रहा हूँ।

दादी : क्यों, बहू ?

पार्वती : (ललितमोहन की ओर घूरकर) नहीं, माँ जी, ऐसी कोई बात नहीं। रधिया को कमला ने जरा डाँट दिया था। मैं सुबह ही उसे मनाकर ले आऊँगी।

दादी : रधिया गरीब की लड़की है न, और कमला को अपने बाप की दौलत का इतना घमण्ड है कि गरीबों को वह कीड़े-मकोड़े समझती है। जानती नहीं कि गरीबों में भगवान का वास है, इसीलिए गांधी जी गरीबों को दरिद्रनारायण कहते थे।

[सरला सीढ़ियों से नीचे आती है।]

सरला : दादी माँ, आप कोई बात मुझसे करना चाहती थी ···।

दादी : (बाँह पकड़कर) अरी, बैठ मेरे पास। (सरला पास बैठ जाती है) तू डॉक्टर है न ? आज तू पहली बार अपने बाबा के गाँव गई थी। कैसा लगा वह गाँव ?

सरला : (जरा रुककर) दादी माँ, सच कहूँ, मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि इस आजाद भारत में कोई ऐसा पिछड़ा हुआ गाँव भी हो सकता है, जहाँ इतनी गन्दगी है, इतनी गरीबी है, इतनी बीमारी है, जहाँ कोई डॉक्टर नहीं, लोगों की स्वास्थ्य-रक्षा का कोई प्रवन्ध नहीं···।

मोहन : नानी माँ, सरला ठीक कहती है। मैंने आज पता लगाया कि गाँव में एक वैद्य और एक हकीम है। वैद्य सत्यनारायण की कथा भी बाँचता है और दवाई के नाम पर काढा-शरवत भी पिलाता है। हकीम की योग्यता का अनुमान आप इस बात से लगा सकती हैं कि उसने अपने घर के आँगन मे उगा हुआ नीम का पेड़ कटवा दिया था, ताकि लोग उसे नीम-हकीम न कहें। (दादी माँ के सिवा सब हँसते हैं।)

दादी : (डाँटकर) अरे, यह हँसने की नहीं, रोने की बात है। यह मोहन रोज मुझे अखबार से पढ-पढकर सुनाता है कि आजादी के बाद हमारे देश ने इतनी तरक़्क़ी की है। गाँव-गाँव में बिजली पहुँच गई है, सड़कें बन गई हैं, साफ-सुथरे मकान बन गए हैं, स्कूल, अस्पताल, डाकखाने और कारखाने खुल गए हैं, और एक मेरी ससुराल का गाँव है, जहाँ···।

रूपचन्द : माँ, उस गाँव को तुम भी जानती हो और मैं भी जानता हूँ। वहाँ के लोग इतने दकियानूसी हैं कि···।

दादी : दकियानूसी नहीं, गरीब हैं। और चन्द्र, तू यह क्यों भूलता है कि वह गाँव तेरे बाप-दादा की धरती है, तेरी जन्म-भूमि है। खैर, सरला,

एक बात बता। अगर उस गाँव में अस्पताल खुल जाए, तो लोगों की कुछ भलाई हो सकती है ?

सरला : बहुत भलाई हो सकती है।

मोहन : नानी माँ, उस अस्पताल को सरकार से भी काफी आर्थिक सहायता मिल सकती है।

दादी : अरे, हर काम में सरकार का मुँह नहीं ताकना चाहिए। कुछ खुद भी करना चाहिए। चन्दू, एक बात बता।

रूपचन्द : पूछो, माँ।

दादी : तू रोज मुझसे कहता है कि तूने इमारतों की ठेकेदारी से लाखों रुपये कमाकर बैंक में जमा कर रखे हैं। क्या उन रुपयों में से कभी कुछ धर्म या जनता की भलाई के नाम पर भी खर्च किया है ? (रूपचन्द चुप रहता है) नहीं खर्च किया न ? अच्छा, अब बता, मैं तेरी माँ हूँ न ?

रूपचन्द : यह भी कोई कहने की बात है, माँ ?

दादी : तू मुझसे बहुत प्यार करता है न ?

रूपचन्द : दुनिया में सबसे ज्यादा। (पार्वती जल-भुन जाती है।)

दादी : अगर मैं तुम्हारे उन लाखों रुपयों में से छह-सात लाख रुपये माँगूँ, तो मुझे दे देगा ?

रूपचन्द : माँ, छह-सात लाख रुपये क्या, मैं अपनी सारी दौलत इन चरणों पर अर्पित करने को तैयार हूँ।

दादी : (रूपचन्द की बलैयाँ लेते हुए) जियो मेरे लाल ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। अब सुनो मेरा फ़ैसला। मैं तेरे बाप-दादा के गाँव में एक अस्पताल बनवाऊँगी और उसका नाम तेरे बापू के नाम पर रखूँगी।

रूपचन्द : (गद्‌गद होकर, माँ के पाँव पकड़कर) माँ, मुझे तुम्हारा यह फ़ैसला मंजूर है।

मोहन : (जल्दी से हाथ जोड़कर) आप महान् हैं, नानी माँ।

सरला : (खुश होकर) दादी माँ, आपने बहुत अच्छा फ़ैसला किया है। अस्पताल उस गाँव के लिए वरदान सिद्ध होगा। अब मैं जाऊँ ?

दादी : हाँ, बेटी, जा आराम कर। चन्दू, तू भी आराम कर। (ललितमोहन से) अरे मास्टर, आज तेरी क्लास नहीं लगेगी। जा तू भी आराम कर।

[सरला सीढ़ियों से ऊपर जाती है।]

पार्वती : मैंने आप सब के लिए खाना बनवाया था। किसी ने नहीं खाया।

दादी : बहू, सब को दूध पिला देना।

[पार्वती होठ भींचकर रसोई में जाती है।]

रूपचन्द : माँ, तुम भी अपने कमरे में चलकर आराम करो न।

दादी : (उठती हुई) हाँ रे, आज बहुत थक गई हूँ।

[रूपचन्द और मोहन सहारा देकर दादी माँ को उसके कमरे में ले जाते हैं। पार्वती रसोई के दरवाजे से उन्हें देखती है। तभी कमला और कृष्णगोपाल दबे पाँव सीढ़ियों से उतरते हैं।]

कमला : आया...सॉरी माँ, अभी-अभी सरला ने बताया कि पिताजी ने दादी माँ को छह-सात लाख रुपये देने का वचन दिया है? क्या यह सच है?

पार्वती : (सव्यंग्य) तुम्हारी दादी माँ गाँव में तुम्हारे बाबा की याद में एक अस्पताल बनवाना चाहती है।

कृष्ण : कमला, बैंक में कम्पनी के लगभग सात लाख रुपये जमा हैं। वे सब अस्पताल के नाम पर दादी माँ के हो गए। साथ वाली कोठी पहले ही अमला की हो चुकी है। जान मारें हम और जायदाद पर कब्जा करें दूसरे।

कमला : (गुस्से से) नहीं, नहीं, यह लूट रुकनी चाहिए।

कृष्ण : लूट तभी रुक सकती है, अगर दादी माँ को...।

पार्वती : फिर से सुला दिया जाए।

कमला : (बड़ी क्रूरता से दाँत पीसकर) माँ, आज रात से ही दादी माँ को सुलाने का प्रोग्राम शुरू किया जाए।

[पार्वती और कृष्णगोपाल के चेहरों पर क्रूरतापूर्ण मुस्करा-

हट झलक उठती है और मंच पर दृश्य-समाप्ति-सूचक अंधेरा हो जाता है।]

चौथा दृश्य

स्थान—कोठी का ड्राइंग-रूम।

समय—दूसरे दिन सुबह चाय के समय।

[ड्राइंग-रूम खाली है। पार्वती और रूपचन्द अपने कमरे से निकलते हैं। उनके चेहरों और कपड़ों से लगता है कि वे अभी-अभी जागे हैं।]

रूपचन्द : पार्वती, रसोई में जाकर देखो तो जोड़ूराम अभी तक बैड-टी क्यों नहीं लेकर आया।

[पार्वती रसोई में जाती है। रूपचन्द अलसाया-सा सोफे पर बैठता है। तभी सीढ़ियों से बब्बू स्कूल का बस्ता लिये हुए उतरता है। उसके पीछे नाइट-सूट में कृष्णगोपाल और सरला उतरते हैं। बब्बू रसोई के दरवाज़े पर जाता है।]

बब्बू : (पुकारकर) जोड़ूराम, जल्दी से मेरा दूध और खाने का डिब्बा ला। मेरी बस के आने का समय हो गया।

रूपचन्द : बब्बू, तेरी नानी गई है रसोई में।

कृष्ण : पता नहीं, आज जोड़ूराम को क्या हुआ? अभी तक ऊपर बैड-टी नहीं आया। कमला नाराज हो रही है।

सरला : जीजी के बैरा साहब, मैं भी बैड-टी के लिए नीचे आई हूँ। ममता ने चाय अपने कमरे में मँगवाई है।

[तभी पार्वती परेशान-सी रसोई से आती है।]

पार्वती : आज चाय कैसे मिलेगी? जोड़ूराम अभी तक सो रहा है।

सब : (गुस्से से) क्या? वह सो रहा है?

कृष्ण : सात बजे गए और जोड़ूराम अभी तक सो रहा है?

पार्वती : मैंने बहुत जगाया, जागता ही नहीं।



रूपचन्द : (गुस्से से) मैं अभी उस कामचोर की हड्डी-पसली एक करता हूँ।
[रूपचन्द रसोई की ओर जाने लगता है। तभी दादी माँ अपने कमरे से निकलकर आती है। उसी समय ललितमोहन बाहर से आता है, जैसे सैर करके लौटा हो।]

दादी : अरे, चन्दू। (रूपचन्द रुकता है। पार्वती और कृष्णगोपाल हैरान होकर दादी माँ की ओर देखते हैं) अरे, उस गरीब की हड्डी-पसली एक करने से पहले देख ले कि कहीं वह बीमार तो नहीं। सरला, तू डॉक्टर काहे की है···?

सरला : मैं अभी जोड़ूराम को देखती हूँ। (जल्दी से रसोई के अन्दर जाती है।)

दादी : जा मोहन, तू भी जाकर देख। औरों के लिए तो जोड़ूराम की हैसियत जानवर जैसी है।
[सभी शर्मिन्दा होकर रसोई में जाते हैं। उधर स्कूल की बस का हार्न सुनाई देता है।]

बब्बू : अरे, मेरी बस आ गई। मैं जाता हूँ।
[बब्बू बस्ता लिये बाहर वाले दरवाजे की ओर जाता है। उसी समय सीढ़ियों से कमला उतरती है। वह भी दादी माँ को हैरानी से देखती है।]

कमला : अरे बब्बू, बिना दूध पिये जा रहा है?

बब्बू : (रुककर) मम्मी, मेरे पास पैसे हैं। मैं स्कूल में कुछ खा लूँगा। और हाँ, मम्मी, आज जोड़ूराम सो गया है। उसके लिए भी भूचाल को बुलाओ।
[बब्बू यह कहकर बाहर चला जाता है।]

दादी : (हँसकर) बब्बू को याद है कि भूचाल ने मुझे जगाया था।
[तभी मोहन, कृष्णगोपाल और रूपचन्द जोड़ूराम को उठाकर बाहर ड्राइंग रूम में लाते हैं। वह सो रहा है।]

कमला : अरे, क्या हुआ इसे? यह तो सो रहा है।

सरला : (रसोई से आकर) इसे सोफे पर लिटा दीजिये।
[जोड़ूराम को सोफे पर लिटाया जाता है। सरला उसकी नब्ज देखती है।]

रूपचन्द : पता नहीं, क्या हुआ है इसे ! कल रात तक तो यह भला-चंगा था।

सरला : (आँखों का निरीक्षण करके) अब भी यह भला-चंगा है। लगता है, रात को इसने कोई नशीली चीज या सोने की दवा खा ली है।

[कमला, पार्वती और कृष्णगोपाल चौंकते हैं।]

मोहन : मैं जगाता हूँ इसे। (जोड़ूराम को जोर-जोर से हिलाता है।)

जोड़ू : (नींद में बड़बड़ाते हुए) कौन मुझे दादी माँ के चरणों से उठा रहा है···? दादी माँ देवी हैं···गरीबों पर दया करने वाली देवी···कल रात दादी माँ ने अपने हिस्से का दूध मुझे पिला दिया···माँ की तरह मुझे दूध पिला दिया और मैं···मैं मीठी नींद सो गया।···मुझे नींद आ रही है।

[वह फिर सो जाता है। पार्वती घबरा जाती है। कमला उसे घूरकर देखती है।]

रूपचन्द : (हैरान-सा) माँ, क्या कल रात तुमने अपने हिस्से का दूध जोड़ूराम को पिला दिया था ?

दादी : हाँ रे। हमेशा की तरह कल रात भी जोड़ूराम दूध का गिलास लेकर आया था। मेरा जी नहीं चाहा। मैंने वह दूध जोड़ूराम को पिला दिया।

मोहन : और उस दूध मे किसी ने नींद की दवा मिला दी थी। क्यों सरला ?

सरला : लगता तो ऐसा ही है।

कमला : (वहाँ से हटने का बहाना बनाते हुए) माँ, यह जोड़ूराम तो अभी जागेगा नहीं। चलिये, आप रसोई में चलकर चाय बना दीजिए।

दादी : कमला, तू अपने घर वाले के साथ रसोई में जा। बहू को यहीं छोड़ दे।

[कृष्णगोपाल और कमला रसोई में जाते हैं। पार्वती वहीं खड़ी रहती है, जैसे उसे काठ मार गया हो।]

रूपचन्द : माँ, यह क्या पहेली है ?

दादी : बेटा, पहेली अभी सुलझ जाती है। सरला, कल रात तूने कमला को नींद की गोली दी थी। गोलियों की यह शीशी किसके पास है ?

सरला : (पार्वती की ओर इशारा करके) माँ के पास।

मोहन : तो क्या नानी माँ के दूध मे मामी ने नींद की गोलियाँ मिलाई थी ?

[दादी माँ बड़े जोर से हँसती है।]

रूपचन्द : (हैरान होकर) माँ, क्या हुआ तुम्हें ?

[तभी बाहर से डॉ० कैलाश आहूजा आता है। उसने टैनिस के खिलाड़ी के कपड़े पहने हुए है। उसके हाथ मे रैकेट है।]

कैलाश : (आते हुए) माफ़कीजिए, मैं टैनिस-कोर्ट मे सरला का इन्तजार कर रहा था। यह नही आई, तो ...।

[सरला उसके पास जाती है मुस्कराती हुई।]

दादी . (हँसकर) आओ, कैलाश। (अपने पास बिठाते हुए) नही, नही, डॉक्टर आहूजा। तुम बाहर सरला का इन्तजार कर रहे थे और मैं यहाँ तुम्हारा इन्तज़ार कर रही थी। तुम दिमागी रोगों के डॉक्टर हो न ? लो, ज़रा देखो, मेरा दिमाग खराब तो नही हो गया ? तुम्हारा यह होने वाला ससुर अभी-अभी पूछ रहा था कि मुझे क्या हो गया है ? अरे डाक्टर, इसे बताओ कि मैं पागल हो गई हूँ और घर के लोग चाहते हैं कि मैं कल की बजाय आज ही हमेशा के लिए सो जाऊँ।

रूपचन्द : माँ !

दादी : (हँसते हुए) मैं पागल हूँ, इसीलिए मै अपने बेटे से कहती हूँ कि अपनी कमाई में से कुछ दान-पुण्य भी किया कर। मै पागल हूँ, इसीलिए मैं अपने ठेकेदार बेटे से कहती हूँ कि अपनी साथ वाली कोठी मे एक नृत्य-संगीत का स्कूल खोल दे, जहाँ दुखिया अमला नाच-गाना सिखाये और अपना दुख भूल जाय। मैं पागल हूँ, इसीलिए मैं अपने लखपति बेटे से कहती हूँ कि अपने पुरखो के गाँव के गरीब लोगों के लिए अपने बाप के नाम पर एक अस्पताल खोल दे...।

रूपचन्द : (पाँव पकड़कर) नही माँ, पागल तुम नही, पागल मैं हूँ, जिसने पार्वती जैसी औरत से शादी की।

पार्वती : (रोती हुई भागकर दादी माँ के पाँव पकड़ती है) माँ जी, मुझे माफ कर दीजिए। मैं... मैं...।

दादी : (प्यार से) बहू, कोई बात नही। ग़लती सबसे हो जाती है। चन्द्र, बहू पर गुस्सा न कर।

(जोड़ूराम आँखें खोलता है।)

मोहन : (खुश होकर) जोड़ूराम होश में आ गया!

सरला : हाँ, अब यह ठीक है।

[सब खुश होते हैं। दादी माँ उठकर जोड़ूराम के माथे पर हाथ रखती है। दादी माँ के चेहरे पर दया, ममता और प्यार की आभा दिखाई देती है। मंच पर दृश्य-समाप्ति-सूचक अँधेरा हो जाता है।]

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—कोठी का ड्राइंग-रूम।

समय—प्रातः नौ बजे।

[ड्राइंग-रूम में आराम-कुर्सी पर दादी माँ खादी की सादी-सी धोती पहने हुए बैठी है। आस-पास सोफ़े पर और कुर्सियों पर रूपचन्द, मिल्खासिंह, कमला, कृष्णगोपाल, सरला, डॉ० कैलाश आहूजा और अमला बैठे हैं। अमला ने सफ़ेद खादी साड़ी पहनी हुई है और गले में रुद्राक्ष की माला डाली हुई है। वह खुश है। कमला और कृष्णगोपाल के चेहरों पर कोई उत्साह नहीं। ललितमोहन प्रसन्न-चित्त-सा दादी माँ के पीछे खड़ा है और राधिया अमला के पीछे खड़ी है। पार्वती रसोई से ड्राइंग रूम में आती-जाती रहती है। लगता है, वह जैसे दादी माँ और अपने पति को प्रसन्न करने की कोशिश कर रही है। उसकी देख-रेख में जोड़ूराम चाय, मिठाई, नमकीन आदि खाने-पीने का सामान ला-लाकर सब के सामने तिपाइयों पर रखता है। बाहर से माली दो बड़ी-बड़ी फूलमालाएँ और गुलदस्ता लेकर आता है और रूपचन्द के सामने रखकर एक तरफ़ बैठ जाता है।]

दादी : (हँसकर) चन्दू, यह गुलदस्ता और फूलों के हार काहे के लिए मंगवाये

हैं ? घर में कोई जल्सा है ?

रूपचन्द : माँ, आज मैं अपने जिगरी दोस्त मिल्खासिंह को साक्षी बनाकर अपने परिवार के सामने दो महत्त्वपूर्ण घोषणाएँ करने जा रहा हूँ।

दादी : (हँसकर) और घोषणाएँ करके नेता की तरह अपने गले में हार डलवायेगा। (सब हँसते हैं।)

रूपचन्द : नहीं, माँ, जिस महान् आत्मा की प्रेरणा से आज मैं दो घोषणाएँ करने जा रहा हूँ, उस पर श्रद्धा-भक्ति के फूल चढ़ाये जायेंगे। पहली घोषणा—साथ वाली कोठी में गरीब और पिछड़े वर्ग की लड़कियों के लिए नृत्य-संगीत का स्कूल खोला जायेगा, जिसका नाम होगा मेरी पूजनीया माँ के नाम पर—'फूलवती नृत्य-संगीत-विद्यालय'। (सब ताली बजाते हैं।) और जिसकी प्रिंसिपल होगी मेरी बेटी अमला। अमला, अपनी दादी माँ से आशीर्वाद लो !

अमला : (एक फूलमाला लेकर भाव-विह्वल-सी) दादी माँ, मैं आपकी प्रेरणा से सब कुछ त्यागकर नृत्य और संगीत के देवता को ही अपना जीवन समर्पित कर रही हूँ। मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं सांसारिक मोह-माया से मुक्त होकर अपनी इस साधना में लीन रह सकूँ।

[अमला दादी माँ के पाँव छूकर उसके गले में फूलमाला डालती है। दादी माँ उसके सिर पर हाथ रखती है। सब ताली बजाते है।]

दादी : अरी, अमला, सबको यह भी बता दे न कि रधिया तेरे विद्यालय की पहली छात्रा होगी।

रधिया : (जल्दी से भाव-विह्वल-सी) दादी माँ, यह बात मैं बताती हूँ। मैं एक गरीब माली की गँवार लड़की हूँ। आपने मुझे अपनी पोती मानकर और अमला जीजी की शिष्या बनाकर जो प्यार दिया है, जो मान दिया है, वह ऐसा है, जैसे ''जैसे कोई नाली की ईंट उठाकर मन्दिर में लगा दे।

[रधिया दादी माँ के पाँव छूकर उसके गले में फूलमाला डालती है और फिर वह अमला के पाँव छूती है। सब ताली बजाते हैं।]

दादी : अरे मोहन, तू भी कुछ कहना चाहे है ?

मोहन : (झूठमूठ उदासी से) नानी माँ, मैं क्या कहूँ ? रधिया को अमला के स्कूल में दाखिल करके आपने तो मेरा स्कूल ही बन्द कर दिया।

[सब हँसते हैं।]

रूपचन्द : मोहन, अमला के स्कूल की प्रबन्ध-समिति का तू ही तो सैक्रेटरी होगा। अब मैं दूसरी घोषणा करता हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं जिन्दगी-भर पैसा कमाने के चक्कर में रहा, कभी दान-पुण्य नहीं किया। अब मैंने अपनी पूजनीया माँ की प्रेरणा से गरीबों की सेवा के लिए अपने पुरखों के गाँव में अपने स्वर्गीय पिता श्री लालचन्द के नाम पर एक खैराती अस्पताल खोलने का फैसला किया है।

[सब ताली बजाते हैं। मिल्खासिंह जल्दी से उठकर गुलदस्ता हाथ में लेता है।]

मिल्खा : अरे रूपचन्द, तुम अच्छे मेरे जिगरी दोस्त हो! पुण्य कमाने का सारा ठेका तुम ही ले लोगे ? कुछ मेरे लिए नहीं छोड़ोगे ? (दादी माँ से) माँ जी, आप रूपचन्द की ही नहीं, मेरी भी माँ हैं। (पाँव छूकर गुलदस्ता भेंट करता है) लोग कहते हैं कि आप पच्चीस साल तक बेहोश रहीं, लेकिन मैं मानता हूँ कि आप पच्चीस साल तक समाधि में लीन रहीं और फिर नई ज्योति बनकर जागीं।

दादी : (हँसकर) नहीं रे, ज्योति-स्योति कुछ नहीं। घर के लोग समझते हैं कि बोतल में से जिन निकल आया है। खैर, मिल्खासिंह, तुम दान-पुण्य का कौन-सा ठेका ले रहे हो ?

मिल्खा : माँ जी, मैं पापी क्या दान-पुण्य करूँगा ? आपकी आज्ञा हो, तो मैं अमला के स्कूल का सरपरस्त बन जाता हूँ।

दादी : (हँसकर) नेकी और पूछ-पूछ।

मिल्खा : आप लोगों ने फ़ैसला किया है कि अमला के स्कूल में गरीब और पिछड़े वर्ग की लड़कियों से कोई फ़ीस नहीं ली जाएगी। मैं बड़े-बड़े घरों की ऐसी दस लड़कियाँ दाखिल कराऊँगा, जो हर महीने सौ-सौ रुपये फ़ीस देंगी और उन लड़कियों में मेरी दो पोतियाँ भी होंगी।

[सब ताली बजाते हैं।]

अमला : (खुश होकर) धन्यवाद, अंकल ! अब मैं स्कूल में दो-तीन साजिंदे नौकर रख सकूँगी।

मिल्खा : और माँ जी, आप अपने गाँव में जो अस्पताल बनवा रही हैं, उसके लिए मैं एक तुच्छ-सी भेंट दूँगा… एक्स-रे का सारा सामान।

सरला : (हँसकर) अंकल, आप एक्स-रे के सामान को तुच्छ-सी भेंट कहते हैं ?

कैलाश : उससे तो गाँव का वह अस्पताल दिल्ली के अस्पतालों की बराबरी करेगा।

दादी : (मुस्कराकर) तो इस तरह मिल्खासिंह ने साबित कर दिया कि यह सचमुच मेरा दूसरा बेटा है। भगवान् इसे लम्बी उम्र दे ! (जरा रुककर) आज की बात-चीत में कमला और कृष्णगोपाल ने कोई हिस्सा नहीं लिया, लेकिन मैं जानती हूँ उन्हें साथ वाली कोठी में अमला के स्कूल का खुलना और गाँव में अस्पताल का बनना पसन्द है। कमला, मैं ठीक कह रहा हूँ न ?

कमला : (बिना उत्साह के) हाँ, दादी माँ !

दादी : मिल्खासिंह, मुझे अपनी सभी पोतियों पर गर्व है। अमला को ही लो। इसने मीराबाई की तरह जीवन का एक बड़ा ही कठिन रास्ता चुना है। शादी के मामले में इसने ऐसा धोखा खाया है कि इसने कला की साधना करते हुए आजीवन कुँमारी रहने का प्रण कर लिया है। सच कहूँ, पहले तो मुझे इसका यह प्रण अच्छा नहीं लगा था। मैं पुराने जमाने की हूँ न। हमारे जमाने में लड़की को पराया धन और पराई अमानत माना जाता था और उसकी शादी १३-१४ साल की उम्र में करके उसे हमेशा के लिए विदा कर दिया जाता था। माँ-बाप उसे डोली में बैठाकर कहते थे—"बेटी, हमारे घर से तुम्हारी डोली जा रही है। अब तुम्हारी अर्थी ही वापस आ सकती है।" पच्चीस साल की नींद के बाद जब मैं इस नये जमाने में जागी, तो मैंने देखा कि ससुराल से लड़कियों की धड़ाधड़ अर्थियाँ चली आ रही हैं। मैंने यह भी देखा कि इस नये जमाने में ससुराल के डाकू बहू को दहेज की फिरौती लाने वाली बंधक वस्तु मानते हैं। यही सब देखकर मैंने अपने विचार बदल डाले हैं। पच्चीस साल की नींद से जागने के

बाद मैंने संकल्प किया था कि मैं अपनी तीनों पोतियों की शादी दो महीने के भीतर कर दूंगी। विमला की शादी महीने भर में कर भी दी थी।(जरा रुककर) ऐं, वह यहाँ नहीं है ? चन्दू, मैंने उसे भी बुलाने को कहा था।

रूपचन्द : माँ, मैंने कृष्णगोपाल से उसे फ़ोन करने को कहा था।

कृष्ण : मैंने फोन किया था। उधर से फ़ोन विमला के ससुर ने उठाया था। उन्हें मैंने आपका सन्देश दे दिया था।

दादी : खैर, कोई बात नहीं। किसी कारणवश विमला आज नहीं आ सकी। हाँ, तो मैं अपने विचार बदलने की बात कर रही थी। मैं अब मानने लगी हूँ कि लड़की की शादी तभी करनी चाहिए, जब वह पढ़-लिख कर अपने पाँव पर खड़ी होने लायक हो जाए। मैं अब यह भी मानने लगी हूँ कि लड़की को जबरदस्ती ब्याह की बलिवेदी पर नहीं चढ़ाना चाहिए। माँ-बाप को भी चाहिए कि वे लड़की को पराया धन और परायी अमानत न मानें। माँ-बाप के घर में लड़की का दर्जा वही होना चाहिए, जो लड़के का होता है। मिल्खासिंह, अपने इन्हीं नये विचारों के कारण मैं इस अमला और अपनी दूसरी पोती डॉ० सरला को फौरन शादी करने पर मजबूर नहीं कर रही हूँ।

मिल्खा : माँ, नारी-जाति के बारे में आपके ये विचार सुनकर मैं गद्‌गद हो गया हूँ। मुझे यह जानकर भी खुशी हुई कि पच्चीस साल की समाधि से जागने के बाद आप अपने परिवार पर ही नहीं, बाहर के समाज और देश पर भी दृष्टिपात कर रही हैं।

दादी : खैर, यह सरला शादी से पहले इस डॉ० कैलाश आहूजा के साथ विलायत जाकर डॉक्टरी की ऊँची पढ़ाई करना चाहती है। मैंने उसकी यह बात मान ली है। सरला विलायत से जितनी बड़ी डॉक्टर बनकर आयेगी, भारत की गरीब जनता की वह उतनी ही बड़ी सेवा कर सकेगी। गाँव की गरीब जनता को जिन्दा रहने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान के साथ सेवा की भावना वाले अच्छे डॉक्टर और अस्पताल भी चाहिएँ। इसीलिए मैं चन्दू से कहकर अपनी ससुराल के गाँव में एक अस्पताल बनवा रही हूँ। और अमला का यह

नृत्य-संगीत-विद्यालय भी एक तरह से अस्पताल ही है। मैं पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, लेकिन इतना जानती हूँ कि जैसे डॉक्टर की दवाई से शरीर के रोगों का इलाज होता है, वैसे ही संगीत से आत्मा के रोगों का इलाज होता है ···(एकाएक रुककर) ओहो, लगता है, मुझे भी रोग लग गया है। भाषण देने का रोग। (सब हँसते हैं) सुना है, आजकल देश में भाषण देने का यह रोग महामारी की तरह फैला हुआ है। (सब हँसते हैं।)

पार्वती : (हँसते हुए) माँ जी, आज एक रोग यहाँ भी फैला हुआ है।

दादी . (हैरान होकर) कौन-सा रोग यहाँ फैला हुआ है, बहू ?

पार्वती : मिठाई और नमकीन न खाने का रोग !

[सब हँसते हैं।]

दादी : (हँसते हुए) अरे हाँ, मेरा तो इधर ध्यान ही नहीं गया। नेता की तरह मैं भाषण से ही पेट भरती रही। अरे, आज खुशी का दिन है। खूब खाओ-पिओ ! माली, तू भी हाथ बढा। बहू, जल्दी से गर्मागर्म चाय मँगवा।

मोहन : जी हाँ, यह इमारतों के ठेकेदार की दावत है। बिना पानी के चिनाई नहीं हो सकती।

[सब हँसते हैं और खाते-पीते हैं।]

पर्दा गिरता है।

समाप्त